श्री विद्यानित्यार्चन सपर्या पद्धति

(श्री विद्यार्णव एवं परशुराम कल्पसूत्रानुसार)

Vidya
SV

संकलयिता
पं० हरिओम शुक्ल

ी विद्यानित्यार्चन सपर्या पद्धति
पं० ह

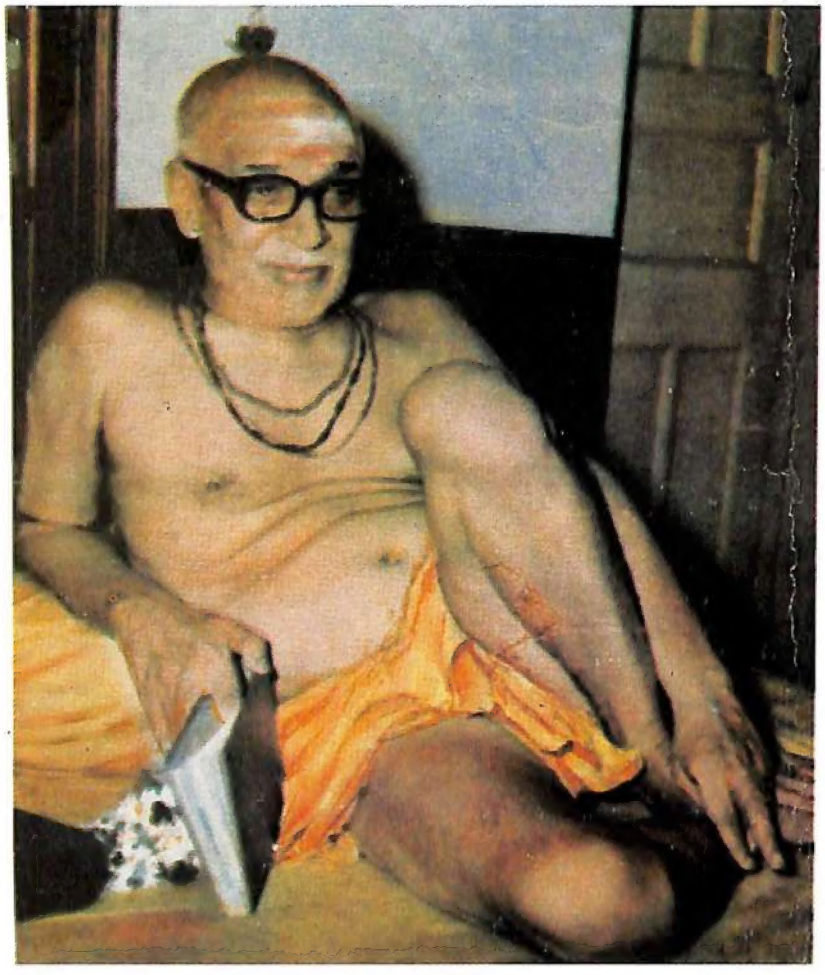

अनन्त श्री विभूषित श्री १९०८ धर्मसम्राट पूज्यपाद
ब्रह्मलीन स्वामी श्री करपात्री जी महाराज

SV-44

श्री विद्यानित्यार्चन सपर्य्या पद्धति

(श्री विद्यार्णव एवं परशुराम कल्पसूत्रानुसार)

कान्यकुब्ज पीठाचार्य

१०८ शीतलानन्द नाथ (शास्त्री जी)

की प्रेरणा से

संकलयिता एवं सम्पादक :

पं. हरीओम शुक्ल एम.ए.

(श्री विद्योपासक)

प्रकाशक :

श्री विद्या राजराजेश्वरी ललिताम्बा ट्रस्ट

शक्ति योगाश्रम श्री विद्यापीठ

नानाराव घाट (मैस्कर घाट), छावनी

कानपुर- २०८००४

44Books.com

▒ प्रकाशक :

श्री विद्या राजराजेश्वरी ललिताम्बा ट्रस्ट
शक्ति योगाश्रम श्री विद्यापीठ
नानाराव घाट (मैस्कर घाट), छावनी
कानपुर- २०८००४
दूरभाष-(०५१२)३८३३२६

▒ प्रथमावृत्तिः
११०० प्रतियाँ

▒ सौजन्य से :
श्रीमती सीमा अग्रवाल
७/१६०, स्वरूप नगर, कानपुर

▒ विजय सम्वत्
१६ जुलाई २०००
गुरु पूर्णिमा

▒ न्यौछावर :
२५१-०० रु. मात्र

▒ मुद्रक :
दि सेन्ट्रल प्रेस (प्रा०) लि०
कानपुर-२०८ ०१२

4eBooks.com

समर्पण

पूज्य गुरुजी
के
श्रीचरणों में —
जिनके आश्रय
से
जगदम्बा के चरण
सुलभ हो सके ।

44Books.com

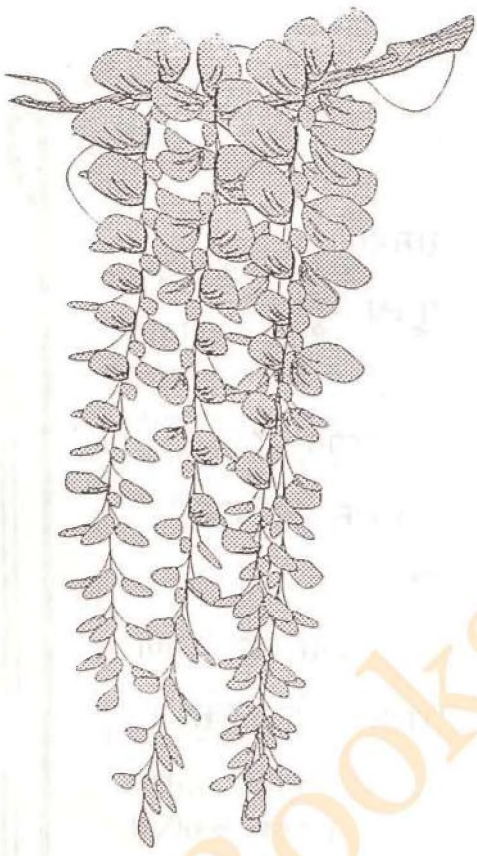

जिनकी ऋतम्भरा प्रज्ञा
से
सम्पूर्ण विश्व की
विज्ञानघन महासत्ता
आलोकित है -
उस सनातन परम्परा के
महर्षियों के चरणों में
सादर समर्पित ।

44Books.com

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
१.	रश्मिमालामन्त्राः	१
२.	अथ वाञ्छाकल्पलता	१६
३.	तन्त्रराजोक्तं नित्याकवचम्	२३
४.	श्रीविद्या सपर्य्यापद्धतिः	२५
	(क) प्रथमः खण्डः	२५
	(ख) द्वितीयः खण्डः	३५
	(ग) तृतीयः खण्डः	३७
	(घ) चतुर्थः खण्डः	४६
	(ङ) पञ्चमः खण्डः	६६
	(च) षष्ठः खण्डः	८८
	(छ) सप्तमः खण्डः	१२७
	(ज) अष्टमः खण्डः	१२६
	(झ) नवमः खण्डः	१२६
	(ञ) दशमः खण्डः	१३७
	(ट) एकादशः खण्डः	१३८
५.	परिशिष्टम्	१३६
६.	श्रीललितासहस्रनामावलिः	१५७

44Books.com

क्रम	विषय	पृष्ठ
७.	आश्चर्याष्टोत्तरशतनामावलिः	१८३
८.	श्री ललिता त्रिशतीनामावलिः	१८६
९.	श्रीसूक्तम्	१९७
१०.	दुर्गासूक्तम्	१९९
११.	त्रिपुरोपनिषत्	१९९
१२.	देव्युपनिषत्	२००
१३.	भावनोपनिषत्	२०२
१४.	बह्वृचोपनिषत्	२०८
१५.	देवी की मुद्रायें	२१०

44Books.com

।। श्रीविद्यासपर्य्यापद्धतिः ।।

प्राक्कथनम्

श्री कुल की उपासना पद्धति यद्यपि अनेक विधि से प्रकाशित प्राप्त होती है। तथापि जिज्ञासु साधकों के लिए सूक्ष्म क्रम अनुपलब्ध होने तथा वेदादि शास्त्र सम्मत् पद्धति की परमावश्यकता रही है। इस सन्दर्भ में देश में छपी हुई अनेक पद्धतियों को देखने और तंत्रराज श्री विद्यार्णव वामकेश्वर कुलार्णव श्री विद्या आह्निक आदि ग्रंथों को अच्छी प्रकार मनन करने तथा आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित्व चारों पीठों का निरीक्षण करते हुए परशुराम कल्प सूत्रानुसार ही तथा त्रिपुरा रहस्य क्रमोक्त यह पद्धति प्रकाशित की गई है। विशेषकर मद्रास मैलापुर की श्री विद्या विमार्शिनी गुहानन्द मंडली के द्वारा प्रकाशित पद्धति विशेष सहायक रही है। आशा है उपासक जिज्ञासु बन्धु सूक्ष्म इस क्रम से लाभान्वित होकर उपासना पथ में अग्रसर होंगे ऐहिक पारलौकिक श्रेय तथा निः श्रेयस की प्राप्ति एक मात्र श्री विद्या की उपासना से होती है।

त्रयक्षरी पंचदशी षोडशी आदि तीन क्रम मंत्र उपासक को गुरु उपदिष्ट रूप मार्ग से प्राप्त कर भावनोप निषद के अनुसार यजन, अर्चन करना चाहिए। इस प्रसंग में लक्षार्चन साधना का विशेष महत्त्व है। यह क्रम त्रिपुरा रहस्य में वर्णित है। उस क्रम में अनुष्ठान विशेष महत्त्वपूर्ण है। प्रति नवरात्रि में विशेष रूपेण आराध्य है। प्रतिदिन इस सूक्ष्म पद्धति में अभ्यास करते हुए श्री माता की कृपा के लिए प्रयत्न करना चाहिए। ललिताम्बा सहस्त्रार्चन, त्रिशती, खड्ग माला, शतनाम आदि के द्वारा लक्षार्चन अनुष्ठान का विधान श्री कुल परम्परा में निर्विष्ट है। उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निवोधत।

॥श्रीविद्यासपर्य्यापद्धतिः॥

प्रस्तावना

दृश्यमान समस्त चराचर जगत क्षणभंगुर और नाशवान है। एक मात्र ब्रह्म ही सत्य है। ब्रह्म ज्ञान प्राप्ति के लिए ही जीवन का लक्ष्य सत्य होता है अन्य सभी लक्ष्य नाशवान होते हैं। 'तत्वमसि' यह एक महावाक्य कहलाता है। अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हूँ), इस प्रकार का उद्घोष उपनिषद् तथा प्रस्थानतायी ब्रह्म मीमांसा में महावाक्यों का प्रकरण बहुत अच्छे ढंग से समझाया गया है। समस्त सम्प्रदायों में श्रुतियों (वेदों) का यही एक मात्र परम तात्पर्य है कि जीव और ब्रह्म में अभेद है और इसी प्रकार का सिद्धान्त वेदान्तादि ग्रंथों में बहुधा वर्णित है। इस सिद्धान्त को पंचदशी कार 'स्वामी विधारण्य पंचदशी में, तथा उत्तर मीमांसा चित सुखी विवेक चूड़ामणि, सिद्धान्त लेश, योगवाशिष्ठ तथा श्री मद्भागवत, महाभारत आदि ग्रंथों में प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, तीनों प्रकार के प्रमाणों से सिद्ध किया गया है। अधिकरण प्रकरणों में स्वबोध को प्राप्त करने वाले मतमतान्तरों का खण्डन करके वेदों के परम उत्कृष्ट सारभूत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है। लेकिन उन सिद्धान्तों तथा ज्ञान की जिज्ञासा करने पर कर्त्तव्य एवं ज्ञातव्य के रूप में प्रथम ज्ञान भूमिका में उपनिषदों में उद्गीथ विद्या, प्राणाग्निहोत्र विद्या, दहर विद्या, पञ्चाग्नि विद्या प्रभृति अनेक विद्याओं का उपदेश होता है। छान्दोग्य उपनिषद् में एकत्र वर्णन विस्तार से तथा ब्रह्म सूत्र में विशेष रूप से उपदिष्ट है।

परन्तु उस ज्ञान का उपदेश देने वाला आज कौन विद्वान महात्मा प्राप्त है। यह कहना कठिन हो गया है। सहस्त्रों शास्त्र वाक्यों का एक जाल बिछा हुआ है। जीवन पर्यन्त अध्ययन करते रहने पर भी उसका किनारा प्राप्त नहीं होता है। जीवन भर पढ़ते रहने पर भी मुझे प्राप्त करना था। वह पा लिया तथा जिज्ञासा जिस ज्ञान के लिए की गई थी वह हमें प्राप्त हो गई है। इस प्रकार कौन कह सकता है। इसलिए कि

वह तत्व अत्यन्त निगूढ़ है। शास्त्र का विचार दूसरे प्रकार का क्रमिक है और अनुभव उससे भिन्न होता है। वेदान्त शास्त्रों के अध्यापक अनेक होते हैं परन्तु अनुभवी कोई विरला ही होता है। स्वयं अनुभव करके दूसरों को अनुभव करा दे यह दुर्लभ होता है और अनुभव के अनन्तर ब्रह्म ज्ञान के लिए सुगम उपाय एक मात्र श्री विद्या ब्रह्म विद्या ही कही जाती है। श्री विद्योपासक को ब्रह्म ज्ञान प्राप्त हो जाता है। अनेक उपासक जीवनमुक्त होकर संसार में विचरण करते रहे हैं। इस उपासना में एक क्रम से जीव, जीव भाव से मुक्त होकर स्व प्रकाश एवं चिदात्मा का सम्यक् ज्ञानी हो जाता है। यह देह ही देवालय है ''देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। शरीर के अन्दर षड़ाधार कुंडलिनी शक्ति का जागरण श्री विद्योपासक के लिए एक सुलभ उपाय है। सुषुम्ना पथ के द्वारा कुल कुण्डा में जाकर कुंडलिनी का उत्थान संभव होता है। यह जीव रूपी कुंडलिनी शक्ति किन-किन ग्रंथियों का भेदन करते हुए सहस्त्रार में शिव के साथ किस प्रकार मिलन करती है। इसे श्री विद्योपासक समझता है। तेज स्वरूपिणी आत्मा से अभिन्न चित्ति को हृदय कमल से ब्रह्म रन्ध्र में ले जाकर पुनः नासिका द्वारा श्री चक्र में स्थापित करके प्रतिदिन पूजन अर्चन करना तथा गुरुपदेश से पुनः भीतर कुलकुण्डा में स्थापित करना इसी प्रकार श्री ललिता के होम में चिदग्नि को बाहर नासिका द्वारा निकालकर वागीश्वरी गर्भ से जली हुई बाहरी अग्नि में सुरभि घृत धारा हुति शतैः इस प्रकार संकल्प करके हवन करना चाहिए। श्री विद्या सम्प्रदाय में लघु षोडा एवं महाषोढा न्यास के द्वारा शरीर में दिव्य भाव स्थापित करना, तत्व शोधन क्रम से तत्वों का शोधन गुरुकृपा द्वारा ही यह संभव होता है। गुरु से दीक्षा प्राप्त करके साधक को लयाङ्ग पूजन में अन्तर्योग के द्वारा जीव ब्रह्म की एकता का ही प्रतिपादन करना चाहिए।

श्री पात्र के अमृत द्वारा कुडंलिनी शक्ति जागरण, हवन, चिदग्नि में समस्त कर्मों की पूर्णाहुति की जाती है। आत्मज्ञान के लिए श्रवण, मनन, निदिध्यासन नामक ज्ञान की सात भूमिकायें हैं। वेदान्त शास्त्रानुसार धीरे-धीरे साधक ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करता है।

इसी प्रकार पराशक्ति ललिताम्बा की उपासना यह एक अत्यन्त

सरल मार्ग है। समस्त विद्याओं से श्री विद्या साधना अत्यन्त सुगम होती है।

प्रयोग कुशल विद्वान साधक संसारिक समस्त प्रपंञ्च एवं शारीरिक समस्त रोग से धन प्रतिष्ठा राज्य प्राप्ति आदि ऐहिक समस्तसुखों की अविरल प्राप्ति करते हैं। शापानुग्रह शक्ति उनको प्राप्त हो जाती है।

भोग ओर मोक्ष देने वाली गुप्त यह साधना वैदिक विद्वानों द्वारा आदृत एवं सम्मानित है।

भगवान शंकर जी ने (६४) चौसठ आगम ग्रंथों, तंत्रों का उपदेश श्री देवी से किया था।

आदि शंकराचार्य भगवत् पाद ने अपनी सौन्दर्य लहरी में पूर्णतया प्रतिपादन किया है। मंत्रशास्त्र की सर्वस्वभूता सौन्दर्य-लहरी में तथा त्रिशती भाष्य में ज्ञान का सम्पादन प्राप्त होता है। वैदिक शिखामणियों एवं महान कवियों कालीदासादि तथा नीलकण्ठ दीक्षित, अप्पय दीक्षित आदि को ने माता श्री की उपासना का पदे-पदे महत्त्व दिया है। श्री विद्यारण्य स्वामी जो कि एक मात्र माता श्री विद्या के परम उपासक थे। उनकी शिष्य परम्परा में 'भास्कर राय, ने वरिवस्या रहस्य ग्रंथ का प्रणयन किया। आचार्य स्वामी विद्यारण्य मुनि ने श्री विद्यार्णव ग्रंथ का संकलन निर्माण किया है।

अप्पय दीक्षित का ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। आदि शंकराचार्य भगवान की क्रम परम्परा में शंकर सभी मठों में श्री विद्या की उपासना समीचीन चलती है। श्री विद्या का पंचदशाक्षरी मंत्र वैदिक है। सभी श्रुति स्मृतियों के उपासक श्री विद्या की अर्चना करते हैं। काञ्चीपुरम् में श्री माता कामाक्षी एवं मदुरापुरी में मीनाक्षी मातंगी के रूप में जम्बुकेश्वर क्षेत्र में दंडिनी तथा काशी में विशालाक्षी, कन्याकुमारी में कुमारी रूप में बाला त्रिपुर सुन्दरी ही प्रतिष्ठित है। सभी उपासक विधि विहित आराधना उनकी करते हैं। अन्तःशाक्ता वहिः शैवा भुविसर्वेद्विजातयः तंत्र शास्त्र की कौल दक्षिण भेद से दो भागों में अर्चना विहित है। कुलार्णव , ज्ञानार्णव, वामकेश्वर, तंत्रराज आदि ग्रंथों को साधकों के उपकार के लिए आदिनाथ परम शिव ने निर्माण किया

है। भगवान परशुराम जी के द्वारा कल्पसूत्र, ग्रंथ उपलब्ध है। उसी के आधार पर वर्तमान में प्रचलित परम्परा विद्यमान है। श्री आचार्य भास्कर राय ने सेतु बन्ध, वरि वस्यारहस्य सौभाग्य भास्कर आदि तीन ग्रंथों का निर्माण किया है। इनका दीक्षानाम उमानन्द नाथ है। इस प्रकार वर्तमान अर्चन पद्धति में गणपति, श्यामा, दण्डिनी, परा के भेद से अर्चना क्रम वर्णित है।

नित्योत्सव की श्री विद्या आह्निक आदि में विस्तार से क्रम है। नित्योत्सव के अनुसार इस पद्धति में एकादश खण्डात्मक क्रम लिखा गया है। इसमें मुख्य तीन भाग हैं। १. अन्तर्याग, चतुरायतन पूजा हवन तथा वहिर्याग है। इसमें षोडशोपचार पूर्वक क्रम लिखा गया है।

पात्र स्थापना में शुद्धि पात्र, गुरु पात्र, आत्म पात्र क्रम से ६ अथवा १६ षोडश पात्रों का विधान है।

अभिषेक के लिए आवश्यक श्री सूक्त आदि अर्चना में विहित है।

श्री विद्या की उपासना उपनिषद मूला है। इस प्रकार संक्षिप्त श्री विद्या सपर्य्या पद्धति सभी साधकों के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी।

इस सम्बन्ध में अनेक विशिष्ट साधकों की कामनायें रही हैं। श्री विद्या की उपासना का क्रम प्रकाशित किया जाए। अतः प्राचीन उपलब्ध पद्धतियों के स्वरूप को यथा संभव उपासकों के लिए प्रस्तुत किया गया है। माता श्री की कृपा सबको प्राप्त हो।

-कान्यकुब्ज पीठाचार्य
१०८ शीतलानन्द नाथ (शास्त्री)

नोट- श्री ललिता सहस्त्र नामावली, अर्चना त्रिशती खड्माला तथा शत् नाम आदि की पृथक सूची उपासकों की सुविधा हेतु दी गई है ।

(श्री ललिताम्बायै नमः)

१

पात्रासादनम्

श्री विद्योपासक साधक को चाहिए कि वह स्नान से निवृत्त होकर शुद्ध प्रक्षालित वस्त्रों को धारण करके कुशासन एवं कम्बलासन विछा कर आसन के नीचे चावल देकर पवित्री धारण करते हुए प्राणायाम एवं भूत शुद्धि करे भूत शुद्धि का क्रम पद्धति में आगे दिया हुआ है।

उस विधान से आचमन करके चंदन कपूर जल में मिलाकर पूर्वाभिमुख बैठकर सामने बायीं ओर मंडल बनावे मंडल में त्रिकोण वर्त्तुल पुनः चतुष्कोण की कल्पना रोली, चंदन, चावल, जल आदि से करे।

अनन्तर उसमें सुगन्धित जल से भरे हुए कलश को स्थापित करे मंत्रोच्चारण अवश्य करे।

'ॐ कलशस्यमुखे विष्णुः, इस मंत्र से कलश स्थापित करके उसमें चारों वेदों की भावना करनी चाहिए। आठ बार ८ उस कलश में अभिमंत्रणा करते हुए वर्द्धिनी, नामक कलश की प्रतिष्ठा आवश्यक है।

२

सामान्यर्ध्य विधि

वर्धिनी पात्र के दाहिनी ओर वर्द्धिनी जल से रोली चावल आदि त्रिकोण, षटकोण बनाकर उसे एक वृत के द्वारा वेष्टित कर के चार कोणों की वेदी से बंद कर उसके ऊपर शंख की स्थापना करे। यदि दक्षिणावर्त शंख हो तो अधिक उत्तम होता है।

वर्द्धिनी कलश, सामान्य अर्ध्य, विशेषार्ध्य, शुद्धि पात्र, गुरु पात्र, आत्म पात्र (६) पात्रों की दैनिक पूजन में स्थापना करनी चाहिए। सामान्यर्घ्य मंडल त्रिकोण और षट्कोण में समन्त्र पूजन करते हुए शंख को त्रिपाद पर रखकर स्थापित कर यहां पर :

अग्नि मंडल १० कलात्मक
सूर्य मंडल १२ कलात्मक
सोम मंडल १६ कलात्मक की भावना

कर आवाहन कर स्थापन करना चाहिए। सामान्यर्घ्य से दक्षिण की ओर पुनः त्रिकोण, षट्कोण वृत्त को चतुष्कोण से आवृत करते हुए उसके ऊपर एक पात्र की स्थापना करनी चाहिए। यहां पूर्ववत तत्व शोधन शुद्धि पात्र में

अग्नि मंडल १० कलात्मक, सूर्य मंडल १२ कलात्मक

सोम मंडल १६ कलाओं का है।

आवाहन पूजन विधि विहित करना चाहिए। इस पात्र में गाय का प्रक्षालित शुद्ध दुग्ध भरे अनन्तर केशर गुलाब व जल मिलाकर उसमें अदरख पीसकर छोड़ें पुनः चंदन आदि मिलाकर छोटी इलायची पीसकर छोड़नी चाहिए। उस पात्र में ब्रह्म कला, विष्णु कला, ईश्वर कला तथा सदाशिव कलाओं का पूजन करना चाहिए। पात्र से उस अमृत को जो कि मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित है। गुरुपात्र विशेषार्घ्य से दक्षिण में उसकी कल्पना त्रिकोण, षटकोण वृत्त चतुरस्त्र क्रम से है, स्थापना करनी चाहिए।

अभिमंत्रित विशेषार्घ्य पात्र से कुछ अमृत लेकर शुद्धि पात्र, गुरु पात्र में डाले पुनः आत्म पात्र में हंसः सोहं, मंत्र से अभिमंत्रित कर पुनः १० बार 'पुण्यं जुहोमि इस क्रम से साधक स्वयं अमृतपान कर और अपने समीप सभी साधकों को अमृत पान कराना चाहिए। अमृत पान के अनन्तर ही श्री चक्र पूजा का अधिकार प्राप्त होता है।

पुनः आचमन करके लयांग पूजन में पद्मासन में बैठकर मूलाधार चक्र में स्थित कुंडलिनी शक्ति का चिंतन करना चाहिए। बिजली के प्रकाश पुंज की तरह तेजो रूपिणी दस हजार सूर्य के प्रकाश से युक्त अमृत किरणों से शीतलता और शान्ति प्रदान करने वाली तेज दण्ड रूपिणी चिति की भावना करनी चाहिए।

१. कुलकुंडा चक्र से कुंडलिनी को उठाकर मूलाधार में स्थापित करें। चक्र चार दलों का कमल है।
२. स्वाधिस्ठान ६ दलों का चक्र है।
३. मणिपुर चक्र में १० दल।
४. अनाहत में १२ दल
५. विशुद्ध चक्र में १६ दल
६. लम्बिका नासिका से भृकुटी पर्यन्त त्रिकोण देवी आज्ञा चक्र में दोदल चक्र है। उसमें बिन्दु स्वरूपिणी चैतन्य शक्ति विराजमान होती है।

इस प्रकार उपरोक्त क्रम से ध्यान करते हुए जीवात्मा को हाथ में पुष्प लेकर नासिका द्वारा यह भावना करते हुए कि इन पुष्पों में जीवात्मा को लेकर आवरण पूजन करेंगे पुनः उस पुष्प को यंत्र के ऊपर स्थापित करना चाहिए। भावना में पुष्प के माध्यम से हृदय कमल द्वारा चेतना जीव यंत्र के मध्य में स्थित पराशक्ति का यजन कर रही है। इस भावना के साथ श्री के सभी अंग उपाङ्ग आवरण के रूप में श्री चक्र में विलीन होकर उपस्थित है। जीवात्मा के साथ श्री देवी को हृदय से पुष्प द्वारा अंञ्जलि में पूजन करके पञ्चभूत (तत्व) मयी पराशक्ति अकुल सहस्त्रार चक्र से अमृतधारा प्रवाह में सुषुम्ना पथ द्वारा कुल चक्र तक प्रवाहित होने वाली चंदन, पुष्प धूप, दीप नैवेद्य चावल हाथ में लिए हुए पीली, काली, श्याम, लाल, श्वेत वर्णा स्वरूपिणी पराशक्ति पृथिवी, आकाश, वायु, अग्नि, जल, स्वरूपिणी समस्त तत्वों के रूप में एक शक्ति रूपा ध्यान करके पूजन करना चाहिए।

इस प्रकार पञ्चमुद्रा पूजन की अर्पणा करे अनन्तर यह भावना करनी चाहिए कि माता श्री की नासिका में चंदन दे रहे हैं। कान में पुष्प, नाभि में धूप नेत्र में दीप, जिह्वा में नैवेद्य इस क्रम से पूजा सामग्री को उस पञ्चतत्वात्मक महाशक्ति में यजन की भावना से और उसकी प्रेरणा से हम प्रकृति के साथ उसका यजन करते हैं।

तेज स्वरूपिणी भगवती चिति शिव ज्योति समस्त जगत की उत्पादन, पालन, संहार कर्त्री सहस्त्रार में शत दल कमल से बाहर निकल कर पुष्प से श्री चक्र में स्थित करते हुए ह्रीं श्रींसौः ललितायाः अमृत चैतन्य मूर्ति कल्पयामि। यह पढ़कर उस चक्र में पूजन प्रारम्भ करना चाहिए।

यह ध्यान करना चाहिए कि तीनों जगत को मोहित करने वाली विकार रहित सूत्रात्मक पराशक्ति सहस्त्रों सूर्यों के समान प्रकाशमयी तपाये हुए सुवर्ण के समान सुरेश्वरी सर्व आनन्द स्वरूपिणी सर्ववेदमयी, सर्वशास्त्रमयी सर्वागममयी ज्ञान गह्वरा है। ध्यान के अनन्तर 'हस्त्रैं हस्क्लीं हस्त्रौं, मंत्र से चावल यंत्र पर छोड़ना पुनः पद्धति में यह क्रम सुस्पष्ट है। अनन्तर चावल लेकर ६४ चौसठ उपचार पद्धति क्रम में करते हुए गणपति, सूर्य, विष्णु, शिव का पूजन यही चतुरायतन है। अनन्तर नित्या देवी का पूजन करें यह त्रिकोणा में है। चित्रा से कामेश्वरी पर्यन्त विलोम कृष्ण पक्षों तथा कामेश्वरि से चित्रा पर्यन्त

शुक्ल पक्ष में यजन हो ।। है गुरुमंडलार्चन में दिव्य गुरु, सिद्ध गुरू, मानव गुरु तीन हैं। अब आगे यहां से आवरण पूजन प्रारम्भ होता है-

१. त्रैलोक मोहन चक्र
२. सर्वशापरिपूरक चक्र
३. सर्व संक्षोभण चक्र
४. सर्व सौभाग्यदायक चक्रम
५. सर्वार्थ साधक चक्रम
६. सर्वरक्षा कर चक्रम
६. सर्व रोग हर चक्रम
८. आयुध अर्चनम् सर्वा सिद्धप्रद चक्रम
९. सर्वा नन्दमय चक्रम

यहां तक नव आवरण पूजा है षोडडी उपासकों के लिए सर्वा नन्दमय चक्र में सर्व पीठेश्वरी का यजन होता है। अनन्तर पञ्चाग्नि विद्या पञ्जिका पूजन इसमें पांच लक्ष्मी पांच-पांच कोषाम्बा, पांच कल्पलता, पांच कामदुघा, पांच रत्नाम्बा का यजन है।

यहीं पर षटदर्शन विद्या इसमें वौध, वेद, रुद्र, सूर्य, विष्णु, भुवनेश्वरी का पूजन है आम्नाय समष्टि की अर्चना आगे होती है।

१. दण्डिनी २. मन्त्रिणी ३. ललिता

इन तीन शक्तियों (की) नाम-मात्र से पूजन करना चाहिए। पश्चात् श्री सूक्त के द्वारा षोडशोपचार कुलदीप, कर्पूर, नीराजन, मंत्रपुष्पम् पुष्पाञ्जलि में समर्पण, अपराध समापन हो जाता है। दैनिक हवन करने वालों के लिए अग्नि में आवाहन करके खड्गमाला से हवन करना चाहिए। यहां सुबाषिनी, वटुक, कुमारी पूजा परमावश्यक होती है। प्रायः पर्व विशेष में अवश्य करना चाहिए।

अन्त में पूजा समर्पण (उद्वासन) विसर्जन तथा शान्तिस्तवन विशेषार्ध्य का विसर्जन

यही श्री कल्प की परमाराधना योग है श्री कुल की क्रमबद्ध उपासना का संक्षिप्त वृत्त सर्वसाधारण साधकों के लिए दिया गया है। आशा है जिज्ञासु साधक इस क्रम से लाभान्वित होंगे ।

- ॐ शं भूयादिति -

यज्ञ मण्डप का एक दृश्य

रश्मिमालामन्त्राः

ततो रश्मिमालाप्रवर्तनम्। रश्मिमालामन्त्रेषु वैदिकान्मन्त्रान् सस्वरान् पठेत्।

ॐ भूर्भुवस्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् (इति गायत्री मूलाधारे) ॥ १ ॥

सावित्र्या विश्वामित्र ऋषिः नृचिद्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवल – च्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्री वरदाभयाङ्कुशकशः शुभ्रं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं जजे॥

'यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो विमृधो जहि॥
स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः'॥

(इत्यैन्द्री विद्या सप्तषष्टयर्णा सङ्कटे भयनाशिनी, हृदये) ॥ २॥

अभयङ्करमन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, अभयङ्करो देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

आरूढो वारणेन्द्रं दशशतनयनः श्यामलः कोमलाङ्गः
वर्मी वीरः प्रतापी प्रतिभटदहनप्रज्ज्वलच्चक्रपाणिः।

दोर्भिर्दिव्यायुधाढ्यैर्मणिगणखचितैर्देवमन्त्रीसनाथो
दत्वाभीष्टानि शश्वत्परिहृतदुरितः पातु विश्वं महेन्द्रः ॥

'ॐ घृणिस्सूर्य आदित्योम्' (इत्यष्टार्णा सौरी तेजोदा, फाले) ॥ ३ ॥

(सौरमन्त्रस्य देवभाग ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सूर्यो देवता, तत्प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

धृतपद्मद्वयं भानुं तेजोमण्डलमध्यगम् ।
सर्वाधिव्याधिशमनं छायास्लिष्टतनुं भजे ॥)

'ॐ' (इति प्रणवः केवलो ब्रह्मविद्या मुक्तिप्रदा, ब्रह्मरन्ध्रे) ॥ ४ ॥

प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, परमात्मा देवता, तत्प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

ओंकारवाच्यमुच्चण्डचण्डांशुसदृशप्रभम् ।
वासुदेवाभिधं ब्रह्म विश्वगर्भमुपास्महे ॥

'ॐ परोरजसेऽसावदोम्' (इति नवार्णा तुरीया गायत्री स्वैक्यविमर्शिनी, द्वादशान्ते) ॥ ५ ॥

(तुरीयागायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सविता देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

देवीं तुरीयगायत्रीं तुर्यातीतपदाश्रयाम् ।
परोरजःप्रकाशात्मचितिरूपामहं जजे ॥

रश्मिपञ्चकमेतन्मूलाधारहृत्फालविधिबिलद्वादशान्तस्थानबीजतयाविभावनीयम् । (द्वादशान्तस्थानन्तु ललाटस्योत्तरभागः) ।

'ॐ सूर्याक्षितेजसे नमः । खेचराय नमः । असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्माऽमृतं गमय । उष्णो भगवान् शुचिरूपः । हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः ।

**विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं ज्योतिरेकं तपन्तम् ।
सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ॥**

'ॐ नमो भगवते सूर्यायाहोवाहिनि वाहिन्यहोवाहिनि वाहिनि स्वाहा'।

वयस्सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाथमानाः।
अपध्वान्तमूर्णुहि पूर्धिचक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान् ॥

'पुण्डरीकाक्षाय नमः। पुष्करेक्षणाय नमः। अमलेक्षणाय नमः। कमलेक्षणाय नमः। विश्वरूपाय नमः। श्रीमहाविष्णवे नमः' (इति षोडश-मन्त्रसमष्टिरूपिणी चक्षुष्मती विद्या दूरदृष्टिसिद्धिप्रदा मूलाधारे) ॥ ६ ॥

(चक्षुष्मतीमन्त्रस्य भार्गवऋषिः, नानाच्छन्दांसि, चक्षुष्मती देवता तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।) ध्यानम् :—

चक्षुस्तेजोमयं पुष्पकन्दुकं बिभ्रतीं करैः।
रौप्यसिंहासनारूढां देवीं चक्षुष्मतीं भजे ॥

'ॐ गन्धर्वराज विश्वावसो ममाभिलषितां कन्यां प्रयच्छ स्वाहा' (इत्युत्तमकन्याविवाहदायिनी हृदये) ॥ ७ ॥

(विश्वावसुमन्त्रस्य सम्मोहन ऋषिः। गायत्रीच्छन्दः विश्वावसुदेवता। तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।) ध्यानम्—

रक्ताङ्गरागारुणभूषणाढ्यं वीणाधरं वीटिकयोल्लसन्तम्।
गन्धर्वकन्याजनगीयमानं विश्वावसुं सद्वृहतीं नमामि ॥

ॐ नमो रुद्राय पथिषदे स्वस्ति मां सम्पारय' (इति मार्गसङ्कट-हारिणी विद्या, फाले) ॥ ८ ॥

पथिषद्रुद्रमन्त्रस्य वामदेवः ऋषिः पंक्तिच्छन्दः, पथिषद्रुद्रो देवता। तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

आत्तसज्जधनुर्बाणकरं वृषभसंस्थितम्।
अन्नपूर्णासमाश्लिष्टं पथिषद्रुद्रमाश्रये ॥ ८ ॥

ॐतारे तुत्तारे तुरे स्वाहा, (इति जलापच्छमनी विद्या, ब्रह्मरन्ध्रे) ॥९॥

तारा मन्त्रस्य मत्स्य ऋषिः, ताराम्बा देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

नौकासिंहासनारूढां शाक्यदर्शनदेवताम् ।
जलापच्छमनीं वन्दे तारां वारिदमेचकाम् ॥

'अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, गोविन्दाय नमः, (इति महाव्याधिनाशिनी नामत्रयी विद्या, द्वादशान्ते) ॥ १० ॥

(नामत्रयमन्त्रस्य काश्यपात्रिभरद्वाजा ऋषयः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाविष्णुर्देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यानम्— समस्तदुस्तरव्याधिसंघध्वंसपटीयसे ।
अच्युतानन्तगोविन्दनाम्ने धाम्ने नमो नमः ॥

(एतद्वर्णपञ्चकं मूलधारादिपरिकरतया ज्ञेयम्) ।

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा" (इति महागणपतिविद्या प्रत्यूहशमनी, मूलाधारे) ॥ ११ ॥

महागणपतिमन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचृद्गायत्री छन्दः, श्रीमहागणपतिर्देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल-
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्करामभोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश्वरोऽभीष्टदः ॥

'ॐ नमः शिवायै, ॐ नमः शिवाय' (इति द्वादशार्णा शिवतत्त्वविमर्शिनी विद्या, हृदये) ॥ १२ ॥

(शिवशक्त्यात्मकपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, उमामहेश्वरो देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

वामांसन्यस्तवामेतरकरकमलायास्तथा वामहस्त-
न्यस्तारक्तोत्पलायाःस्तनभरविलसद्वामहस्तः प्रियायाः ।
सर्वाकल्पाभिरामः श्रितपरशुमृगेष्टः करैःकाञ्चनाभः
ध्येयः पद्मासनस्थः स्मरललितवपुः सम्पदे पार्वतीशः ॥)

'ॐ जुं सः मां पालय-पालय' (इति दशार्णा मृत्योरपि मृत्युरेषा विद्या, फाले) ॥ १३ ॥

(अमृतमृत्युञ्जयस्य कहोल ऋषिः, विराट्छन्दः अमृतमृत्युञ्जयसदाशिवो देवता । तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

स्फुटितनलिनसंस्थं मौलिबद्धेन्दुरेखा-
स्रवदमृतरसार्द्रं चन्द्रवन्ह्यर्कनेत्रम् ।
स्वकरलसितमुद्रापाशवेदाक्षमालं
स्फटिकरजतमुक्तागौरमीशं नमामि ॥)

ॐ नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्तु निराकरणं धारयिता भूयासं कर्णयोः श्रुतं मा च्योढ्वं ममामुष्य ॐ (इति श्रुतधारिणी विद्या ब्रह्मरन्ध्रे) ॥१४॥

(श्रुतधारिणीमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

चतुराननमम्भोजनिषण्णं भारतीसखम् ।
अक्षमालावराभीतिकमण्डलुधरं भजे ॥)

"अं आं..... अः कं खं..... ळं क्षं" (इति सबिन्दुरकारादिक्षकारान्तवर्णमालिकामातृका सर्वज्ञताकरी द्वादशान्ते) ॥ १५ ॥

(मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वती देवता तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

पञ्चाशता मातृकया ह्यारब्धाखिलदेहया ।
समस्तविद्यारूपिण्या धन्योऽहं मातृकाम्वया ॥)

(पञ्चेमाः रश्मयो मूलादिरक्षात्मकतया द्रष्टव्याः) ॥

'हसकलह्रीं, हसकहलह्रीं सकलह्रीं' (इति लोपामुद्राविद्या स्वस्वरूपविमर्शिनी, मूलाधारे) ॥ १६ ॥

(श्रीहादिलोपामुद्रामन्त्रस्य दक्षिणामूर्त्तिः ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, ह ५ बीजम्, ह ६ शक्तिः, स ४ कीलकम्, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । बालया षडङ्गम् ।

ध्यानम्—

श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गं सान्द्रसिन्दूररोचिषम् ।
हकारादिमनोर्वाच्यं वन्दे कामेश्वरं हरम् ॥)

'क्लीं हैं ह्सौः स्हौः हैं क्लीं (इति षट्कूटा सम्पत्करी विद्या-हृदये) ॥ १७ ॥

(सम्पत्करीमन्त्रस्य कण्व ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सम्पत्सरस्वती देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अनेककोटिमातङ्गतुरङ्गरथपत्तिभिः ।
सेवितामरुणाकारां वन्दे सम्पत्सरस्वतीम् ॥

'सं सृष्टिनित्ये स्वाहा, हं स्थितिपूर्णे नमः, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, रं ह्स्ख्फ्रें महानाख्ये अनन्तभास्करि महाचण्डकालि फट्, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, हं स्थितिपूर्णे नमः, सं सृष्टिनित्ये स्वाहा, ह्स्ख्फ्रें महाचण्डयोगेश्वरि' (इति विद्यापञ्चकरूपिणी कालसङ्कर्षणी परमायुःप्रदा, फाले ॥ १८ ॥

(चण्डयोगेश्वरीमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, नानाच्छन्दांसि, चण्डयोगीश्वरी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

सृष्टिस्थितिभ्यां संहृत्यनाख्यया भासया श्रिताम् ।
कूलङ्कषकपालाढ्यां चण्डयोगीश्वरीं भजे ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह्सौः अहमहं अहमहं ह्सौः ह्स्ख्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं' (इति शुद्धज्ञानदा शाम्भवी विद्या । ब्रह्मरन्ध्रे) ॥ १९ ॥

(परशम्भुनाथमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, परशम्भुनाथो देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

पूर्णाहन्तास्वरूपाय तस्मै परमशम्भवे ।
आनन्दताण्डवोद्दण्डपण्डिताय नमो नमः ॥)

'सौः' (इयं परा विद्या द्वादशान्ते) ॥ २० ॥

(परामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, परा सरस्वती देवता, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अकलङ्कशशाङ्काभा त्र्यक्षा चन्द्रकलावती ।
मुद्रापुस्तलसद्वाहा पातु मां परमा कला ।।)

(एताः पञ्च रश्मयो मूलाद्यधिष्ठानतया कलनीयाः) ।

'ऐं क्लीं सौः, सौः क्लीं ऐं, ऐं क्लीं सौः' (इति नवाक्षरी श्रीदेव्यङ्गभूता बाला) ॥ २१ ॥

(बालामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः बालात्रिपुर सुन्दरी देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अरुणकिरणजालैरञ्जिताशावकाशा
विधृतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता ।
इतरकरवराढ्या फुल्लकह्लारसंस्था
निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणशीला ।।)

'श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा' इति श्रीदेव्या उपाङ्गभूता अन्नपूर्णा ॥ २२ ॥

(अन्नपूर्णेश्वरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, अन्नपूर्णेश्वरी देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

आदाय दक्षिणकरेण सुवर्णदर्वीं
दुग्धान्नपूर्णमितरेण च रत्नपात्रम् ।
अन्नप्रदाननिरतां नवहेमवर्णाम्
अम्बां भजे कनकभूषणमाल्यशोभाम् ।।)

'ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा' (इयं श्रीदेवीप्रत्यङ्गभूता-अश्वारूढा) ॥ २३ ॥

(अश्वारूढामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, अश्वारूढा देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

बद्ध्वा पाशेनाङ्कुशेन कृष्यमाणां स्वसाध्यकम् ।
घ्नन्तीं वेत्रेण फालस्रक्पाणिमश्वासनां भजे ॥)

ध्यानान्तरम्—

अश्वारूढा कराग्रे नवकनमयीं वेत्रयष्टिं दधाना
दक्षेऽन्ये धारयन्ती स्फुरति धनुर्लता पाशहस्ता सुसाध्या ॥
देवी नित्यप्रसन्ना शशिशकललसत्केशपाशा त्रिणेत्रा
दद्यादद्यानवद्यां श्रियमखिलसुखप्राप्तिहृद्यां श्रियै नः ॥)

(श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रस्तु–आह्निकप्रकरण एवोक्त इह पठितव्यः) ।

तद्यथा—

'ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म ल व र यों ह्सौः, स्ह्रौः अमुकानन्दनाथ श्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः ॥ २४ ॥

(श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पंक्तिच्छन्दः, श्रीविद्यागुरुपादुका देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यानम्—

तेजोमयमहाविद्यां शेखराञ्चितमस्तकाम् ।
रक्तां चतुर्भुजां वन्दे श्रीविद्यागुरुपादुकाम् ॥)

(अथ मूलविद्या—सा च गुरुमुखादवगता कादिनाम्नी—

'कएईलह्रीं ह्सकहलह्रीं सकलह्रीं' ॥ २५ ॥

(बाला अन्नपूर्णा अश्वारूढा श्रीपादुका चेत्येताभिश्चतसृभिर्युक्ता मूलविद्या साम्राज्ञी मूलधारे विलोकनीया) ॥

(ऋषिच्छन्दोदेवतादिकं गुरुपरम्परातः प्राप्तमवगन्तव्यम् ।)

'ऐं नमः उच्छिष्टचण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा'

(इति श्यामाङ्गभूता लघुश्यामा) ॥ २६ ॥

(लघुश्यामामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः, विराट्छन्दः, श्रीलघुश्यामाम्बा देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

स्मरेत्प्रथमपुष्पिणीं रुधिरबिन्दुशोणाम्बरां
गृहीतमधुपात्रिकां मदविघूर्णनेत्राञ्चलाम् ।
घनस्तनभरालसां गलितचूलिकां श्यामलां
करस्फुरितवल्लकीविमलशङ्खताटङ्किनीम् ॥
माणिक्यवीणामुपलालयन्तीं
मदालसां मञ्जुलवाग्विलासाम् ।
माहेन्द्रनीलद्युतिकोमलाङ्गीं
मातङ्गकन्यां मनसा स्मरामि ॥ (इति वा ॥)

'ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा' ।

(इयं श्यामाङ्गभूता वाग्वादिनी) ॥ २७ ॥

(वागीश्वरीमन्त्रस्य कण्व ऋषिः, विराट्छन्दः, वागीश्वरी देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अमलकमलसंस्था लेखनीपुस्तकोद्यत्
करयुगलसरोजा कुन्दमन्दारगौरा ।
धृतशशधरखण्डोल्लासिकोटीरपीठा
भवतु भवभयानां भङ्गिनी भारती नः ॥)

ॐ ओष्ठपिधाना नकुली दन्तैः परिवृता पविः ।
सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत् ॥

(इयं श्यामाप्रत्यङ्गभूता नकुलीविद्या) ॥ २८ ॥

(नकुलीवागीश्वरीमन्त्रस्य कहोल ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, नकुली-वागीश्वरी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

नकुली वज्रदन्ताली साध्यजिह्वाहिदंशिनी ।
भक्तवक्तृत्वजननी भावनीया सरस्वती ॥)

श्रीविद्यागुरुपादुकैव प्रथमबीजत्रयस्थाने बालासहिता श्यामागुरुपादुका भवति । यथा—

'ऐं क्लीं सौः ह्स्ख्फ्रें ह्सक्षमलवरयूं सह्क्षमलवरयीं ह्सौः स्ह्रीः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः' ॥ २९ ॥

(श्यामागुरुपादुकामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः, पंक्तिच्छन्दः, श्यामागुरुपादुका देवता, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

वन्दे गुर्वङ्घ्रिमुकुटां श्यामलां शुकपाणिनीम् ।
समस्तसिद्धिजननीं श्यामलागुरुपादुकाम् ॥)

'ऐं ह्रीं श्रीं ऐ क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुखरञ्जनि, क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि (त्रैलोक्यं) अमुकं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐ' (इत्यष्टनवतिवर्णा राजश्यामला पूर्वोक्ताभिरङ्गोपाङ्गपादुकेत्येताभिश्च—चतसृभिर्विद्याभिःसहिता हृच्चक्रे यष्टव्या) ॥ ३० ॥

(ऋष्यादिकं गुरुपरम्परातोऽवगन्तव्यम्)

'लृं वाराहि लृं उन्मत्तभैरवि पादुकाभ्यां नमः'

(इयं वार्ताल्यङ्गभूता लघुवार्ताली) ॥ ३१ ॥

(लघुवाराहीमन्त्रस्य नारद ऋषिः, पंक्तिच्छन्दः, लघुवाराही देवता, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

महार्णवे निपतितामुद्धरन्तीं वसुन्धराम् ।
महादंष्ट्रां महाकायां नमाम्युन्मत्तभैरवीम् ॥)

'ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा'

(इयं स्वप्ने शुभाशुभवक्त्री वार्ताल्या उपाङ्गभूता स्वप्नवाराही) ॥३२॥

(स्वप्नवाराहीमन्त्रस्य अग्नि ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, स्वप्नवाराही देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

स्वप्ने शुभाशुभं भावि शासन्तीं भक्तकार्ययोः ।
दुःस्वप्नहारिणीं वन्दे वाराहीं स्वप्नायिकाम् ॥)

ॐनमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकल पशुजनमनश्चक्षुःश्रोत्र तिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ३३ ॥

(तिरस्करिणीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, तिरस्करिणी देवता, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

मुक्तकेशीं विवसनां सर्वाभरणभूषिताम् ।
स्वयोनिदर्शनान्मुह्यत्पशुवर्गां नमाम्यहम् ॥

'ऐं ग्लौं ह्स्ख्रें ह्सक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः' । (एषा वार्ताली गुरुपादुका) ॥ ३४ ॥

(वाराहीगुरुपादुकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः, वाराहीगुरुपादुकादेवता, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

देशिकाङ्घ्रिलसन्मौलिं खड्गिनीञ्च कपालिनीम् ।
भावयामि घनच्छायां पञ्चमीगुरुपादुकाम् ॥)

'ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्ताले वार्ताले वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः । रुन्धे रुन्धिनि नमः । जम्भे जम्भिनि नमः । मोहे मोहिनि नमः । स्तम्भे स्तम्भनि नमः । सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाचित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठः ठः ठः हुँ अस्त्राय फट् (इति द्वादशोत्तरशताक्षरो महावाराहीमन्त्रः) ॥ ३५ ॥

(पूर्वोक्ताभिश्चतसृभिर्युक्तेयं महावाराही आज्ञाचक्रे परिपूज्या ।)

प्रथमद्वितीयकूटयोः हृल्लेखावर्जं पञ्चदश्येव त्रयोदशाक्षरी श्रीपूर्तिविद्या ब्रह्मरन्ध्रे यष्टव्या ।

तद्यथा—**'क ए ई ल ह्र स क ह ल स क ल ह्रीं' (इयं कादिपूर्तिविद्या) 'ह स क ल ह्र स क ह ल स क ल ह्रीं' (इयं हादिपूर्तिविद्या) ॥ ३६ ॥**

(श्रीपूर्तिविद्यामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिच्छन्दः, श्रीपूर्तिविद्या देवता, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोः ।)

प्रथमत्रिकस्थाने त्रितारी कुमारी वाक् ग्लौं इत्यष्टबीजपूर्वा श्रीगुरुपादुकैव महापादुका सर्वमन्त्रसमष्टिरूपिणी स्वैक्यविमर्शिनी महासिद्धिप्रदायिनी द्वादशान्ते वरिवस्या । यथा—

"ऐं ह्रीं श्रीं ऐ क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्ह्रौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः ॥ ३७ ॥

(महापादुकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिच्छन्दः, श्रीमहापादुका देवता, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

सर्वविद्यामयीं सर्वशक्तिपीठस्वरूपिणीम् ।
कराग्रे हृदये मूले देशिकाङ्घ्रियुगत्रयम् ॥
दधतीं दीप्तभूषाढ्यां श्रीमहापादुकां नमः ।

(इति ऋष्यादिसहितरश्ममाला) । रश्ममालामन्त्रा आहत्य सप्तत्रिंशति । एते ब्राह्मे मुहूर्ते सकृदावर्तनीयाः सर्व एमेवे मन्त्राः श्रीगुरुमुखादवगत्यैव पठिताः महते श्रेयसे, नान्यथेति शिवशासनम् ।

पुस्तके लिखितान् मन्त्रानवलोक्य जपेत्तु यः ।
स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः श्वा चाभिजायते ॥

इति सांख्यायनतन्त्रवचनेन गुरुमुखागमं विना जपस्य निषेधात् ॥

प्रातःकृत्यम्

भूप्रार्थनादिमुखक्षालनान्तम्

प्रातः प्रभृति सायान्तं सायादिप्रातरन्ततः ।
यत्करोमि जगद्योने तदस्तु तव पूजनम् ॥
मञ्जुसिञ्जितमञ्जीरं वामधर्मं महेशितुः ।
आश्रयामि जगन्मूलं यन्मूलं सचराचरम् ॥
प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दं
बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम् ।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं
मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम् ॥१॥

प्रातर्भजामि ललिता भुजकल्पवल्लीं
रक्ताङ्गुलीयलसदङ्गुलिपल्लवाढ्याम् ।
माणिक्यहेमवलयाङ्गदशोभमानां
पुड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीर्दधानाम् ॥२॥
प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं
भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम् ।
पद्मासनादिसुरनायकपूजनीयं
पद्माङ्कुशध्वजसुदर्शनलाञ्छनाढ्यम् ॥३॥
प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भवानीं
त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम् ।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभूतां
विद्येश्वरीं निगमवाङ्मनसातिदूराम् ॥४॥
प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति ।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ॥५॥
यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः
सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते ।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिम् ॥६॥

भूप्रार्थना

समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादचारं क्षमस्व मे ॥

इति भूमिं सम्प्रार्थ्य, धरणीतलन्यस्तवहन्नाड़ीपाश्वंपादमुत्थाय ग्रामाद्बहिः स्मार्तेन विधिना निर्वर्तितशौचक्रमः ।

दन्तधावनम्

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजा पशुवसूनि च ।
ब्रह्मप्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वं नो देहि वनस्पते ॥

इति मन्त्रेण दन्तधावनकाष्ठमभिमन्त्र्य 'ऐंह्रींश्रीं, 'क्लीं कामदेवाय-सर्वजनप्रियाय नमः' (इति मन्त्रेण दन्तधावनम्) । ऐंह्रींश्रीं ह्रल्लेखया जिह्वोल्लेखनं च विधाय कफविमोचननासाशोधनदूषिकानिरसनपूर्वकं-विहितविंशतिगण्डूषः । ऐंह्रींश्रीं, 'श्रीं' । ऐं ह्रीं श्रीं 'ॐ ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः' । ऐंह्रींश्रीं 'श्रीं ह्रीं क्लीं' । ऐंह्रींश्रीं 'श्रींसहकलह्रीं श्रीं' इति मन्त्रचतुष्टयेन मुखं प्रक्षाल्य यथा स्मृत्याचामेत् ।

स्नानविधिः

ततो नद्यादौ वैदिकस्नानोत्तरं श्रीललितप्रीत्यर्थं तान्त्रिकस्नानं करिष्ये, इति सङ्कल्प्य, जले पुरतो हस्तमात्रं चतुरस्रमण्डलं परिगृह्य तत्र—

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

इति सूर्यमभ्यर्च्य,

आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि ।
एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥

(इति गङ्गामर्थयित्वा) ऐंह्रींश्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्रों, इत्यङ्कुश-मुद्रया सूर्यमण्डलं भित्वा गङ्गादिसर्वतीर्थावाहनोत्तरं "वं" इति सलिल-बीजेन सप्तावारमभिमन्त्र्य मुहुर्मुहुरावर्तयन् मूर्ध्नि त्रीनुदकाञ्जलीन् दत्वा त्रींश्च पीत्वा, मूलपूर्वं श्रीललितां तर्पयामीति त्रिस्तर्पणं मूलेन त्रिः-प्रोक्षणञ्चात्मनो योनिमुद्रया विदध्यात्) ।

(गृहे तु विना तर्पणम् । अशक्तौ च स्मार्तेन पथा मन्त्रभस्मनोरन्यतर-न्निर्वर्त्य मूलेन त्रिराचमनप्रोक्षणे केवलं कुर्यात्) ।

सन्ध्याविधिः

अथ धौते वाससी परिधाय विधृतपुण्ड्रः वैदिकीं सन्ध्यामभिवन्द्य तान्त्रिकीमाचरेत् । यथा—मूलेन त्रिराचम्य द्विः परिमृज्य सकृदुपस्पृश्य चक्षुषी नासिके श्रोत्रे अंसौ नाभिं हृदयं शिरश्चाभिमृशेत् । एवं त्रिराचम्य पूर्ववत्प्राणानायम्य त्रिरात्मानञ्च प्रोक्ष्य अञ्जलिना सलिलमादाय 'ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय स्वाहा' इति मन्त्रेण उदयते विवस्वते त्रिरर्घ्यं दत्वा तन्मण्डले श्रीचक्रमनुचिन्त्य तत्र ध्यायेत्—

ध्यायेत्कामेश्वराङ्कस्थां कुरुविन्दमणिप्रभाम् ।
शोणाम्बरस्रगालेपां सर्वाङ्गीणविभूषणाम् ॥
सौन्दर्यशेवधिं सेक्षुचापपाशाङ्कुशोज्ज्वलाम् ।
स्वभाभिरणिमाद्याभिः सेव्यां सर्वनियामिकाम् ॥
सच्चिदानन्दवपुषं सदयापाङ्गविभ्रमाम् ।
सर्वलोकैकजननीं स्मेरास्यां ललिताम्बिकाम् ॥

(अत्रायुधानां क्रमः स्वरूपञ्च सपर्याप्रकरणे वक्ष्यते)

ततः—'ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरि विद्महे,
ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं पीठकामनि धीमहि,
ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्'

(इति मन्त्रेण महेश्यै त्रिरर्घ्यं दत्वा मूलेन त्रिस्सन्तर्प्य, मूलेन पूर्ववदाचम्य जपप्रकरणे वक्ष्यमाणान् ऋष्यादीन् न्यस्य मूलमष्टोत्तरशतवारमावर्तयेत्) । ततः पुनः कराङ्गन्यासादिकं कृत्वा जपं वक्ष्यमाणमन्त्रेण श्रीदेव्यै समर्प्याचम्य मण्डलस्थं तीर्थं विसर्जनमुद्रया सूर्ये विसृजेत् ।

अथ सपर्यासाधनानि सम्पाद्य ब्रह्मयज्ञादि निर्वर्तयेद् । इति शिवम् ॥

प्रथममाह्निकप्रकरणं समाप्तम्

अथ वाञ्छाकल्पलता

श्रीगुरुभ्यो नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीक्षेत्रपालाय नमः। श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः। मूलमुच्चार्य। तालत्रयं कृत्वा। मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा।

ॐ अस्य श्रीवाञ्छाकल्पलताविद्यागणेशस्य मनोर्नानासूक्तसमूहस्य, आनन्दभैरवगणकाङ्गिरसकश्यपवशिष्ठविश्वामित्रसंवनना ऋषयः, देवीगायत्रीनिचृद्गायत्रीपङ्त्यनुष्टुप्निचृत्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि, श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसम्वादाग्न्यमृतरुद्रा देवताः, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, मम श्रीमहागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसम्वादाग्न्यमृतरुद्रप्रसादवाञ्छितार्थफलप्रसिद्धये वाञ्छाकल्पतोपस्थाने विनियोगः। इति सङ्कल्प्य।

आनन्दभैरवगणकाङ्गिरसकश्यपवशिष्ठविश्वामित्रसंवननऋषिभ्यो नमः शिरसि, देवीगायत्रीनिचृद्गायत्रीपंक्त्यनुष्टुप्निचृत्त्रिष्टुब्जगतीछन्देभ्यो नमः मुखे, महाश्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी गणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रदेवताभ्यो नमः हृदये, श्रीं बीजाय नमो नाभौ, ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये, क्लीं कीलकायनमः आधारे, इति न्यस्य मूलेन व्यापकं चरेत्।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं क ए ई ल ह्रीं गणपतये हसकहलह्रीं वरवरद सकलह्रीं सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। इति त्रिचत्वारिंशदर्णोमनुः।

ऐं क्लीं सौः श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ११ ह्रीं सर्वज्ञायै ह्रां गां ब्रह्मात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ऐं० ११ ह्रीं नित्यतृप्तायै ह्रीं गीं विष्ण्वात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा। ऐं० ११ ह्रीं अनादिबोधितायै ह्रूं गूं रुद्रात्मने मध्यमाभ्यां वषट्। ऐं० ११ ह्रीं स्वतन्त्रायै ह्रैं गैं ईश्वरात्मने अनामिकाभ्यां हुम्। ऐं० ११ ह्रीं नित्यमलुप्तायै ह्रौं गौं सदाशिवात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ऐं० ११ ह्रीं अनन्तायै ह्रः गः सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिन्यासं विधाय पुनर्मूलेन त्रिर्व्याप्य ध्यायेत्। यथा—

हेमाद्रौ हेमपीठस्थितिममरगणैरीड्यमानां विराजत्—
पुष्पेष्वक्ष्वासिपाशाङ्कुशकरकमलां रक्तवेषातिरक्ताम् ।
दिक्षूद्यद्भिश्चतुर्भिर्मणिमयकलशैः पञ्चशक्त्यैकविद्याम्,
स्वस्थां वह्नेरभिषेकां भजत भगवतीं भूतिदामन्त्ययामे ॥१॥
बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल—
ब्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया, श्लिष्टो ज्वलद्भूषया,
विघ्नोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥२॥

धवलनलिनराजच्चन्द्रमध्ये निषण्णम्, करधृतवरपाशं साभयं साङ्कुशञ्च ।
अमृतवपुषमिन्दुक्षीरवर्णं त्रिनेत्रम्, प्रणमत सुरवन्द्यं मङ्क्षु सम्वादयन्तम् ॥३॥
स्फुटितनलिनसंस्थं मौलिबद्धेन्दुरेखा गलदमृतरसार्द्रं चन्द्रवह्न्यर्कनेत्रम् ।
स्वकरकलितमुद्रावेदपाशाक्षमालम्, स्फटिकरजतमुक्तागौरमीशं नमामि ॥४॥

(मुद्रा ज्ञानमुद्रेत्यर्थः) ।

इति ध्यात्वा, मुद्रा प्रदर्श्य—

श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी महागणपतिसम्वादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः इति अङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्याम् । श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः इति तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम् । श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि नमः इति अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम् । श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी महागणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः इति अङ्गुष्ठमध्यमाभ्यां । श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम् । श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः सं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि नमः इति संहताभिः सर्वाङ्गुलीभिः दद्यात् । एवं मानसोपचारैः सम्पूज्य, गुरुदेवतात्मनामैक्यं भावयित्वा । रात्रौ अन्त्ययामे सूर्योदयात्पूर्वं शनैः शनैः जपेत् ।

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं "ई"

(२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परोरजसे सावदोम्,

(३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसकल हसकहल सकलह्रीं, प्रत्येकं दशवारं जपित्वा,

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुगुरीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐं क्लीं सौः २९ । यदद्यकच्चवृत्रहन्नुदगा अभिसूर्य सर्वं तदिन्द्र ते वशे २३ । गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वर वरद आं ह्रीं क्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं । ३६ ॥१॥

ॐ ऐं····सौः २९ । तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् २३ । गं····ऐं ३६ ॥२॥

ॐ ऐं····सौः २९ । त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ३२ । गं····ऐं ३६ ॥३॥

ॐ ऐं····सौः २९ । जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहादि वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ४३ । गं····ऐं ३६ ॥४॥

ॐ ऐं····सौः २९ । समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् । समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ४४ । गं····ऐं ३६ ॥५॥

ॐ ऐं····सौः २९ । सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ३० । गं····ऐं ३६ ॥३६॥

ॐऐं····सौः २९ । समानो····जुहोपि ४४ ॥ गं····ऐं ३६ ॥७॥

ॐऐं····सौः २९ । जात····त्यग्निः ४३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥८॥

ॐऐं····सौः २९ । त्र्यम्ब····मृतात् ३२ ॥ गं····ऐं ३६ ॥९॥

ॐऐं····सौः २२ । तत्स····यात् २३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥१०॥

ॐऐं····सौः २९ । यदद्य····वशे २३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥११॥

ॐऐं····सौः २९ । गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कविनामुपश्रवस्तमम् । ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम् ४८ ॥ गं····ऐं ३६ ॥१२॥

ॐ भद्रः भद्रं नो अपिवातयः मनः। ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा ॥१३॥

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः ॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानाम् पृथग्धियाम् ।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने ! प्रसीद मे ॥

इति प्रथमः पर्यायः

ॐऐं····सौः २९ । यदद्य····वशे २३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥१॥
ॐऐं····सौः २९ । तत्स····यात् २३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥२॥
ॐऐं····सौः २९ । त्र्यम्ब····मृतात् ३२ ॥ गं····ऐं ३६ ॥३॥
ॐऐं····सौः २९ । जात····त्यग्नि ४३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥४॥
ॐऐं····सौः २९ । समा····होमि ४४ ॥ गं····ऐं ३६ ॥५॥

ॐऐं····सौः २९ । संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ३२ ॥ गं····ऐं ३६ ॥६॥

ॐऐं····सौः २९ । समा····होमि···· ४४ ॥ गं····ऐं ३६ ॥७॥
ॐऐं····सौः २९ । जात····त्यग्नि···· ४३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥८॥
ॐऐं....सौः २९ । त्र्यम्ब....मृत्तात् ३२ ॥ गं....ऐं ३६ ॥९॥
ॐऐं....सौः २९ । तत्स....यात् २३ ॥ गं....ऐं ३६ ॥१०॥
ॐऐं....सौः २९ । यद्यश वशे २३ ॥ गं....ऐं ३६ ॥११॥

ॐऐं....सीः २९ । अग्गेमन्युं प्रतिनुदन् परेषामदब्धो गोपाः परिपाहि नस्त्वम् । प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्ते मैषां चित्तं प्रबुधां विनेशत् ४३ ॥ गं....ऐं ३६ ॥१२॥

ॐ भुवः मरुतामोजसे स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा ॥

दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः ॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम् ।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने ! प्रसीद मे ॥

इति द्वितीयः पर्यायः

ॐएँ....सौः २९ । यदद्य....वशे २३ ॥ गं....एँ ३६ ॥१॥
ॐएँ....सौः २९ । तत्स....यात् २३ ॥ गं....एँ ३६ ॥२॥
ॐएँ....सौः २९ । त्र्यम्ब....मृतात् ३२ ॥ गं....एँ ३६ ॥३॥
ॐएँ....सौः २९ । जातः....त्यग्निः ४३ ॥ गं....एँ ३६ ॥४॥
ॐएँ....सौः २९ । समा....होमि ४४ ॥ गं....एँ ३६ ॥५॥
ॐएँ....सौः २९ । समा....होमि ४४ ॥ गं....एँ ३६ ॥६॥
ॐएँ....सौः २९ । समा....होमि ४४ ॥ गं....एँ ३६ ॥७॥
ॐएँ....सौः २९ । जातः....त्यग्नि ४३ ॥ गं....एँ ३६ ॥८॥
ॐएँ....सौः २९ । त्र्यम्ब....मृतात् ३२ ॥ गं....एँ ३६ ॥९॥
ॐएँ....सौः २९ । तत्स....यात् २३ ॥ गं....एँ ३६ ॥१०॥
ॐएँ....सौः २९ । यदद्य....वशे २३ ॥ गं....एँ ३६ ॥११॥

ॐएँ....सौः २९ । यो मामग्ने भागिनं सन्तमथाभागं चिकीर्षति । अभागमग्ने तं कुरु मामग्ने भागिनं कुरु स्वाहा ३६ ॥ गं....एँ ३६ ॥१२॥

ॐ स्वः इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥१३॥ ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा ।

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः ॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम् ।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद मे ॥

इति तृतीयः पर्यायः

ॐएँ....सौः २९। यदद्य....वशे २३ ॥ गं....एँ ३६ ॥१॥
ॐएँ....सौः २९। तत्स....यात् २३ ॥ गं....एँ ३६ ॥२॥
ॐएँ....सौः २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३२ ॥ गं....एँ ३६ ॥३॥
ॐएँ....सौः २९। जात....त्यग्नि ४३ ॥ गं....एँ ३६ ॥४॥
ॐएँ....सौः २९। समा....होमि ४४ ॥ गं....एँ ३६ ॥५॥
ॐएँ....सौः २९। समानी व आकूति समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ३१ ॥ गं....एँ ३६ ॥६॥
ॐएँ....सौः २९। समा....होमि ४४ ॥ गं....एँ ३६ ॥७॥
ॐएँ....सौः २९। जात....त्यग्निः ४३ ॥ गं....एँ ३६ ॥८॥
ॐएँ....सौः २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३२ ॥ गं....एँ ३६ ॥९॥
ॐएँ....सौः २९। तत्स....यात् २३॥ गं....एँ ३६ ॥१०॥
ॐएँ....सौः २९। यदद्य....वशे २३ ॥ गं....एँ ३६ ॥११॥

ॐएँ ...सौः २९। अजैष्माद्यासनाम चा भूमा नागसो वयम् जाग्रत्स्वप्नः सङ्कल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ४० ॥ गं....एँ ३६ ॥१२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१३॥ ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः ॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम्।
निर्वैरिता च जायेत संवादग्ने प्रसीद मे ॥

इति चतुर्थः पर्यायः

इति जपित्वा,

गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु देवेशि, त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

इति जपं निवेदयेत् ॥

एवं प्रत्यहं निशान्ते चतुर्वारं पठेत् ॥ सर्वैश्वर्यं भवति ॥ सर्ववेदान्त-फलमश्नुते । इति शम् ॥

॥ इतिवाञ्छाकल्पलताप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ श्रीवाञ्छाकल्पलता—विधानम्

प्रजपेदिष्टसिद्ध्यर्थं विद्याग्रहणसंयुतः ।
तद्भवेद् वेदिकामन्त्रः भेदेनेत्यर्थविद्यया ॥
अष्टवारं जपेन्नित्यं सर्वाभीष्टमवाप्नुयात् ।
जपेत् षोडशसाहस्रं तर्पणाहुतियोगतः ॥२॥
श्रीविद्यायास्तु साधर्म्यं साधयेत्साधितो मनुः ।
पुरश्चर्याविधानेन साधकः सर्वदा जपेत् ॥३॥
तत्सर्वं लभते नित्यं वाञ्छाकल्पलतामनोः ।
इत्येतत्कथितं गुह्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥४॥
जपेत्षोडशसाहस्रं षट्साहस्रमथापि वा ।
पायसेन हुनेद्देवि नारिकेलफलैस्तिलैः ॥५॥
असाध्यं साधयेल्लोके अवश्यं वशमाप्नुयात् ।
किमत्र बहुनोक्तेन सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥६॥

(इतिकुमारसंहितायाम्)

(तन्त्रान्तरे)

वाञ्छाकल्पलतायास्तु न होमो न च तर्पणम् ।
स्मरणादेव सिद्धिःस्यात् यदिच्छति हि तद्भवेत् ॥१॥
एकावृत्त्या वशे लक्ष्मीः पञ्चावृत्त्या वशं जगत् ।
दशावृत्त्या तथा विष्णुरुद्रशक्तिर्भवेदिह ॥२॥
सार्वभौमः शतावृत्त्या भवत्येव न संशयः ।

तन्त्रराजोक्तं नित्याकवचम्

समस्तापद्विमुक्त्यर्थं सर्वसम्पदवाप्तये ।
भूतप्रेतपिशाचादिपीडाशान्त्यै सुखाप्तये ॥
समस्तरोगनाशाय समरे विजयाय च ।
चौरसिंहद्वीपिगजगवयादि - भयानके ॥
अरण्ये शैलगहने मार्गे दुर्भिक्षके तथा ।
सलिलाग्निमरुत्पीडास्वब्धौ पोतादिसङ्कटे ॥
प्रजप्य नित्याकवचं सकृत्सर्वं तरत्यसौ ।
सुखी जीवति निर्द्वन्द्वो निःसपत्नो जितेन्द्रियः ॥
शृणु तत्कवचं देवि ! वक्ष्ये तव तदात्मकम् ।
येनाहमपि युद्धेषु देवासुरजयी सदा ॥
सर्वतः सर्वदाऽऽत्मानं ललिता पातु सर्वदा ।
कामेशी पुरतः पातु भगमाला त्वनन्तरम् ॥
दिशं पातु तथा दक्षपार्श्वं मे पातु सर्वदा ।
नित्यक्लिन्ना तु भेरुण्डा दिशं पातु सदा मम ॥
तथैव पश्चिमं भागं रक्षेत्सा वह्निवासिनी ।
महावज्रेश्वरी रक्षेदनन्तरदिशं सदा ॥
वामपार्श्वं सदा पातु दूती मे त्वरिता ततः ।
पालयेत्तु दिशं वात्यां रक्षेन्मां कुलसुन्दरी ॥

नित्यामामूर्ध्वतः पातु साऽधो मे पातु सर्वदा ।
नित्या नीलपताकाख्या विजया सर्वतश्च माम् ॥
करोतु मे मङ्गलानि सर्वदा सर्वमङ्गला ।
देहेन्द्रियमनःप्राणान् ज्वालामालिनिविग्रहा ॥
पालयेदनिशं चित्रा चित्तं मे पातु सर्वदा ।
कामात् क्रोधात् तथा लोभान्मोहान्मानान्मदादपि ॥
पापान्मत्सरतःशोकात् संशयात्सर्वतः सदा ।
स्तैमित्याच्च समुद्योगादशुभेषु तु कर्मसु ॥
असत्यात् क्रूरचिन्तातो हिंसातश्चोरतस्तथा ।
रक्षन्तु मां सर्वदा ताः कुर्वन्त्विच्छां शुभेषु च ॥
नित्याः षोडश मां पान्तु गजारूढाः स्वशक्तिभिः ।
तथा हयसमारूढाः पान्तु मां सर्वतः सदा ॥
सिंहारूढास्तथा पान्तु मां तरक्षुगता अपि ।
रथारूढाश्च मां पान्तु सर्वतः सर्वदा रणे ॥
तार्क्ष्यारूढाश्च मां पान्तु तथा व्योमगतास्तु ताः ।
भूगताः सर्वदा पान्तु मां सर्वत्र च सर्वदा ॥
भूत-प्रेतपिशाचापस्मारकृत्यादिकान् गदान् ।
द्रावयन्तु स्वशक्तीनां भीषणैरायुधैर्मम ॥
गजाश्वद्वीपिपञ्चास्यतार्क्ष्यारूढाखिलायुधाः ।
असंख्याः शक्तयो देव्याः पान्तु मां सर्वतः सदा ॥
सायं प्रातर्जपन्नित्याकवचं सर्वरत्नकम् ।
कदाचिन्नाशुभं पश्येन्न शृणोति च तत्समः ॥

श्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे नित्याकवचं समाप्तम् ।

ओं श्रीगुरुभ्यो नमः ।

ओं श्रीमहागणपतये नमः ।

ओं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।

॥ श्रीविद्यासपर्यापद्धतिः ॥

॥ प्रथमः खण्डः ॥

यागमन्दिरप्रवेशादि चक्रपूजान्तम् ।

ब्रह्मविद्यासंप्रदायगुरुस्तोत्रम् ।

आब्रह्मलोकादाशेषादालोकालोकपर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमाम्यहम् ॥

ओं नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासंप्रदायकर्तृभ्यो वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः । सर्वोपप्लवरहितप्रज्ञानघनप्रत्यगर्थो ब्रह्माहमस्मि, सोहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि ॥

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।
वीरद्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

श्रीललितासहस्रनामावलिः

अस्य श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमालामन्त्रस्य वशिन्यादिभ्यो वाग्देवताभ्य ऋषिभ्यो नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे । श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः हृदये । क ५ बीजाय नमः गुह्ये । स० ४ शक्तये नमः पादयोः । ह० ६ कीलकाय नमः नाभौ । चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धयर्थे जपे (श्रीललिताम्बाप्रीत्यर्थं) (पूजने) विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

कूटत्रयं द्विरावृत्य (बालया वा) षडङ्गद्वयम् ।

ध्यानश्लोकः

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्,
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं,
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥१॥

मानसैः पद्मोपचारैः सम्पूज्य,

श्रीललितासहस्रनामावलिः

ॐ–ऐं–ह्रीं–श्रीं

ॐ श्रीमात्रे नमः
श्रीमहाराज्ञ्यै
श्रीमत्सिंहासनेश्वर्यै
चिदग्निकुण्डसम्भूतायै
देवकार्यसमुद्यतायै
उद्यद्भानुसहस्राभायै

ॐ चतुर्बाहुसमन्वितायै नमः
रागस्वरूपपाशाढ्यै
क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वलायै
मनोरूपेक्षुकोदण्डायै
पञ्चतन्मात्रसायकायै

१०

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम् ।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः ॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं
शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च ।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं
गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम् ॥
श्रीशंकराचार्यमथास्य पद्म-
पादं च हस्तामलकं च शिष्यम् ।
तं त्रोटकं वार्तिककारमन्या-
नस्मद्गुरून् संततमानतोऽस्मि ॥

यागमन्दिरप्रवेशः ।

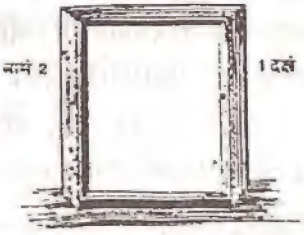

ओं ऐं ह्रीं श्रीं भं भद्रकाल्यै नमः । (द्वारस्य दक्षशाखायां)
४ भं भैरवाय नमः । (,, वामशाखायां)
४ लं लम्बोदराय नमः । (,, ऊर्ध्वशाखायां)
इति द्वारदेवताः संपूज्य ।

तत्त्वाचमनम् ।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
४ क्लीं हसकहलह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
४ सौः सकलह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
४ ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

गुरुपादुकामन्त्रः ।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोहं, ह्स्रफ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

ओं ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, सोहं हंसः शिवः, ह्स्रफ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः सोहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ-श्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

ओं ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोहं हंसः, ह्स्रफ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

इति मृगीमुद्रया गुरुपादुकामुच्चार्य, सुमुख-सुवृत्त-चतुरश्र-मुद्गर-योन्याख्याभिः पञ्चभिर्मुद्राभिः श्रीगुरून् वामभुजे प्रणम्य, गणपतिमूलेन स्वदक्षभुजे योनिमुद्रया महागणपतिं प्रणमेत् ॥

घण्टापूजा ।

हे घण्टे सुस्वरे पीठे घण्टाध्वनिविभूषिते ।
वादयन्ति परानन्दे घण्टादेवं प्रपूजयेत् ॥
आगमार्थं च देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
कुर्यात् घण्टारवं तत्र देवताह्वानलाञ्छनम् ॥

इति घण्टानादं कृत्वा ॥

सङ्कल्पः ।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

मूलेन प्राणानायम्य । देशकालौ संकीर्त्य—

मम श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रीत्यर्थं यथासंभवद्रव्यैः यथाशक्ति सपर्याक्रमं निर्वर्तयिष्ये, तेन परमेश्वरं प्रीणयामि ॥

आत्मानं अलंकृत्य ताम्बूलेन सुरभिलवदनः सन् प्रमुदित-चित्तः शिवोऽहं इति भावयेत् ॥

आसनपूजा ।

आसनमास्तीर्य दक्षिणहस्ते जलमादाय सौः इति द्वादश-वारमभिमन्त्र्य तज्जलेन मूलमन्त्रेण आसनं प्रोक्षयेत् ॥

अस्य श्री आसनमहामन्त्रस्य—पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः ॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

योगासनाय नमः, वीरासनाय नमः, शरासनाय नमः,
ओं ऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥

इति पुष्पाक्षतैः आसनमभ्यर्च्य आसने उपविशेत् ॥

ॐ रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय द्वीपनाथाय नमः ।

इति भूमौ पुष्पाञ्जलि विकिरेत् ॥

देहरक्षा ।

ॐ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष—

इति देहे त्रिः व्यापकं कृत्वा ॥

गुं गुरुभ्यो नमः । (दक्षबाहौ)
गं गणपतये नमः । (वामबाहौ)
दुं दुर्गायै नमः । (दक्षोरौ)
वं वटुकाय नमः । (वामोरौ)
यां योगिनीभ्यो नमः । (पादयोः)
क्षं क्षेत्रपालाय नमः । (नाभौ)
पं परमात्मने नमः । (हृदये)

ॐ ओं नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुःश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा ॥

ॐ हसन्ति हसितालापे मातङ्गिपोरचारिके मम भय-विघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा ॥

ॐ ओन्नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्व-
भूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल
ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हां हीं हूं र र र र र र र र
हुं फट् स्वाहा—इति परितो वह्निप्राकारं विभाव्य
भूर्भुवस्सुवरों इति दिग्बन्धः ॥

परमामृतवर्षेण प्लावयन्तं चराचरम् ।
संचिन्त्य परमद्वैतभावनाऽमृतसेवया ॥
मोदमानो विस्मृतान्यविकल्पविभवभ्रमः ।
चिदम्बुधिमहाभङ्गच्छिन्नसंकोचसङ्कटः ॥
समुल्लसन्महानादलोकनोऽन्तर्मुखायनः ।
मन्त्रमय्या मनोवृत्त्या परमाद्वैतमीहते ॥
सपर्या सर्वभावेषु सा परा परिकीर्तिता ।
अपरा तु बहिर्वक्ष्यमाणचक्रार्चनाविधिः ॥
परापरस्य बाह्यस्य चिज्ज्योम्नि विलयः स्मृता ।
इत्थं त्रिधा समुद्दिष्टा बाह्याभ्यन्तरभेदतः ॥

एवं भावयित्वा

ॐ समस्तप्रकट-गुप्त-गुप्ततर-संप्रदाय-कुलोत्तीर्ण-निगर्भ-रहस्याति-
रहस्य-परापरातिरहस्ययोगिनीदेवताभ्यो नमः ॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा ॥

ॐ ऐं द्रूः अस्त्राय फट्—इति अस्त्रमन्त्रेण मुहुरावृत्तेन अङ्गुष्ठादि-
कनिष्ठिकान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे च व्यापकं कुर्यात् ॥

ॐ श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक ।
अनुज्ञां देहि भगवन् श्रीचक्रयजनाय मे ॥
ॐ अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

लघुप्राणप्रतिष्ठा ।

ॐ ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ओं हंसः सोहं, सोहं हंसः शिवः, श्रीचक्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥
ॐ ओं आं ह्रीं क्रों श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः । सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणा इहैवागत्य अस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥
ॐ ओं असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नस्स्वस्ति ॥

मन्दिरपूजा ।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्भोनिधये नमः
ॐ रत्नद्वीपाय नमः
ॐ नानावृक्षमहोद्यानाय नमः
ॐ कल्पवाटिकायै नमः
ॐ संतानवाटिकायै नमः
ॐ हरिचन्दनवाटिकायै नमः
ॐ मन्दारवाटिकायै नमः
ॐ पारिजातवाटिकायै नमः

ओं ऐं ह्रीं श्रीं कदम्बवाटिकायै नमः

४ पुष्परागरत्नप्राकाराय नमः
४ पद्मरागरत्नप्राकाराय नमः
४ गोमेधकरत्नप्राकाराय नमः
४ वज्ररत्नप्राकाराय नमः
४ वैडूर्यरत्नप्राकाराय नमः
४ इन्द्रनीलरत्नप्राकाराय नमः
४ मुक्तारत्नप्राकाराय नमः
४ मरकतरत्नप्राकाराय नमः
४ विद्रुमरत्नप्राकाराय नमः
४ माणिक्यमण्टपाय नमः
४ सहस्रस्तम्भमण्टपाय नमः
४ अमृतवापिकायै नमः
४ आनन्दवापिकायै नमः
४ विमर्शवापिकायै नमः
४ बालातपोद्वाराय नमः
४ चन्द्रिकोद्वाराय नमः
४ महाशृङ्गारपरिघायै नमः
४ महापद्माटव्यै नमः
४ चिन्तामणिमयगृहराजाय नमः
४ पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वाराय नमः
४ दक्षिणाम्नायमयदक्षिणद्वाराय नमः

ओं ऐं ह्रीं श्रीं पश्चिमाम्नायमयपश्चिमद्वाराय नमः
४ उत्तराम्नायमयोत्तरद्वाराय नमः
४ रत्नप्रदीपवलयाय नमः
४ मणिमयमहासिंहासनाय नमः
४ ब्रह्ममयैकमञ्चपादाय नमः
४ विष्णुमयैकमञ्चपादाय नमः
४ रुद्रमयैकमञ्चपादाय नमः
४ ईश्वरमयैकमञ्चपादाय नमः
४ सदाशिवमयैकमञ्चफलकाय नमः
४ हंसतूलिकातल्पाय नमः
४ हंसतूलिकामहोपधानाय नमः
४ कौसुम्भास्तरणाय नमः
४ महावितानकाय नमः
४ महामायायवनिकायै नमः

इति चतुश्चत्वारिंशन्मन्दिरमन्त्रैः तत्तदखिलं भावयन्कुसुमाक्षतैरभ्यर्चयेत् ॥

दीपपूजा ।

स्वदक्षभागे गन्धपुष्पाक्षतादीन्निधाय दीपानभितः प्रज्वाल्य ॥

घृतदीपो दक्षिणे स्याच्तैलदीपस्तु वामतः ।
सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तु वामतः ॥

(दक्षवामभागौ देव्या एव)

दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा ।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावत्प्रज्वल सुस्थिरा ॥
इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥

मूलेन चक्रमध्ये पुष्पाञ्जलिं विकीर्य, मूलत्रिखण्डेन स्वाग्र-वामदक्षकोणेषु पुष्पाञ्जलीन्दद्यात् ॥

——:o:——

॥ द्वितीयः खण्डः ॥

भूतशुद्ध्यादि विघ्नोत्सारणान्तम् ।

भूतशुद्धिः ।

श्वाससमीरं पिङ्गलया अन्तराकृष्य—

ॐ मूलशृङ्गाटकात् सुषुम्नापथेन जीवशिवं परमशिवपदे योजयामि स्वाहा—इति मन्त्रेण मूलाधारस्थितं जीवात्मानं सुषुम्नावर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा परमशिवेन एकीभूतं विभाव्य इडया वायुं रेचयेत् ॥

ॐ यं १६. (इडया पूरयित्वा) **संकोचशरीरं शोषय शोषय स्वाहा**—इति निजशरीरं शोषितं विभाव्य पिङ्गलया रेचयेत् ॥

ॐ रं १६. (पिङ्गलया पूरयित्वा) **संकोचशरीरं दह दह पच पच स्वाहा**—इति प्लुष्टं भस्मीकृतं च विभाव्य इडया रेचयेत् ॥

४ वं १६. (इडया पूरयित्वा) परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा—इति तद्ब्रह्म सहस्रारेन्दुमण्डलविगलदमृतरसेन सिक्तं च विभाव्य पिङ्गलया रेचयेत् ॥

४ लं १६. (पिङ्गलया पूरयित्वा) शांभवशरीरमुत्पादयोत्पादय स्वाहा—इति तद्ब्रह्मनो दिव्यशरीरमुत्पन्नं विभाव्य इडया रेचयेत् ॥

४ हंसः सोहं (इडया पूरयित्वा) अवतर अवतर शिवपदात् जीव सुषुम्नापथेन प्रविश मूलशृङ्गाटकं उल्लसोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोहं स्वाहा—इति परमशिवेनैकीकृतं जीवं पुनः सुषुम्नावर्त्मना मूलाधारे स्थापितं चिन्तयेत् ॥

आत्मप्राणप्रतिष्ठा ।

हृदि दक्षकरतलं निधाय—४ आं सोहं—इति त्रिः पठेत् ॥

अथ मूलेन षोडशधा दशधा त्रिधा वा प्राणानायम्य ॥

विघ्नोत्सारणम् ॥

४ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

इति मन्त्रमुच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णिभूतलाघातत्रय-करास्फोटनत्रय - क्रूरदृष्ट्यवलोकनपूर्वक-तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत् ॥

अथ नमः इति अङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चारयन् अङ्कुशमुद्रया शिखां बध्नीयात् ॥

॥ तृतीयः खण्डः ॥

॥ न्यासाः ॥

मातृकान्यासः ।

अस्य श्रीमातृकासरस्वतीन्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमातृकासरस्वती देवता । हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः, स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः, विन्दुभ्यः कीलकेभ्यो नमः, मम श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः ॥

सर्वमातृकया सर्वाङ्गे अञ्जलिना त्रिर्व्यापकं कुर्यात् ॥

*७ अं कं खं गं घं ङं आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

७ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः

७ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः

७ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः

७ ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः

७ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्सुवरोम् इति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम् ।

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादयुक्कुक्षिवक्षो-
देशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ।
अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां त्रीक्षणामब्जसंस्था-
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि ॥

---

* ७=ओं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः इत्यस्य संकेतः ।

लमित्यादि पञ्चपूजां कृत्वा ।

बहिर्मातृका ।

मातृकाः त्रितारीबालापूर्विकाः 'नमः हंसः' इत्यन्ताः स्वाङ्गेषु न्यसेत् ।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः
अं नमः हंसः (शिरसि)
७ आं ,, (मुखवृत्ते)
७ इं ,, (दक्षनेत्रे)
७ ईं ,, (वामनेत्रे)
७ उं ,, (दक्षकर्णे)
७ ऊं ,, (वामकर्णे)
७ ऋं ,, (दक्षनासापुटे)
७ ॠं ,, (वामनासापुटे)
७ ऌं ,, (दक्षकपोले)
७ ॡं ,, (वामकपोले)
७ एं ,, (ऊर्ध्वोष्ठे)
७ ऐं ,, (अधरोष्ठे)
७ ओं ,, (ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ)
७ औं ,, (अधोदन्तपंक्तौ)
७ अं ,, (जिह्वाग्रे)
७ अः ,, (कण्ठे)
७ कं ,, (दक्षबाहुमूले)
७ खं ,, (दक्षकूर्परे)

ओं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः
गं नमः हंसः (दक्षमणिबन्धे)
७ घं ,, (दक्षकराङ्गुलिमूले)
७ ङं ,, (दक्षकराङ्गुल्यग्रे)
७ चं ,, (वामबाहुमूले)
७ छं ,, (वामकूर्परे)
७ जं ,, (वाममणिबन्धे)
७ झं ,, (वामकराङ्गुलिमूले)
७ ञं ,, (वामकराङ्गुल्यग्रे)
७ टं ,, (दक्षोरुमूले)
७ ठं ,, (दक्षजानुनि)
७ डं ,, (दक्षगुल्फे)
७ ढं ,, (दक्षपादाङ्गुलिमूले)
७ णं ,, (दक्षपादाङ्गुल्यग्रे)
७ तं ,, (वामोरुमूले)
७ थं ,, (वामजानुनि)
७ दं ,, (वामगुल्फे)
७ धं ,, (वामपादाङ्गुलिमूले)
७ नं ,, (वामपादाङ्गुल्यग्रे)

७ पं नमः हंसः (दक्षपार्श्वे)
७ फं ,, (वामपार्श्वे)
७ बं ,, (पृष्ठे)
७ भं ,, (नाभौ)
७ मं ,, (जठरे)
७ यं ,, (हृदये)
७ रं ,, (दक्षकक्षे)
७ लं ,, (गलपृष्ठे)
७ वं ,, (वामकक्षे)
७ शं ,, (हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं)
७ षं ,, (हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं)
७ सं ,, (हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं)
७ हं ,, (हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं)
७ ळं ,, (कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं)
७ क्षं ,, (कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं)

अन्तर्मातृका ।

७ अं नमः हंसः, आं नमः हंसः ++ अः नमः हंसः ॥
कण्ठे विशुद्धिचक्रे षोडशदलकमले ॥

७ कं नमः हंसः, खं नमः हंसः ++ ठं नमः हंसः ॥
हृदये अनाहते द्वादशदलकमले ॥

७ डं नमः हंसः, ढं नमः हंसः ++ फं नमः हंसः ॥
नाभौ मणिपूरे दशदलकमले ॥

७ वं नमः हंसः, भं नमः हंसः ++ लं नमः हंसः ॥
लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने षड्दलकमले ॥

७ वं नमः हंसः, शं नमः हंसः ++ सं नमः हंसः ॥
गुदोपरि मूलाधारे चतुर्दलकमले ॥

७ हं नमः हंसः, क्षं नमः हंसः ॥ भ्रुवोर्मध्ये आज्ञाचक्रे द्विदले ॥

७ अं नमः हंसः, आं नमः हंसः ++ क्षं नमः हंसः ॥
(५० वर्णाः) मूर्ध्नि सहस्रारे ॥

करशुद्धिन्यासः ।

४ अं नमः (दक्षकरतले)
४ आं नमः (तत्पृष्ठे)
४ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)
४ अं नमः (वामकरतले)
४ आं नमः (तत्पृष्ठे)
४ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)

४ अं नमः (मध्यमयोः)
४ आं नमः (अनामिकयोः)
४ सौः नमः (कनिष्ठिकयोः)
४ अं नमः (अङ्गुष्ठयोः)
४ आं नमः (तर्जन्योः)
४ सौः ,, (करतलकरपृष्ठयोः)

आत्मरक्षान्यासः ।

४ ऐं क्लीं सौः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष इत्यञ्जलिं हृदये दद्यात् ॥

बालषडङ्गन्यासः ।

४ ऐं हृदयाय नमः
४ क्लीं शिरसे स्वाहा
४ सौः शिखायै वषट्

४ ऐं कवचाय हुं
४ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्
४ सौः अस्त्राय फट्

चतुरासनन्यासः ।

४ ह्रीं क्लीं सौः देव्यात्मासनाय नमः (पादयोः)
४ हं ह्स्क्लीं ह्सौः श्रीचक्रासनाय नमः (जान्वोः)
४ ह्सं ह्स्क्लीं ह्सौः सर्वमन्त्रासनाय नमः (ऊरुमूले)
४ ह्रीं क्लीं ब्लें साध्यसिद्धासनाय नमः (मूलाधारे)

वाग्देवतान्यासः ।

४ अं आं ++ अः ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः (शिरसि)
४ कं खं गं घं ङं क्लह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः (ललाटे)
४ चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः (भ्रूमध्ये)
४ टं ठं डं ढं णं ग्लूं विमलावाग्देवतायै नमः (कण्ठे)
४ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः (हृदये)
४ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः (नाभौ)
४ यं रं लं वं श्म्रयूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः (गुह्ये)
४ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौळिनीवाग्देवतायै नमः (मूलाधारे)

बहिश्चक्रन्यासः ।

४ अं आं सौः चतुरश्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः (पादयोः)

४ ऐं क्लीं सौः षोडशदळपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः (जान्वोः)

४ ह्रीं क्लीं सौः अष्टदळपद्मात्मकसर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (ऊरुमूलयोः)

४ हैं ह्स्क्लीं ह्सौः चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसंप्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः (नाभौ)

४ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुळोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः (हृदये)

४ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहितनिगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः (कण्ठे)

४ ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहितरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः (मुखे)

४ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः (नेत्रयोः)

४ पञ्चदशी बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहितपरापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (मूर्ध्नि) ॥

अन्तश्चक्रन्यासः ।

४ अं आं सौः चतुरश्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः (अधःसहस्रारे)

४ ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः (अधःसहस्रारस्योपरि विषुसंज्ञे षड्दले)

४ ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (मूलाधारे)

४ हैं ह्स्क्रीं ह्सौः चतुर्दत्रारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसंप्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः (स्वाधिष्ठाने)

४ ह्सैं ह्स्क्रीं ह्स्सौः बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुळोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः (मणिपूरे)

४ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहितनिगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः (अनाहते)

४ ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहितरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः (त्रिशुद्धौ)

४ ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरास्वादेव्यै नमः (लम्बिकाग्रे)

४ पञ्चदशी बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहितपरापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (आज्ञायां)

पुनः आज्ञाचक्रस्य एकैकाङ्गुलोपरि देशे

अं आं सौः नमः (बिन्दौ)
ऐं क्लीं सौः नमः (अर्धचन्द्रे)
ह्रीं क्लीं सौः नमः (रोधिन्यां)
ह्रैं ह्क्लीं ह्सौः नमः (नादे)
ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः नमः (नादान्ते)
ह्रीं क्लीं व्लें नमः (शक्तौ)
ह्रीं श्रीं सौः नमः (व्यापिकायां)
ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः नमः (समनायां)
पञ्चदशी नमः (उन्मनायां)
षोडशी नमः (ब्रह्मरन्ध्रे महाबिन्दौ) ॥

कामेश्वर्यादिन्यासः ।

४ ऐं कएईलह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ-नवयोनिचक्रात्मक आत्मतत्व-सृष्टिकृत्य-जाग्रदवस्थाधिष्ठायकेच्छाशक्ति - वाग्भवात्मक - वागीश्वरीस्वरूप - महाकामेश्वरी-*ब्रह्मात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । (मूलाधारे)

४ क्लीं हसकहलह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ - दशारद्वयचतुर्दशारचक्रात्मक-विद्यातत्व-स्थितिकृत्य - स्वप्नदशाधिष्ठायक - ज्ञानशक्ति - कामराजात्मक - कामकलास्वरूप - महावज्रेश्वरी - विष्ण्वात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । (अनाहते)

४ सौः सकलह्रीं सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ-अष्टदलषोडशदलचतुरश्रचक्रात्मक - शिवतत्व - संहारकृत्य - सुषुप्तिदशाधिष्ठायक - क्रियाशक्ति - शक्तिबीजात्मक - परापरशक्तिस्वरूप - महाभगमालिनी†रुद्रात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । (आज्ञायां) ॥

४ ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं परब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथ - समस्तचक्रात्मक - सपरिवार-परमतत्व - सृष्टिस्थितिसंहारकृत्य - तुरीयदशाधिष्ठायकेच्छाज्ञानक्रियाशान्ताशक्ति – वाग्भवकामराजशक्तिबीजात्मक–परमशक्तिस्वरूप–श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी – परब्रह्मात्मशक्ति–श्रीपादुकां पूजयामि नमः । (ब्रह्मरन्ध्रे) ॥

---

*रुद्रात्म † ब्रह्मात्म

मूलविद्यान्यासः ।

ॐ कं नमः (शिरसि)
ॐ एं नमः (मूलाधारे)
ॐ ईं नमः (हृदि)
ॐ लं नमः (दक्षनेत्रे)
ॐ ह्रीं नमः (वामनेत्रे)
ॐ हं नमः (भ्रूमध्ये)
ॐ सं नमः (दक्षश्रोत्रे)
ॐ कं नमः (वामश्रोत्रे)
ॐ हं नमः (मुखे)
ॐ लं नमः (दक्षभुजे)
ॐ ह्रीं नमः (वामभुजे)
ॐ सं नमः (पृष्ठे)
ॐ कं नमः (दक्षजानुनि)
ॐ लं नमः (वामजानुनि)
ॐ ह्रीं नमः (नाभौ)

अथ ऋष्यादिषडङ्गन्यासं यथोपदेशं कुर्यात् ॥

षोडश्युपासकानां विशेषन्यासाः ।

श्रीषोडशाक्षरीन्यासः ।

ॐ मूलं नमः । दक्षमध्यमानामिकाभ्यां शिरसि न्यसेत् । तत्र तां दीपाभां स्रवत्सुधारसां महासौभाग्यदां ध्यात्वा—

४ मूलं नमः महासौभाग्यं मे देहि परसौभाग्यं दण्डयामि । सौभाग्यदण्डिन्या मुद्रया वामकर्णसंवेष्टनपूर्वकं आमस्तकचरणं वामाङ्गे न्यसेत् ॥

४ मूलं नमः मम शत्रून्निगृह्णामि । रिपुजिह्वाग्रया मुद्रया वामपादाधो न्यसेत् ॥

४ मूलं नमः त्रैलोक्यस्याहं कर्ता । त्रिखण्डया मुद्रया फाले न्यसेत् ॥

४ मूलं नमः । त्रिखण्डया मुद्रया मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत् ॥

४ मूलं नमः । त्रिखण्डया मुद्रया दक्षकर्णादिवामकर्णान्तं मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत् ॥

४ ओं मूलं नमः । त्रिखण्डया गळोर्ध्वमामस्तकं न्यसेत् ॥

४ ओं मूलं ओं नमः । त्रिखण्डया मुद्रया मस्तकात् पादपर्यन्तं पादादामस्तकं च न्यसेत् ॥

४ मूलं नमः । योनिमुद्रया मुखे न्यसेत् ॥

४ मूलं नमः । योनिमुद्रया ललाटे न्यसेत् ॥

संमोहनन्यासः ।

४ मूलं । मूलविद्यां स्मृत्वा तत्प्रभया जगदरुणं विभावयन् अनामिकां मूर्ध्नि त्रिः परिभ्राम्य—

४ मूलं । ब्रह्मरन्ध्रे अङ्गुष्ठानामिके न्यसेत् ॥

४ मूलं । मणिबन्धद्वये ,,

४ मूलं । फाले ,,

४ मूलं । शाक्ततिलकं धारयेत् ॥

	संहारन्यासः	सृष्टिन्यासः	स्थितिन्यासः
४ श्रीं नमः	पादयोः	ब्रह्मरन्ध्रे	अङ्गुष्ठयोः
४ ह्रीं ,,	जङ्घयोः	फाले	तर्जन्योः
४ क्लीं ,,	जान्वोः	नेत्रयोः	मध्यमयोः
४ ऐं ,,	कटिभागद्वये	कर्णयोः	अनामिकयोः
४ सौः ,,	पृष्ठे	नासापुटयोः	कनिष्ठिकयोः
४ ओं ,,	लिङ्गे	गण्डयोः	मूर्ध्नि
४ ह्रीं ,,	नाभौ	दन्तपङ्क्तौ	मुखे
४ श्रीं ,,	पार्श्वयोः	ओष्ठयोः	हृदि
४ क-५ ,,	स्तनयोः	जिह्वायां	नाभेः आपादद्वयं
४ ह-६ ,,	अंसयोः	कण्ठे	कण्ठादिनाभ्यन्तं
४ स-४ ,,	कर्णयोः	पृष्ठे	मूर्धादिकण्ठान्तं
४ सौः ,,	मूर्ध्नि	सर्वाङ्गे	पादाङ्गुष्ठयोः
४ ऐं ,,	मुखे	हृदि	पादतर्जन्योः
४ क्लीं ,,	नेत्रयोः	स्तनयोः	पादमध्यमयोः
४ ह्रीं ,,	कर्णयुगसन्निधौ	उदरे	पादानामिकयोः
४ श्रीं ,,	कर्णवेष्टनयोः	लिङ्गे	पादकनिष्ठिकयोः

न्यस्य मूलेन देहे व्यापकं कुर्यात् ।

श्रीविद्यास्तपर्यापद्धतिः ।

॥ चतुर्थः खण्डः ॥

पात्रासादनम् ।

वर्धनीकलशस्थापनम् ।

स्वपुरतः वामभागे त्रिकोणवृत्तचतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्य-मुद्रया विलिख्य—

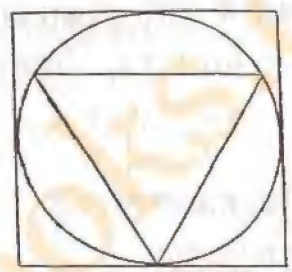

मण्डलं मूलेन समभ्यर्च्य, कर्पूरादिवासितजलपूरितं कलशं गन्धपुष्पाक्षतैः अलंकृत्य मण्डलोपरि संस्थापयेत् ॥

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः ॥

ॐ आपो वा इदँ सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वरा-

डापश्छन्दाँस्यापो ज्योतीँष्यापो यजूँष्यापः सत्यमापः
सर्वा देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं ॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि च नदा ह्रदाः ।
आयान्तु देवीपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

मूलेन अष्टवारमभिमन्त्र्य, धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, तज्जलेन पूजोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्षयेत ॥

सामान्यार्घ्यविधिः

वर्धनीपात्रस्य दक्षिणतः वर्धनीपात्रगतेन जलेन विन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया निर्माय ॥

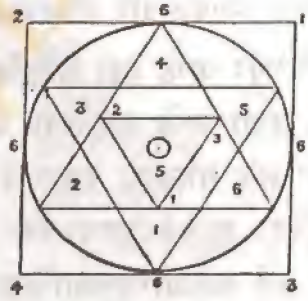

चतुरश्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च बालाषडङ्गैः संपूजयेत् । यथा—

४ ऐं हृदयाय नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
४ क्लीं शिरसे स्वाहा । शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ सौः शिखायै वषट् । शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ ऐं कवचाय हुं । कवचशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ सौः अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

४ ऐं क-५ हृदयाय नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा । शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ सौः स-४ शिखायै वषट् । शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ ऐं क-५ कवचाय हुं । कवचशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,,
सौः स-४ अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

४ ऐं क ५ नमः ४ सौः स-४ नमः
४ क्लीं ह-६ नमः ४ मूलं नमः (बिन्दौ)

ततः ४ अस्त्राय फट्—इति सामान्यार्घ्यपात्रस्य आधारं प्रक्षाल्य

४ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः ॥

इति मण्डलस्योपरि संस्थाप्य

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् । रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः इति अग्निमण्डलं विभाव्य दशवह्निकलाः संपूजयेत् । तद्यथा—

ॐ यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः
ॐ रं ऊष्मा ,,
ॐ लं ज्वलिनी ,,
ॐ वं ज्वालिनी ,,
ॐ शं विस्फुलिङ्गिनी ,,
ॐ षं सुश्री ,,
ॐ सं सुरूपा ,,
ॐ हं कपिला ,,
ॐ ळं हव्यवाहिनी ,,
ॐ क्षं कव्यवाहिनी ,,

ॐ अस्त्राय फट्—इति क्षालितं शङ्खं गृहीत्वा—

ॐ उं सूर्यमण्डलायार्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राय नमः —इति संस्थाप्य

ॐ आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवना विपश्यन् । हां हीं हूं हैं हौं हः । हमलवरयूम् । सूर्यमण्डलाय नमः—इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादशसूर्यकलाः संपूजयेत् ।

तद्यथा—

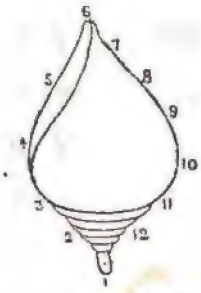

४ कं भं तपिनीकलायै नमः ४ छं दं सुषुम्नाकलायै नमः
४ खं बं तापिनी ,, ४ जं थं भोगदा ,,
४ गं फं धूम्रा ,, ४ झं तं विश्वा ,,
४ घं पं मरीची ,, ४ ञं णं बोधिनी ,,
४ ङं नं ज्वालिनी ,, ४ टं ढं धारिणी ,,
४ चं धं रुचि ,, ४ ठं डं क्षमा ,,

४ मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने महात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यामृताय नमः—इति वर्धनीसलिलमापूर्य क्षीर-बिन्दुं दत्वा

४ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं भवावाजस्य संगथे । सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः—इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः संपूजयेत् ।

तद्यथा—

४ अं अमृताकलायै	नमः	४ लं चन्द्रिकाकलायै	नमः
४ आं मानदा	,,	४ लृं कान्ति	,,
४ इं पूषा	,,	४ एं ज्योत्स्ना	,,
४ ईं तुष्टि	,,	४ ऐं श्रीं	,,
४ उं पुष्टि	,,	४ ओं प्रीति	,,
४ ऊं रति	,,	४ औं अङ्गदा	,,
४ ऋं धृति	,,	४ अं पूर्णा	,,
४ ॠं शशिनी	,,	४ अः पूर्णामृता	,,

ततस्तस्मिन्शङ्खे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च क्रमेण षडङ्गैः संपूज्य, अस्त्राय फट् इति संरक्ष्य, कवचाय हुं इति अवकुण्ठ्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य, तत्सलिलपुष्पैः पूजोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य, शङ्खजलात् किंचित् वर्धन्यां क्षिपेत् ॥

विशेषार्घ्यविधिः ।

सामान्यार्घ्योदकेन तदक्षिणतः बिन्दु–त्रिकोण–षट्कोण-वृत्त-चतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य, बिन्दौ सानुस्वारं तुरीयस्वरं विलिख्य,

चतुरश्रे प्राग्वत् षडङ्गं विन्यस्य, षट्कोणे स्वाग्रकोणादि-प्रादक्षिण्येन षडङ्गैरभ्यर्च्य, त्रिकोणे मूलत्रिखण्डैः अभ्यर्च्य, मूलेन बिन्दुं च अर्चयेत् । तद्यथा—

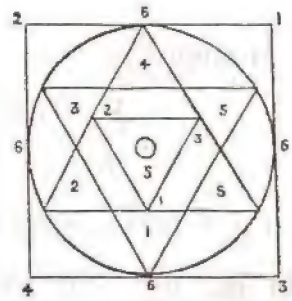

चतुरश्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च—

४ ऐं क-५ हृदयाय नमः। हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
४ ह्रीं ह-६ शिरसे स्वाहा। शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ सौः स-४ शिखायै वषट्। शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ ऐं क-५ कवचाय हुं। कवचशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ क्रौं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ सौः स-४ अस्त्राय फट्। अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

ततः षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

४ ऐं क-५ हृदयाय नमः। हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
४ क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा। शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ सौः स-४ शिखायै वषट्। शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ ऐं क-५ कवचाय हुं। कवचशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ सौः स-४ अस्त्राय फट्। अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

ततस्त्रिकोणे स्वाद्यादिप्रादक्षिण्येन—

ॐ ऐं क-५ नमः ॐ सौः स-४ नमः
ॐ क्लीं ह-६ नमः ॐ मूलं नमः (बिन्दौ)

षोडश्युपासकानां तु षोडशीमन्त्रेण सर्वत्र पूजा विधेया ।

अथ ॐ अस्त्राय फट् इति आधारं प्रक्षाल्य,

ॐ ऐं क-५ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः इति आधारं संस्थाप्य

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।
रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः—इति अग्निमण्डलं विभाव्य दश वह्निकलाः पूजयेत् । यथा—

ॐ यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः ॐ षं सुश्रीकलायै नमः
ॐ रं ऊष्मा ,, ॐ सं सुरूपा ,,
ॐ लं ज्वलिनी ,, ॐ हं कपिला ,,
ॐ वं ज्वालिनी ,, ॐ ळं हव्यवाहिनी ,,
ॐ शं विस्फुलिङ्गिनी ,, ॐ क्षं कव्यवाहिनी ,,

ततः—

ॐ अस्त्राय फट् इति अस्त्रमन्त्रेण विशेषार्घ्यपात्रं प्रक्षाल्य

ॐ क्लीं ह-६ उं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या विशेषार्घ्यपात्राय नमः इति आधारोपरि संस्थाप्य ॥

ॐ ह्रीं ऐं महालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनि ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनि सोमसूर्याग्निभक्षिणि परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विश्व विश्व पात्रं प्रतिगृह्ण प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा इति पुष्पाञ्जलिं विकीर्य ॥

ॐ आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवना विपश्यन् । ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादश सूर्यकलाः पूजयेत् । यथा—

ॐ कं भं तपिनीकलायै नमः		ॐ छं दं सुषुम्नाकलायै	नमः
ॐ खं यं तापिनी	,,	ॐ जं थं भोगदा	,,
ॐ गं फं धूम्रा	,,	ॐ झं तं विश्वा	,,
ॐ घं पं मरीचि	,,	ॐ ञं णं बोधिनी	,,
ॐ ङं नं ज्वालिनी	,,	ॐ टं डं धारिणी	,,
ॐ चं धं रुचि	,,	ॐ ठं ढं क्षमा	,,

ततः—

ॐ सौः स-ॐ मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या विशेषार्घ्यामृताय नमः—इति तत्त्वमुद्रया गृहीतनागरखण्डोपरि सविन्दु अकारादिक्षकारान्तं क्षकाराद्यकारान्तं मातृकया अर्पितेन अमृतेन आपूर्य अष्टगन्धलोलितं पुष्पं निधाय नागरखण्डं निक्षिप्य ॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम् । भवावाजस्य संगथे ॥ सां सीं सूं सैं सौं सः स म ल व र यूं सोममण्डलाय नमः—इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः पूजयेत् । यथा—

ॐ अं अमृता	कलायै नमः	ॐ लं चन्द्रिका	कलायै नमः
ॐ आं मानदा	,,	ॐ लं कान्ति	,,
ॐ इं पूषा	,,	ॐ एं ज्योत्स्ना	,,
ॐ ईं तुष्टि	,,	ॐ ऐं श्री	,,
ॐ उं पुष्टि	,,	ॐ ओं प्रीति	,,
ॐ ऊं रति	,,	ॐ औं अङ्गदा	,,
ॐ ऋं धृति	,,	ॐ अं पूर्णा	,,
ॐ ॠं शशिनी	,,	ॐ अः पूर्णामृता	,,

ततः ॐ ओं जुंसः स्वाहा इति अष्टवारमभिमन्त्र्य । तत्रार्घ्यामृते स्वाग्राद्यप्रादक्षिण्येन अकथादि-षोडशवर्णात्मक-रेखात्रयं त्रिकोणं विलिख्य, तदन्तः स्वाग्रादिकोणेषु अप्रादक्षिण्येन हळक्षान् बहिः प्रादक्षिण्येन पञ्चदशीमूलखण्डत्रयं बिन्दौ सबिन्दुतुरीयस्वरं, तद्वामदक्षयोः क्रमेण हं सः इति च विलिख्य—

ॐ हंसः नमः इति आराध्य त्रिकोणस्य परितः वृत्तं तद्बहिश्च षट्कोणं निर्माय स्वाग्रकोणादिप्रादक्षिण्येन षडङ्गमन्त्रैः षट्कोणमभ्यर्च्य

ॐ मूलं तां चिन्मयीं आनन्दलक्षणां अमृतकलशपिशितहस्त-द्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा इति सुधादेवीं समभ्यर्च्य तदर्घ्यार्थंकिंचित् पात्रान्तरेण

ॐ वषट् । इत्युद्धृत्य

ॐ स्वाहा । इति तत्रैव निक्षिप्य

ॐ हुं । इति अवकुण्ठ्य

ॐ वौषट् । इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य

ॐ फट् । इति संरक्ष्य

ॐ नमः । इति पुष्पं दत्वा

ॐ मूलेन गालिन्या निरीक्ष्य

ॐ ऐं इति योनिमुद्रया नत्वा

ॐ मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य सुधादेवीं षोडशोपचारैः संपूज्य तद्बिन्दुभिः सपर्यासाधनानि प्रोक्ष्य सर्वं विद्यामयं विभावयेत्॥

शुद्धिसंस्कारः ।

विशेषार्घ्यस्य दक्षिणतः सामान्यार्घ्योदकेन त्रिकोण-वृत्त-चतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य*

---

* अस्य चित्रं २४ पुटे द्रष्टव्यम् ।

ॐ ओं ह्रीं ह्रौं नमःशिवाय इति मण्डलं अभ्यर्च्य शुद्धिपात्रं संस्थाप्य

ॐ ओं श्रीं पशुं हुं फट् इति अष्टवारमभिमन्त्र्य

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।
भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्

ॐ ईशानस्सर्वविद्यानां ईश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवों ॥ इत्यभ्यर्च्य शुद्धिपात्रस्य अधः त्रिकोण-वृत्त-चतुरश्रात्मकं मण्डलद्वयं विलिख्य । प्रथममण्डले—

ॐ हंसश्शिवस्सोहं, सोहं हंसश्शिवः, हंसश्शिवस्सोहं हंसः, ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं नमः । इत्यभ्यर्च्य, गुरुपात्रं निधाय द्वितीयमण्डले—

ॐ हंसः नमः । इत्यभ्यर्च्य आत्मपात्रं निधाय विशेषार्घ्यपात्रं करेण संस्पृश्य वक्ष्यमाणचतुर्नवतिमन्त्रैः अभिमन्त्रयेत्—

वह्निकलाः ।

४ यं धूम्रार्चिषे नमः
४ रं ऊष्मायै ,,
४ लं ज्वलिन्यै ,,
४ वं ज्वालिन्यै ,,
४ शं विस्फुलिङ्गिन्यै ,,
४ षं सुश्रियै नमः
४ मं सुरूपायै ,,
४ हं कपिलायै ,,
४ ळं हव्यवाहिन्यै ,,
४ क्षं कव्यवाहिन्यै ,,

सूर्यकलाः ।

४ कं भं तपिन्यै नमः
४ खं वं तापिन्यै ,,
४ गं फं धूम्रायै ,,
४ घं पं मरीच्यै ,,
४ ङं नं ज्वालिन्यै ,,
४ चं धं रुच्यै ,,
४ छं दं सुषुम्नायै नमः
४ जं थं भोगदायै ,,
४ झं तं विश्वायै ,,
४ ञं णं बोधिन्यै ,,
४ टं ढं धारिण्यै ,,
४ ठं डं क्षमायै ,,

सोमकलाः ।

४ अं अमृतायै नमः
४ आं मानदायै ,,
४ इं पूषायै ,,
४ ईं तुष्ट्यै ,,
४ उं पुष्ट्यै ,,
४ ऊं रत्यै ,,
४ ऋं धृत्यै ,,
४ ॠं शशिन्यै ,,
४ ऌं चन्द्रिकायै नमः
४ ॡं कान्त्यै ,,
४ एं ज्योत्स्नायै ,,
४ ऐं श्रियै ,,
४ ओं प्रीत्यै ,,
४ औं अङ्गदायै ,,
४ अं पूर्णायै ,,
४ अः पूर्णामृतायै ,,

ब्रह्मकलाः ।

४ कं सृष्ट्यै नमः ४ चं लक्ष्म्यै नमः
४ खं ऋद्ध्यै ,, ४ छं द्युत्यै ,,
४ गं स्मृत्यै ,, ४ जं स्थिरायै ,,
४ घं मेधायै ,, ४ झं स्थित्यै ,,
४ ङं कान्त्यै ,, ४ ञं सिद्ध्यै ,,

४ हँसश्शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥ नमः ॥

विष्णुकलाः ।

४ टं जरायै नमः ४ तं कामिकायै नमः
४ ठं पालिन्यै ,, ४ थं वरदायै ,,
४ डं शान्त्यै ,, ४ दं ह्लादिन्यै ,,
४ ढं ईश्वर्यै ,, ४ धं प्रीत्यै ,,
४ णं रत्यै ,, ४ नं दीर्घायै ,,

४ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याय मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥ नमः ॥

रुद्रकलाः ।

४ पं तीक्ष्णायै नमः ४ बं भयायै नमः
४ फं रौद्र्यै ,, ४ भं निद्रायै ,,

४ मं तन्द्यै नमः ४ लं क्रियायै नमः
४ यं क्षुधायै ,, ४ वं उद्वायै ,,
४ रं क्रोधिन्यै ,, ४ शं मृत्यवे ,,

४ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ नमः ॥

ईश्वरकलाः ।

४ षं पीतायै नमः ४ हं अरुणायै नमः
४ सं श्वेतायै ,, ४ क्षं असितायै ,,

४ तद्विष्णोः परमं पदँ सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाँसः समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ नमः ॥

सदाशिवकलाः ।

४ अं निवृत्त्यै नमः ४ लं परायै नमः
४ आं प्रतिष्ठायै ,, ४ लं सूक्ष्मायै ,,
४ इं विद्यायै ,, ४ एं सूक्ष्मामृतायै ,,
४ ईं शान्त्यै ,, ४ ऐं ज्ञानायै ,,
४ उं इन्धिकायै ,, ४ ओं ज्ञानामृतायै ,,
४ ऊं दीपिकायै ,, ४ औं आप्यायिन्यै ,,
४ ऋं रेचिकायै ,, ४ अं व्यापिन्यै ,,
४ ॠं मोचिकायै ,, ४ अः व्योमरूपायै ,,

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति ।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा ॥ नमः ॥

ॐ मूलम् नमः ॥

ॐ अखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि ।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुलनायिके ॥ नमः ॥

ॐ अकुलस्थामृताकारे शुद्धज्ञानकरे परे ।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि ॥ नमः ॥

ॐ तद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि ।
भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु ॥ नमः ॥

ॐ ऐं क्लूं ह्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि
अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ॥ नमः ॥

ॐ ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय महा-
क्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौंः स्हौंः ॥नमः॥

एवमभिमन्त्रितविशेषार्घ्यामृतात् किंचित् गुरुपात्रे उद्धृत्य गुरुत्रयं यजेत् । गुरुः सन्निहितो यदि तस्मै निवेदयेत् ।

पुनः आत्मपात्रे किंचिद्विशेषार्घ्यामृतमुद्धृत्य, मूलाधारे वालाग्रमात्रं अनादिवासनारूपेन्धनप्रज्वलितं कुण्डलिन्यधिष्ठितं चिदग्निमण्डलं ध्यात्वा

ॐ कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलाय नमः । इति मनसा संपूज्य

ॐ मूलं पुण्यं जुहोमि स्वाहा
ॐ मूलं पापं ,,
ॐ मूलं कृत्यं ,,
ॐ मूलं अकृत्यं ,,
ॐ मूलं सङ्कल्पं ,,
ॐ मूलं विकल्पं ,,
ॐ मूलं धर्मं ,,
ॐ मूलं अधर्मं ,,

ॐ मूलं अधर्मं जुहोमि वौषट्

ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा —इति पूर्णाहुतिं विभाव्य

ॐ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि
ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि ।
योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि
अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि ।
अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ॥

इति आत्मनः कुण्डलिनीरूपे चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात् । विशेषार्घ्यपात्रात्किंचित्क्षीरं कारणकलशे निक्षिपेत् ॥

॥ पञ्चमः खण्डः ॥

अन्तर्यागादि लयाङ्गपूजान्तम् ।

अन्तर्यागः ।

एवं निरस्तनिखिलदोषः सन् आमूलाधारादाब्रह्मबिलं विलसन्तीं विसतन्तुतनीयसीं विद्युत्पुञ्जपिञ्जरां विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशां परःशतसुधामयूखशीतलतेजोदण्डरूपां परचितिं भावयेत् ।

ततस्तत्तेजसि—

मूलाधारादधोगते अकुलसहस्रारे भूपुरस्थितदेवीः,
तदुपरि स्थिते विपुवनाम्नि रक्तवर्णषड्दलपद्मे षोडशदलदेवीः,
मूलाधारे चतुर्दले अष्टदलदेवीः,
स्वाधिष्ठाने षड्दले चतुर्दशारदेवीः,
मणिपूरके दशदले बहिर्दशारदेवीः,
अनाहते द्वादशदले अन्तर्दशारदेवीः,
विशुद्धौ षोडशदले अष्टारदेवीः,
लम्बिकाग्रे आयुधदेवीः त्रिकोणदेवीश्च,
आज्ञायां द्विदले विन्दुगतदेवीं च,

ध्यात्वा तत्तदग्रे जीवात्मानं पुष्पपूरिताञ्जलि निविष्टं भावयन् तत्तत्पूजामन्त्रैः तत्तदावरणपूजां, देव्या वामहस्ते पूजासमर्पणं च विभाव्य, श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यां सचक्रावयवानि आवरणानि विलीनानि विभाव्य, मध्यत्र्यश्राग्रे (देवीपादमूले) स्थितजीवात्मना सहितां श्रीदेवीं हृदयं नीत्वा स्वाञ्जलिगतकुसुमैः तत्र

तां संपूज्य, ततः अकुलेन्दुगलितामृतधारारूपिणीः चन्दन-कुसुमधूपदीपनैवेद्यशालिकरकमलाः पीतासितश्यामरक्तशुक्लवर्णाः धरणिवियदनिलानलजललक्षणपञ्चभूतमयीः सर्वावयवसुन्दरीः पञ्चदेवताः देव्यग्रे संस्मृत्य, ताभिः चन्दनाद्युपचारान् श्रीदेव्यै समर्पितान् स्मारं स्मारं पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिता भावयेत् ॥

ततो देव्या नासायां गन्धदेवता, श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वायां नैवेद्यदेवता इति क्रमेण विलीनाः विभाव्य मूलविद्यां उच्चरन् जीवात्मानं श्रीदेवीपादार-विन्दमूले लीनं विभाव्य, हृदयगतदेवीरूपं मध्यत्र्यश्रसहितं तत्रैव केवलं ज्योतिर्मयतामापन्नं ध्यायन् संक्षोभिण्यादिनवमुद्राः* भावयित्वा, क्षणं न किंचिदपि चिन्तयेत् ॥

अथ देव्या प्रेरितमानसः सन् पुनः प्रकृतिमालम्ब्य तेजो-रूपेण परिणतां परमशिवज्योतिरभिन्नप्रकाशात्मिकां वियदादि-विश्वकारणां सर्वावभासिकां स्वात्माभिन्नां परचितिं सुषुम्नापथेन उद्गमय्य विनिर्भिन्नविधिविलविलसदमलदशशतदलकमलात् वह-न्नासापुटेन निर्गतां त्रिखण्डमुद्रामण्डितशिखण्डे कुसुमगर्भितेऽञ्जलौ समानीय—

ॐ ह्रीं श्रीं सौः श्रीललितायाः अमृतचैतन्यमूर्तिं कल्पयामि नमः ॥

---

* षोडश्युपासकानां तु दशमुद्राः ।

ध्यानम् ।

ध्यायेन्निरामयं वस्तु जगत्त्रयविमोहिनीम् ।
अशेषव्यवहाराणां स्वामिनीं संविदं पराम् ॥

उद्यत्सूर्यसहस्राभां दाडिमीकुसुमप्रभाम् ।
जपाकुसुमसंकाशां पद्मरागमणिप्रभाम् ॥

स्फुरत्पद्मनिभां तप्तकाञ्चनाभां सुरेश्वरीम् ।
रक्तोत्पलदलाकारपादपल्लवराजिताम् ॥

अनर्घरत्नखचितमञ्जीरचरणद्वयाम् ।
पादाङ्गुलीयकक्षिप्तरत्नतेजोविराजिताम् ॥

कदलीललितस्तम्भसुकुमारोरुकोमलाम् ।
नितम्बविम्बविलसद्रक्तवस्त्रपरिष्कृताम् ॥

मेखलाबद्धमाणिक्यकिङ्किणीनादविभ्रमाम् ।
अलक्ष्यमध्यमां निम्ननाभिं शातोदरीं पराम् ॥

रोमराजिलतोद्भूतमहाकुचफलान्विताम् ।
सुवृत्तनिबिडोत्तुङ्गकुचमण्डलराजिताम् ॥

अनर्घमौक्तिकस्फारहारभारविराजिताम् ।
नवरत्नप्रभाराजद्वैवेयकविभूषणाम् ॥

श्रुतिभूषामनोरम्यकपोलस्थलमञ्जुलाम् ।

उद्यदादित्यसंकाशताटङ्कसुमुखप्रभाम् ॥
पूर्णचन्द्रमुखीं पद्मवदनां वरनासिकाम् ।
स्फुरन्मदनकोदण्डसुभ्रुवं पद्मलोचनाम् ॥
ललाटपट्टसंराजद्रत्नाढ्यतिलकाङ्किताम् ।
मुक्तामाणिक्यघटितमुकुटस्थलकिङ्किणीम् ॥
स्फुरच्चन्द्रकलाराजन्मुकुटां च त्रिलोचनाम् ।
प्रवालवल्लीविलसद्बाहुवल्लीचतुष्टयाम् ॥
इक्षुकोदण्डपुष्पेषुपाशाङ्कुशचतुर्भुजाम् ।
सर्वदेवमयीमम्बां सर्वसौभाग्यसुन्दरीम् ॥
सर्वतीर्थमयीं दिव्यां सर्वकामप्रपूरिणीम् ।
सर्वमन्त्रमयीं नित्यां सर्वागमविशारदाम् ॥
सर्वक्षेत्रमयीं देवीं सर्वविद्यामयीं शिवाम् ।
सर्वयागमयीं विद्यां सर्वदेवस्वरूपिणीम् ॥
सर्वशास्त्रमयीं नित्यां सर्वागमनमस्कृताम् ।
सर्वाम्नायमयीं देवीं सर्वायतनसेविताम् ॥
सर्वानन्दमयीं ज्ञानगह्वरां संविदं पराम् ।
एवं ध्यायेत्परामम्बां सच्चिदानन्दरूपिणीम् ॥
इति निजलीलाङ्गीकृतललितवपुषं विचिन्त्य ॥

आवाहनम् ।

ॐ ह्सैं ह्स्क्लरीं ह्सौः

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे ।
सर्वभूतहिते मातः एह्येहि परमेश्वरि ॥
एह्येहि देवदेवेशि त्रिपुरे देवपूजिते ।
परामृतप्रिये शीघ्रं सान्निध्यं कुरु सिद्धिदे ॥
देवेशि भक्तसुलभे सर्वावरणसंवृते ।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव ॥

बिन्दुपीठगतनिर्विशेषब्रह्मात्मकश्रीमत्कामेश्वराङ्के श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकामावाहयामि नमः ॥

नित्यादिकमणिमान्तं श्रीकामेश्वराङ्कोपवेशनं विना श्रीदेवी-समानाकृतिवेषभूषणायुधशक्तिचक्रं ओघत्रयगुरुमण्डलं च वक्ष्यमाणेषु आवरणेषु निजस्वामिन्यभिमुखोपविष्टमवमृश्य

ॐ मूलं आवाहिता भव ॥
ॐ ,, संस्थापिता भव ॥
ॐ ,, सन्निधापिता भव ॥
ॐ ,, संनिरुद्धा भव ॥
ॐ ,, संमुखी भव ॥
ॐ ,, अवकुण्ठिता भव ॥

इति मन्त्रैरावाहनादिषण्मुद्राः प्रदर्श्य, वन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत् । अथ हृदयादिषडङ्गमुद्राः बाणाद्यायुधमुद्राश्च तत्तन्मन्त्रपूर्वकं प्रदर्शयेत् ॥

चतुःषष्ट्युपचारपूजा ।

अथ श्रीपरदेवतायाः चतुष्षष्ट्युपचारानाचरेत् । तेष्वशक्तानां भावनया सामान्यार्घ्यादिकान् किञ्चिदम्बाचरणाम्बुजेऽर्पणबुद्ध्या पात्रान्तरे निक्षिपेत् । पुष्पाक्षतान्वाऽर्पयेत् ॥

४ श्रीललितायै पाद्यं कल्पयामि नमः

,, आभरणावरोपणं कल्पयामि नमः
,, सुगन्धितैलाभ्यङ्गं ,,
,, मज्जनशालाप्रवेशनं ,,
,, मज्जनशालामणिपीठोपवेशनं ,,
,, दिव्यस्नानीयोद्वर्तनं ,,
,, उष्णोदकस्नानं ,,
,, *कनककलशच्युतसकलतीर्थाभिषेकं ,,
,, धौतवस्त्रपरिमार्जनं ,,
,, अरुणदुकूलपरिधानं ,,
,, अरुणकुचोत्तरीयं ,,
,, आलेपमण्टपप्रवेशनं ,,
,, आलेपमण्टपमणिपीठोपवेशनं ,,
,, चन्दनागरुकुङ्कुममृगमदकर्पूरकस्तूरीगोरोचनादि दिव्यगन्धसर्वाङ्गीणविलेपनं कल्पयामि नमः

* इह त्रिपुरा-देवी-भावना-बह्वृचोपनिषद्भिः श्रीसूक्त-दुर्गासूक्ताभ्यां च अभिषेकः कार्यः ॥

ॐ श्रीललितायै केशभारस्य कालागरुधूपं कल्पयामि नमः
,, मल्लिकामालतीजातीचम्पकाशोकशतपत्र-
पूगकुब्जीपुन्नागकल्हारमुख्यसर्वर्तुकुसुम-
मालाः कल्पयामि नमः
,, भूषणमण्टपप्रवेशनं कल्पयामि नमः
,, भूषणमण्टपमणिपीठोपवेशनं ,,
,, नवमणिमकुटं ,,
,, चन्द्रशकलं ,,
,, सीमन्तसिन्दूरं ,,
,, तिलकरत्नं ,,
,, कालाञ्जनं ,,
,, वाळीयुगलं ,,
,, मणिकुण्डलयुगलं ,,
,, नासाभरणं ,,
,, अधरयावकं ,,
,, प्रथमभूषणं (माङ्गल्यसूत्रं) ,,
,, कनकचिन्ताकं ,,
,, पदकं ,,
,, महापदकं ,,
,, मुक्तावलिं ,,

४	श्रीललितायै	एकावलिं	कल्पयामि नमः
	,,	छन्नवीरं	,,
	,,	केयूरयुगलचतुष्टयं	,,
	,,	वलयावलिं	,,
	,,	ऊर्मिकावलिं	,,
	,,	काञ्चीदाम	,,
	,,	कटिसूत्रं	,,
	,,	सौभाग्याभरणं	,,
	,,	पादकटकं	,,
	,,	रत्ननूपुरं	,,
	,,	पादाङ्गुलीयकं	,,
	,,	एककरे पाशं	,,
	,,	अन्यकरेऽङ्कुशं	,,
	,,	इतरकरे पुण्ड्रेक्षुचापं	,,
	,,	अपरकरे पुष्पबाणान्	,,
	,,	श्रीमन्माणिक्यपादुके	,,
	,,	स्वसमानवेषाभिरावरणदेवताभिः सह महाचक्राधिरोहणं	,,
	,,	कामेश्वराङ्कपर्यङ्कोपवेशनं	,,
	,,	अमृतासवचषकं	,,

ॐ श्रीललितायै आचमनीयं कल्पयामि नमः
,, कर्पूरवीटिकां ,,
,, आनन्दोल्लासविलासहासं ,,

अथ मङ्गळारार्तिकम्—कलधौतादिभाजने कुङ्कुमचन्दनादिलिखितस्याष्टषट्चतुर्दळाद्यन्यतमस्य कमलस्य चन्द्राकारचरुगोलकवत्यां चणकमुद्गजुषि वा कर्णिकायां दळेषु च पयःशर्करापिण्डीकृतयवगोधूमादिपिष्टोपादानकानि त्रिकोणशिरस्क-डमर्वाकृतीनि चतुरङ्गुलोत्सेधानि घृतपाचितानि नवसप्तपञ्चान्यतमसंख्यानि दीपपात्राणि निधाय तेषु गोघृतं प्रत्येकं कर्षप्रमितं आपूर्य कर्पूरगर्भितां वर्तिकां हृल्लेखया प्रज्वाल्य—

ॐ श्रीं ह्रीं ग्लूं स्त्रूं ग्लूं प्लूं ग्लूं ह्रीं श्रीं—इति नवाक्षर्या रत्नेश्वरीविद्यया अभिमन्त्र्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाभ्यर्च्य—

ॐ जगद्धनिमन्त्रमातः स्वाहा—इति मन्त्रपूर्वकं गन्धाक्षतादिना घण्टां संपूज्य तां वादयन् जानुचुम्बितभूतलः तत्पात्रं आमस्तकमुद्धृत्य—

ॐ श्रीललितायै मङ्गळारार्तिकं कल्पयामि नमः ।
समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवि नवात्मिके ।
आरार्तिकमिदं तुभ्यं गृहाण मम सिद्धये ॥

इति नववारं श्रीदेव्या आचूडं आचरणाब्जं परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत् ।

ॐ श्रीललितायै छत्रं कल्पयामि नमः
" चामरयुगलं "
" दर्पणं "
" तालवृन्तं "
" गन्धं "
" पुष्पं "
" धूपं "
" दीपं "

अथ नैवेद्यम्—देव्याः पुरतः स्वदक्षिणे चतुरश्रमण्डलं निर्माय तत्र आधारोपरि नैवेद्यं निधाय मूलेन प्रोक्ष्य वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य मूलेन त्रिवारं अभिमन्त्र्य आपोशनं दत्वा—

ॐ श्रीललितायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः ॥

अथ श्रीललितायै पानीयं उत्तरापोशनं हस्तप्रक्षालनं गण्डूषं आचमनीयं ताम्बूलं च कल्पयेत् ।

ॐ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्रों ह्स्रफ्रें ह्सौः ऐं—इति सर्वसंक्षोभिण्यादिनवमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥

षोडश्युपासकास्तु ह्स्त्रैं ह्स्क्लीं ह्सौः इति त्रिखण्डामांपे प्रदर्शयेयुः ॥

चतुरायतनपूजा ।

नैर्ऋते च गणेशानं सूर्यं वायव्य एव च ।
ईशाने विष्णुमाग्नेये शिवं चैव प्रपूजयेत् ॥

गणपतिपूजा ।

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजाचक्राब्जपाशोत्पल-
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्करास्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥

श्रीमहागणपतिं ध्यायामि । आवाहयामि । महागणपतये नमः । आसनं समर्पयामि । पाद्यं समर्पयामि । अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । वस्त्रालंकारान् समर्पयामि । यज्ञोपवीतं समर्पयामि । गन्धान् धारयामि ।

ओं सुमुखाय नमः	ओं धूमकेतवे नमः
एकदन्ताय ,,	गणाध्यक्षाय ,,
कपिलाय ,,	फालचन्द्राय ,,
गजकर्णकाय ,,	गजाननाय ,,
लम्बोदराय ,,	वक्रतुण्डाय ,,
विकटाय ,,	शूर्पकर्णाय ,,
विघ्नराजाय ,,	हेरम्बाय ,,
गणाधिपाय ,,	स्कन्दपूर्वजाय ,,

महागणपतये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि ॥ ४ गणपतिमूलं महागणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः संतर्पयेत् ॥

महागणपतये नमः । धूपमाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्यं समर्पयामि । मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं ताम्बूलं च समर्पयामि । कर्पूरनीराजनं दर्शयामि ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् । महागणपतये नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि । प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि । समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि । अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीमहागणपतिः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु ॥

सूर्यपूजा ।

अध्यारूढं रथेन्द्रे वसुदळसहिते वृत्तषट्कोणमध्ये
भास्वन्तं भास्करन्तं शुभदमसिगदाशङ्खचक्राब्जयुग्मम् ।
वेदाकारं त्रिमूर्तिं त्रिविधनयगुणं विश्वरूपं पुराणं
ह्रांह्रींह्रूंकाररूपं सुरनुतमनिशं भावयेद्वृत्तसरोजे ॥

आदित्यं ध्यायामि । आवाहयामि । आदित्याय नमः आसनं समर्पयामि । पाद्यं समर्पयामि । अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । वस्त्रालंकारान् समर्पयामि । यज्ञोपवीतं समर्पयामि । गन्धान् धारयामि ।

ओं मित्राय नमः ओं सूर्याय नमः
रवये ,, भानवे ,,

ओं खगाय नमः ओं आदित्याय नमः
पूष्णे ,, सवित्रे ,,
हिरण्यगर्भाय ,, अर्काय ,,
मरीचये ,, भास्कराय ,,
आदित्याय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि ॥
४ आदित्यमूलं आदित्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
इति त्रिः संतर्पयेत् ॥

आदित्याय नमः । धूपमाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्यं समर्पयामि । मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्त-प्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं च समर्पयामि । कर्पूरनीराजनं दर्शयामि ॥

ॐ भास्कराय विद्महे महाद्युतिकराय धीमहि तन्नो आदित्यः प्रचोदयात् । आदित्याय नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि । प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि । समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि । अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः आदित्यः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु ॥

विष्णुपूजा ।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाकारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

श्रीमहाविष्णुं ध्यायामि । आवाहयामि । महाविष्णवे नमः आसनं समर्पयामि । पाद्यं समर्पयामि । अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । वस्त्रालंकारान् समर्पयामि । यज्ञोपवीतं समर्पयामि । गन्धान् धारयामि ।

ओं केशवाय नमः ओं त्रिविक्रमाय नमः
नारायणाय ,, वामनाय ,,
माधवाय ,, श्रीधराय ,,
गोविन्दाय ,, हृषीकेशाय ,,
विष्णवे ,, पद्मनाभाय ,,
मधुसूदनाय ,, दामोदराय ,,

महाविष्णवे नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि ॥ ४ अष्टाक्षरी महाविष्णुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः संतर्पयेत् ॥

महाविष्णवे नमः । धूपमाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्यं समर्पयामि । मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं च समर्पयामि । कर्पूरनीराजनं दर्शयामि ॥

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् । महाविष्णवे नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि । प्रद-

क्षिणनमस्कारान् समर्पयामि । समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि । अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीमहाविष्णुः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु ॥

शिवपूजा ।

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारुपद्मासनस्थं
वामाङ्कारूढगौरीनिबिडकुचभराभोगगाढोपगूढम् ।
सर्वालंकारकान्तं वरपरशुमृगाभीतिहस्तं त्रिणेत्रं
वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदनगुहाश्लिष्टपार्श्वं महेशम् ॥

साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि । आवाहयामि । परमेश्वराय नमः आसनं समर्पयामि । पाद्यं समर्पयामि । अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । वस्त्रालंकारान् समर्पयामि । यज्ञोपवीतं समर्पयामि । गन्धान् धारयामि ।

ओं भवाय देवाय नमः		ओं रुद्राय देवाय नमः	
शर्वाय	,,	उग्राय	,,
ईशानाय	,,	भीमाय	,,
पशुपतये	,,	महते	,,

परमेश्वराय नमः । नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि । ४ पञ्चाक्षरी साम्बपरमेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः संतर्पयेत् ॥

परमेश्वराय नमः । धूपमाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्यं समर्पयामि । मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं च समर्पयामि । कर्पूरनीराजनं दर्शयामि ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । परमेश्वराय नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि । प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि । समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि । अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः साम्बपरमेश्वरः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुरायतनार्चनम् ॥

इति सामान्यार्घ्योदकेन देव्या वामहस्ते पूजां समर्पयेत् ॥

लयाङ्गपूजा ।

ॐ मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी (पराभट्टारिका) श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति बिन्दौ देवीं त्रिः संतर्पयेत् ।

षडङ्गार्चनम् ।

देव्यङ्के (बिन्दौ) अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च—

४ ऐं क-५ हृदयाय नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां पू० त० नमः
४ क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा । शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ सौः स:४ शिखायै वषट् । शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,,

४ ह्रैं क-५ कवचाय हुं । कवचशक्तिश्रीपादुकां पू० त० नमः
४ ह्रीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,,
४ सौः स-४ अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

षोडश्युपासकानां तु षोडशीपदकूटेन षडङ्गपूजा ।

नित्यादेवीयजनम् ।

४ अः पञ्चदशी अः श्रीललितामहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति बिन्दौ महानित्यां त्रिर्यजेत् ॥

अथ तत्तत्तिथिनित्यामन्त्रेण तत्तत्तिथिनित्यां बिन्दौ त्रिर्यजेत् ।

ततः पूर्ववत् महानित्यां त्रिर्यजेत् ॥

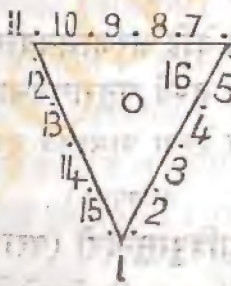

ततो मध्यत्रिकोणस्य दक्षिणरेखायां वारुण्याद्याग्नेयान्तं क्रमेण अं आं इं ईं उं इति, पूर्वरेखायां आग्नेयादीशानान्तं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं इति, उत्तररेखायां ईशानादिवारुण्यन्तं एं ऐं ओं औं अं इति, पञ्चपञ्चस्वरान् विभाज्य तेषु वामावर्तेन कामेश्वर्यादिनित्या यजेत् । बिन्दौ षोडशं स्वरं (अः) विचिन्त्य महानित्यां यजेत् । यथा—

श्रु०

१ ४ अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरी-
नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ३०

२ ४ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भग-
गुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे
नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे
रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भग-
विच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं
भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे
वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्या-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ -१४

३ ४ इं ओं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्नानित्या-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ -१३

४ ४ ईं ओं क्रों ध्रों क्रौं झौं छ्रौं त्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्या-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ -१२

५ ४ उं ओं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्याश्रीपा-
दुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ -११

६ ४ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्या-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ -१०

७ ४ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्याश्रीपादुकां पूज-
यामि तर्पयामि नमः ॥ -९

६ ४ ऋं ओं ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ऋं त्वरितानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ - ७

७ ४ लं ऐं क्लीं सौः लं कुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ - ६ ७

१० ४ लृं ह्स्क्लर्ड्रें ह्स्क्लर्डीं ह्स्क्लर्ड्रौः लृं नित्यानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ - ६

११ ४ एं ह्रीं फ्रें स्त्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताकानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५

१२ ४ ऐं भ्रय्यूं ऐं विजयानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ - ४

१३ ४ ओं स्त्रौं ओं सर्वमङ्गळानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ - ३

१४ ४ औं ओं नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ - २

१५ ४ अं च्क्रौं अं चित्रानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ - १ अष्टम

ॐ अः पञ्चदशी अः ललितामहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

एवं शुक्लपक्षे । कृष्णपक्षे तु चित्राद्याः कामेश्वर्यन्ताः स्वस्व-मन्त्रेण तथैव संपूज्य विन्दौ महानित्यां यजेत् ॥

गुरुमण्डलार्चनम् ।

ॐ परंघेभ्यो नमः । इति विन्दुत्रिकोणयोः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा विन्दौ महापादुकां यजेत् ॥ यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्या-नन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

त्रिकोणे वामरेखायां—

ॐ उड्डीशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ प्रकाशानन्दनाथ ,,
ॐ विमर्शानन्दनाथ ,,
ॐ आनन्दानन्दनाथ ,,

पूर्वरेखायां—

ॐ षष्ठीशानन्दनाथ ,,
ॐ ज्ञानानन्दनाथ ,,
ॐ सत्यानन्दनाथ ,,
ॐ पूर्णानन्दनाथ ,,

दक्षरेखायां—

४ मित्रेशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ स्वभावानन्दनाथ ,,

४ प्रतिभानन्दनाथ ,,

४ सुभगानन्दनाथ ,,

ततो देव्याः पश्चात् मूलत्रिकोणपूर्व-रेखायाः तदव्यवहितप्रागग्रत्रिकोणपश्चिम-रेखायाश्चान्तरे विमलाजयिन्योर्मध्ये अरुणा-वाग्देवतासन्निधौ दक्षिणोत्तरायतं रेखात्रयं विभाव्य दक्षिणसंस्थाक्रमेण दिव्यसिद्धमान-वाख्यमोघत्रयं मुनिवेदवसुसङ्ख्यं समर्चे-येत् । यथा—

३ ———

२ ———

१ ———

४ दिव्यौघसिद्धौघमानवौघेभ्यो नमः—इति पुष्पाञ्जलिः ।

दिव्यौघः । प्रथमरेखायां—

४ परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ परशिवानन्दनाथ ,,

४ पराशक्त्यम्बा ,,

४ कौलेश्वरानन्दनाथ ,,

४ शुक्रदेव्यम्बा ,,

४ कुलेश्वरानन्दनाथ ,,

४ कामेश्वर्यम्बा ,,

सिद्धौघः । द्वितीयरेखायां—

४ भोगानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४ क्लिन्नानन्दनाथ ,,
४ समयानन्दनाथ ,,
४ सहजानन्दनाथ ,,

मानवौघः । तृतीयरेखायां—

४ गगनानन्दनाथ ,,
४ विश्वानन्दनाथ ,,
४ विमलानन्दनाथ ,,
४ मदनानन्दनाथ ,,
४ भुवनानन्दनाथ ,,
४ लीलाम्बा ,,
४ स्वात्मानन्दनाथ ,,
४ प्रियानन्दनाथ ,,

ततः प्रथमरेखायां परमेष्ठिगुरुमन्त्रेण परमेष्ठिगुरुं, द्वितीयरेखायां परमगुरुमन्त्रेण परमगुरुं, तृतीयरेखायां स्वगुरुमन्त्रेण स्वगुरुं च यजेत् ॥

—०—

॥ षष्ठः खण्डः ॥

आवरणपूजा ।

४ संविन्मये परे देवि परामृतरुचिप्रिये ।
अनुज्ञां त्रिपुरे देहि परिवारार्चनाय मे ॥

प्रथमावरणम् ।

४ अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः । इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥

क्रमेण शुक्लारुणपीतवर्णरेखा-
त्रयस्य लकारप्रकृतिकपृथिव्या-
त्मकस्य चतुरश्रस्य प्रवेश-
रीत्या प्रथमरेखायां पश्चिमादि-
द्वारचतुष्टयदक्षिणभागेषु वाय्वा-
दिकोणेषु च पश्चिमनैर्ऋतयोः
पूर्वेशानयोश्च मध्ये क्रमेण—

४ अं अणिमासिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४ लं लघिमासिद्धि ,,
४ मं महिमासिद्धि ,,
४ ईं ईशित्वसिद्धि ,,
४ वं वशित्वसिद्धि ,,
४ पं प्राकाम्यसिद्धि ,,

ॐ भुं भुक्तिसिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ इं इच्छासिद्धि ,,
ॐ पं प्राप्तिसिद्धि ,,
ॐ सं सर्वकामसिद्धि ,,

इति स्वस्य तत्तदाभिमुख्यं भावयन् पूजयेत् । एवमुत्तरत्रापि ॥

अथ चतुरश्रमध्यरेखायां प्रागुक्तद्वारवामभागेषु कोणेषु च क्रमेण—

ॐ आं ब्राह्मीमातृ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ईं माहेश्वरीमातृ ,,
ॐ ऊं कौमारीमातृ ,,
ॐ ऋं वैष्णवीमातृ ,,
ॐ लृं वाराहीमातृ ,,
ॐ ऐं माहेन्द्रीमातृ ,,
ॐ औं चामुण्डामातृ ,,
ॐ अः महालक्ष्मीमातृ ,,

ततः चतुरश्रान्त्यरेखायां प्रथमरेखोक्तक्रमेण—

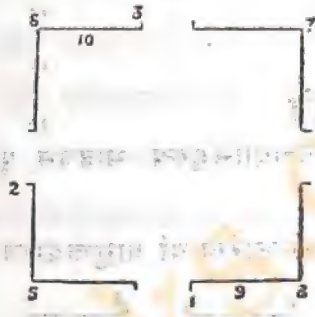

४ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्ति श्रीपादुकां पू० त० नमः
४ द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्ति ,,
४ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्ति ,,
४ ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्ति ,,
४ सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्ति ,,
४ क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्ति ,,
४ ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्ति ,,
४ ह्सौः सर्ववीजमुद्राशक्ति ,,
४ ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्ति ,,
४ ह्स्त्रैं ह्स्क्लरीं ह्सौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
४ एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयः

सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

अणिमासिद्धेः पुरतः —

४ अं आं मौः त्रिपुराचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः

४ अं *अणिमासिद्धि ,,

४ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्ति ,,

४ द्रां—इति सर्वसंक्षोभिणीमुद्रां प्रदर्श्य—

४ मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिवारं संतर्प्य—

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य—

४ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

इति सामान्यार्घोदकेन देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य—

४ प्रकटयोगिनीमयूखायै प्रथमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

* चक्रेश्वर्यो दक्षे सिद्धिः, वामे मुद्रा । एवमुत्तरत्र ।

द्वितीयावरणम् ।

ॐ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

श्वेतवर्णे सकारप्रकृतिक-
षोडशकलात्मके चन्द्रस्वरूपे
स्रवदमृतरसे षोडशदलकमले
देव्यग्रदलमारभ्य वामावर्तेन–

ॐ अं कामाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पू० त० नमः
ॐ आं बुद्ध्याकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
ॐ इं अहङ्काराकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
ॐ ईं शब्दाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
ॐ उं स्पर्शाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
ॐ ऊं रूपाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
ॐ ऋं रसाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
ॐ ॠं गन्धाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
ॐ ऌं चित्ताकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
ॐ ॡं धैर्याकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
ॐ एं स्मृत्याकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
ॐ ऐं नामाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
ॐ ओं बीजाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,

४ ऑं आत्माकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पू० त० नमः
४ अं अमृताकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
४ अः शरीराकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
४ एताः गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः
सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः
संपूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

कामाकर्षिण्याः पुरतः —

४ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः
४ लं लघिमासिद्धि ,,
४ द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्ति ,,
४ द्रीं—इति सर्वविद्राविणीमुद्रां प्रदर्श्य—
मूलेन देवीं त्रिः संतर्प्य—

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य—

४ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

इति पूजां समर्प्य—

४ गुप्तयोगिनीमयूखायै द्वितीयावरणदेवतासहितायै श्रीललिता-
महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

तृतीयावरणम् ।

ॐ ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

हकारप्रकृतिक – अष्टमूर्त्यात्मकशिवाभिन्ने जपाकुसुमामित्रे अष्टपत्रे श्रीदेव्याः पृष्ठदलमारभ्य पूर्वादिदिक्षु आग्नेयादिविदिक्षु च क्रमेण––

ॐ कं खं गं घं ङं अनङ्गकुसुमादेवी श्रीपादुकां पू० त० नमः
ॐ चं छं जं झं ञं अनङ्गमेखलादेवी ,,
ॐ टं ठं डं ढं णं अनङ्गमदनादेवी ,,
ॐ तं थं दं धं नं अनङ्गमदनातुरादेवी ,,
ॐ पं फं बं भं मं अनङ्गरेखादेवी ,,
ॐ यं रं लं वं अनङ्गवेगिनीदेवी ,,
ॐ शं षं सं हं अनङ्गाङ्कुशादेवी ,,
ॐ ळं क्षं अनङ्गमालिनीदेवी ,,

ॐ एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

अनङ्गकुसुमायाः पुरतः—

ॐ ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ मं महिमासिद्धि ,,

ॐ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्ति ,,

ॐ क्लीं—इति सर्वाकर्षिणीमुद्रां प्रदर्श्य—

मूलेन देवीं त्रिः संतर्प्य—

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

इति पूजां समर्प्य—

ॐ गुप्ततरयोगिनीमयूखायै तृतीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत्॥

तुरीयावरणम् ।

४ ह्रैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

ईकारप्रकृतिकत्रतुर्दशभुव
नात्मकमहामायारूपे दाडिमी-
प्रसूनसहोदरे चतुर्दशारे देव्य-
ग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—

४ कं सर्वसंक्षोभिणीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
४ खं सर्वविद्राविणीशक्ति ,,
४ गं सर्वाकर्षिणीशक्ति ,,
४ घं सर्वाह्लादिनीशक्ति ,,
४ ङं सर्वसंमोहिनीशक्ति ,,
४ चं सर्वस्तम्भिनीशक्ति ,,
४ छं सर्वजृम्भिणीशक्ति ,,
४ जं सर्ववशंकरीशक्ति ,,
४ झं सर्वरञ्जिनीशक्ति ,,
४ ञं सर्वोन्मादिनीशक्ति ,,
४ टं सर्वार्थसाधिनीशक्ति ,,
४ ठं सर्वसंपत्तिपूरणीशक्ति ,,

ॐ ईं सर्वमन्त्रमयीशक्ति श्रीपादुकां पू० त० नमः
ॐ ईं सर्वद्वन्द्वक्षयंकरीशक्ति ,,
ॐ एताः संप्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः समिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः) । सर्वसंक्षोभिण्याः पुरतः—
ॐ ह्रैं ह्रीं ह्रसौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरी
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ईं ईशित्वसिद्धि ,,
ॐ ब्लूं सर्ववशंकरीमुद्राशक्ति ,,
ॐ ब्लूं—इति सर्ववशंकरीमुद्रां प्रदर्श्य—
मूलेन देवीं त्रिः संतर्प्य —
धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य—
ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम् ॥
इति पूजां समर्प्य—
ॐ संप्रदाययोगिनीमयूखायै तुरीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।
इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

पञ्चमावरणम् ।

ॐ ह्सैं ह्स्क्रीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

एकारप्रकृतिकदशावतारात्मकविष्णुस्वरूपे प्रभापराभूत-सिन्दूरे बहिर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—

ॐ णं सर्वसिद्धिप्रदादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ तं सर्वसंपत्प्रदादेवी ,,
ॐ थं सर्वप्रियंकरीदेवी ,,
ॐ दं सर्वमङ्गळकारिणीदेवी ,,
ॐ धं सर्वकामप्रदादेवी ,,
ॐ नं सर्वदुःखविमोचिनीदेवी ,,
ॐ पं सर्वमृत्युप्रशमनीदेवी ,,
ॐ फं सर्वविघ्ननिवारिणीदेवी ,,
ॐ बं सर्वाङ्गसुन्दरीदेवी ,,
ॐ भं सर्वसौभाग्यदायिनीदेवी ,,

ॐ एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे ससुद्राः समिद्रयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवागः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

सर्वसिद्धिप्रदायाः पुरतः —

ॐ ह्रसैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरी
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ वं वशित्वसिद्धि ,,

ॐ सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्ति ,,

ॐ सः—इति सर्वोन्मादिनीमुद्रां प्रदर्श्य—

मूलेन देवीं त्रिः संतर्प्य—

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

इति पूजां समर्प्य—

ॐ कुलोत्तीर्णयोगिनीमयूखायै पञ्चमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

षडावरणम् ।

ॐ ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

रेफप्रकृतिक–दशकलात्मकवैश्वानराभिन्ने जपासुमनःसदृशरे अन्तर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—

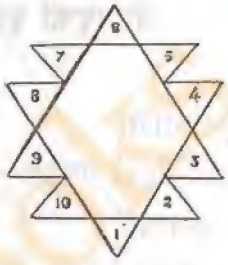

ॐ मं सर्वज्ञादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ यं सर्वशक्तिदेवी ,,
ॐ रं सर्वैश्वर्यप्रदादेवी ,,
ॐ लं सर्वज्ञानमयीदेवी ,,
ॐ वं सर्वव्याधिविनाशिनीदेवी ,,
ॐ शं सर्वाधारस्वरूपादेवी ,,
ॐ षं सर्वपापहरादेवी ,,
ॐ सं सर्वानन्दमयीदेवी ,,
ॐ हं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवी ,,
ॐ क्षं सर्वेप्सितफलप्रदादेवी ,,

ॐ एताः निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

सर्वज्ञायाः पुरतः —

ॐ ह्रीं क्लीं क्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ पं प्राकाम्यसिद्धि ,,

ॐ क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्ति ,,

ॐ क्रों—इति सर्वमहाङ्कुशामुद्रां प्रदर्श्य—

मूलेन देवीं त्रिः संतर्प्य—

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठाख्यावरणार्चनम् ॥

इति पूजां समर्प्य—

ॐ निगर्भयोगिनीमयूखायै षष्ठावरणदेवतासहितायै श्रीललिता-महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

सप्तमावरणम् ।

४ ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

ककारप्रकृतिक-अष्टमूर्त्यात्मक-कामेश्वरस्वरूपे पद्मरागरुचिरे अष्टारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—

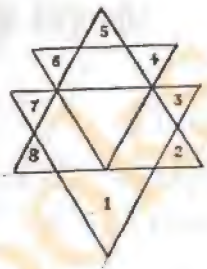

४ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः
व्लूं वशिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पू० त० नमः

४ कं खं गं घं ङं क्लह्रीं कामेश्वरी वाग्देवता ,,
४ चं छं जं झं ञं न्लीं मोदिनी वाग्देवता ,,
४ टं ठं डं ढं णं ग्लूं विमला वाग्देवता ,,
४ तं थं दं धं नं ज्रीं अरुणा वाग्देवता ,,
४ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनी वाग्देवता ,,
४ यं रं लं वं ह्स्र्य्रूं सर्वेश्वरी वाग्देवता ,,
४ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवता ,,

ॐ एताः रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

वशिन्याः पुरतः—

ॐ ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरी
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ भुं भुक्तिसिद्धि ,,

ॐ ह्स्रैं सर्वखेचरीमुद्राशक्ति ,,

ॐ ह्स्रैं—इति सर्वखेचरीमुद्रां प्रदर्श्य—

मूलेन देवीं त्रिः संतर्प्य—

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

इति पूजां समर्प्य—

ॐ रहस्ययोगिनीमयूखायै सप्तमावरणदेवतासहितायै श्रीललिता-महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

अष्टमावरणम् ।

मध्यत्र्यश्रस्य बहिः पश्चिमादिदिक्षु प्रादक्षिण्येन—

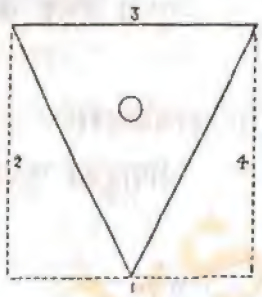

४ यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यः कामेश्वरीकामेश्वरबाणेभ्यो नमः । बाणशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ थं धं सर्वसंमोहनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरधनुर्भ्यां नमः । धनुःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ह्रीं आं सर्ववशीकरणाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्यां नमः । पाशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ क्रों क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्यां नमः । अङ्कुशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

इत्यायुधार्चनं विदध्यात् । ततः—

४ ह्सैं ह्स्क्लरीं ह्सौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

नादप्रकृतिकगुणत्रयप्रधानत्रिशक्तिरूपरेखात्रयात्मके बन्धूकपुष्प-बन्धुकिरणे त्रिकोणे अग्रदक्षवामकोणेषु बिन्दौ च क्रमेण—

ॐ ऐं क-५ अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ-नवयोनिचक्रात्मक-आत्मतत्व-सृष्टिकृत्य-जाग्रदशाधिष्ठायक--इच्छाशक्ति-वाग्भवात्मक - वागीश्वर्गस्वरूप *रुद्रात्मशक्ति-महाकामेश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्लीं ह-६ सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ-दशारद्वयचतुर्दशारचक्रात्मक-विद्यातत्व - स्थितिकृत्य - स्वप्नदशाधिष्ठायक-ज्ञानशक्ति - कामराजात्मक-कामकलास्वरूप-विष्ण्वात्मशक्ति-महावज्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ सौः स-४ सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ - अष्टदळ-षोडशदळचतुरश्रचक्रात्मक - शिवतत्व - संहारकृत्य - सुषुप्ति-दशाधिष्ठायक - क्रियाशक्ति - शक्तिबीजात्मक - परापरशक्ति-स्वरूप † ब्रह्मात्मशक्ति-महाभगमालिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ऐं क-५ क्लीं ह-६ सौः स-४ परब्रह्मचक्रे महोड्याण-पीठे चर्यानन्दनाथ - समस्तचक्रात्मक - सपरिवारपरमतत्व-सृष्टिस्थितिसंहारकृत्य-तुरीयदशाधिष्ठायक-इच्छाज्ञानक्रिया-शान्ताशक्ति - वाग्भवकामराजशक्तिबीजात्मक - परमशक्ति-

* ब्रह्मात्म † रुद्रात्म

स्वरूप – परब्रह्मात्मशक्ति – श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ एताः अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

महाकामेश्वर्याः पुरतः —

४ ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ इं इच्छासिद्धि ,,

४ ह्सौः सर्वबीजमुद्राशक्ति ,,

४ ह्सौः — इति सर्वबीजमुद्रां प्रदर्श्य—

मूलेन देवीं त्रिः संतर्प्य—

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य—

४ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम् ॥

इति पूजां समर्प्य—

४ अतिरहस्ययोगिनीमयूखायै अष्टमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

नवमावरणम् ।

४ क-१५ सर्वानन्दमयचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

विन्द्वभिन्नपरब्रह्मात्मके विन्दुचक्रे—

४ मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः संतर्प्य ।

एषा परापरातिरहस्ययोगिनी सर्वानन्दमये चक्रे समुद्रा ससिद्धिः सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा सर्वोपचारैः संपूजिता संतर्पिता संतुष्टास्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

महात्रिपुरसुन्दर्याः पुरतः —

४ पञ्चदशी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

४ पं प्राप्तिसिद्धि ,,

४ ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्ति ,,

४ ऐं—इति सर्वयोनिमुद्रां प्रदर्श्य*

---

* षोडश्युपासकानामेव—

४ हसकल हसकहल सकलह्रीं तुरीयाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः संतर्प्य—

४ सर्वानन्दमये चक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथात्मकतुरीयातीतदशाधिष्ठायक—शान्त्यतीतकलात्मक—प्रकाशविमर्शसामरस्यात्मक परब्रह्मस्वरूपिणी परामृतशक्तिः सर्वमन्त्रेश्वरी

ॐ मूलेन देवीं त्रिः संतर्प्य
धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य—
ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ।
इति पूजां समर्प्य—
ॐ परापरातिरहस्ययोगिनीमयूखायै नवमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।
इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

सर्वपीठेश्वरी सर्वयोगेश्वरी सर्ववागीश्वरी सर्वसिद्धेश्वरी सर्ववीरेश्वरी सकलजगदुत्पत्तिमातृका सचक्रा सदेवता सासना सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा सचक्रेशिका परया अपरया परापरया सपर्यया सर्वोपचारैः संपूजिता संतर्पिता संतुष्टास्तु नमः । इति समष्टयञ्जलिं विधाय ।
ॐ सं सर्वकामसिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डमुद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डमुद्रां प्रदर्श्य ।

पञ्चपञ्चिकापूजा ।

विन्दुचक्रोपरि सिंहासनाकारेण पीठभावनां कृत्वा मध्ये वाय्वीशानाग्निनिर्ऋतिकोणेषु च क्रमेण यजेत् ॥

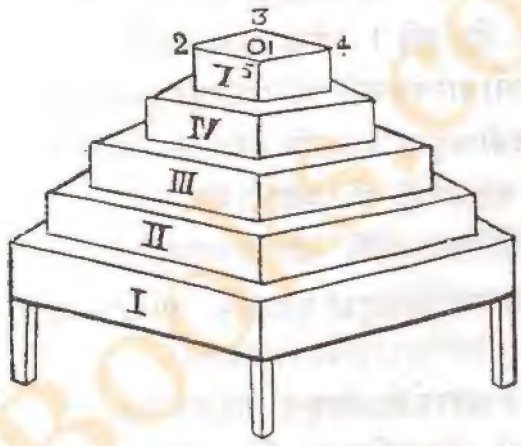

I पञ्च लक्ष्म्यः ।

४ मूलं । श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । श्रीविद्यालक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (मध्ये)

४ श्रीं । श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । लक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (वायव्ये)

४ ओं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ओं महालक्ष्म्यै नमः । श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । महालक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः । (ईशाने)

४ श्रीं ह्रीं क्लीं । श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । त्रिशक्तिलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (आग्नेये)

४ श्रीं सहकलह्रीं श्रीं । महालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । सर्वसाम्राज्यलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (नैर्ऋते)

II पञ्च कोशाम्बाः ।

४ मूलं । महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । श्रीविद्याकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (मध्ये)

४ ओं ह्रीं हंसस्सोहं स्वाहा । महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । परंज्योतिःकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (वायव्ये)

४ ओं हंसः । महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । परानिष्कळाकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (ईशाने)

४ हंसः । महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । अजपाकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (आग्नेये)

४ अं आं + कं क्षं । महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । मातृकाकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (नैर्ऋते)

III पञ्च कल्पलताः ।

४ मूलं । महाकल्पलतेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । श्रीविद्याकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (मध्ये)

४ ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं । महाकल्पलतेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । (पञ्चकामेश्वरी) त्वरिताकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः । (वायव्ये)

४ ओं ह्रीं ह्रां हसकलह्रीं ओं सरस्वत्यै नमः ह्स्रैं । महाकल्पलतेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । पारिजातेश्वरीकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (ईशाने)

४ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः । महाकल्पलतेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । (कुमारी) त्रिपुटाकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः । (आग्नेये)

४ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः । महाकल्पलतेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । पञ्चबाणेश्वरीकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः । (नैर्ऋते)

IV पञ्च कामदुघाः ।

४ मूलं । महाकामदुघेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । श्रीविद्याकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (मध्ये)

४ ओं ह्रीं हंसः जुं संजीवनि जीवं प्राणग्रन्थिस्थं कुरु कुरु स्वाहा । महाकामदुघेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । अमृतपीठेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (वायव्ये)

४ ऐं वद वद वाग्वादिनि ह्स्रैं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु कुरु ह्स्क्लीं सौः ओं मोक्षं कुरु कुरु ह्स्रौः । महाकामदुघेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । सुधासूकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (ईशाने)

४ ऐं ब्लूं क्ष्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा । महाकामदुघेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । अमृतेश्वरीकामदुघाम्बाश्री पू० त० नमः ।.(आग्नेये)

४ ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ओं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा । महाकामदुघेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । अन्नपूर्णाकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः । (नैर्ऋते)

V पञ्च रत्नाम्बाः ।

४ मूले । महाग्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । श्रीविद्यारत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (मध्ये)

४ ज्ञ्रीं महाचण्डे तेजःसंकर्षिणि कालमन्थाने हः । महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । सिद्धलक्ष्मीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (वायव्ये)

४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ओं नमो भगवति राजमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखरञ्जनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशंकरि सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि सर्वदुष्टमृगवशंकरि सर्वसत्ववशंकरि सर्वलोकवशंकरि त्रैलोक्यं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं । महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । राजमातङ्गीश्वरीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (ईशाने)

४ श्रीं ह्रीं श्रीं । महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौ-

भाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । भुवनेश्वरीरत्नाम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (आग्नेये)

४ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्ताळि वार्ताळि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भे जम्भिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नमः सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्त-चक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा ! महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डिता-सनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । वाराहीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः । (नैर्ऋते)

षड्दर्शनविद्या ।

४ तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा । तारादेवताधिष्ठितबौद्धदर्शन-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ गायत्री परोरजसि सावदों । ब्रह्मदेवताधिष्ठितवैदिकदर्शन-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ओं ह्रीं नमश्शिवाय । रुद्रदेवताधिष्ठितशैवदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ओं ह्रीं घृणिस्सूर्य आदित्यों । सूर्यदेवताधिष्ठितसौरदर्शन-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ओं नमो नारायणाय । विष्णुदेवताधिष्ठितवैष्णवदर्शन-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ओं श्रीं ह्रीं श्रीं भुवनेश्वरीदेवताधिष्ठितशाक्तदर्शनश्री-पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

षडाधारपूजा ।

४ सां हंसः मूलाधाराधिष्ठानदेवतायै साकिनीसहितगणनाथ-स्वरूपिण्यै नमः । गणनाथस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूज-यामि तर्पयामि नमः ।

४ कां सोहं स्वाधिष्ठानाधिष्ठानदेवतायै काकिनीसहितब्रह्मस्वरू-पिण्यै नमः । ब्रह्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः ।

४ लां हंसस्सोहं मणिपूरकाधिष्ठानदेवतायै लाकिनीसहित-विष्णुस्वरूपिण्यै नमः । विष्णुस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ रां हंसश्शिवस्सोहं अनाहताधिष्ठानदेवतायै राकिणीसहित-पदाशिवस्वरूपिण्यै नमः । सदाशिवस्वरूपिण्यम्बाश्रीपा-दुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ डां.सोहं हंसश्शिवः विशुद्ध्यधिष्ठानदेवतायै डाकिनीसहित जीवेश्वरस्वरूपिण्यै नमः । जीवेश्वरस्वरूपिण्यम्बाश्रीपा-दुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ हां हंसश्शिवस्सोहं सोहं हंसश्शिवः आज्ञाधिष्ठानदेवतायै

हाकिनीसहितपरमात्मस्वरूपिण्यै नमः । परमात्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

आम्नायसमष्टिपूजा ।

४ ह्सैं ह्स्क्लरीं ह्सौः । पूर्वाम्नायसमयविद्येश्वर्युन्मोदिनीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ मूलं गुरुत्रयगणपतिपीठत्रयसहितायै शुद्धविद्यादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तचतुर्विंशतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै कामगिरिपीठस्थितायै पूर्वाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः । श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पू० त० नमः ।

४ ओं ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले ह्सौः । दक्षिणाम्नायसमयविद्येश्वरीभोगिनीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः ।

४ मूलं भैरवाष्टकनवसिद्धौघवटुकत्रयपदयुगसहितायै सौभाग्यविद्यादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तत्रिंशत्सहस्रदेवतापरिसेवितायै पूर्णगिरिपीठस्थितायै दक्षिणाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः । श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ह्सैं ह्स्रीं ह्सौः ह्स्रफ्रें भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं ह्स्रफ्रें अघोरमुखि ह्रां ह्रीं किणि किणि विच्चे ह्सौः ह्स्रफ्रें ह्सौः । पश्चिमाम्नायसमयविद्येश्वरीकुब्जिकादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ मूलं नवदूतीमण्डलत्रयदशवीरचतुःषष्टिसिद्धनाथसहितायै लोपामुद्रादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै जालन्धरपीठस्थितायै पश्चिमाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्री पू० त० नमः।

४ ह्स्ख्फ्रें महाचण्डयोगीश्वरि काळिके फट्। उत्तराम्नायसमयविद्येश्वरीकाळिकादेव्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

४ मूलं नवमुद्रापञ्चवीरावळीसहितायै तुर्याम्बादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै ओड्याणपीठस्थितायै उत्तराम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।*

ततः अङ्गप्रत्यङ्गदेवतार्चनं कृत्वा, मूलेन देवीं त्रिः संतर्पयेत् ॥

---

* षोडश्युपासकानाम् ।

४ मखपरयघच् महिचनडयङ् गंशफर् ऊर्ध्वाम्नायसमयविद्येश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ मूलं श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजगुरुमण्डलसहितायै पराम्बादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्ताशीतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै शाम्भवपीठस्थितायै ऊर्ध्वाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्री पू० त० नमः।

४ भगवति विच्चे महामाये मातङ्गिनि ब्लूं अनुत्तरवाग्वादिनि ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौः। अनुत्तरशाङ्कर्यम्बाश्रीपादुकां

दण्डनाथानामानि ।

ओं पञ्चम्यै	नमः	ओं पोत्रिण्यै	नमः
दण्डनाथायै	,,	शिवायै	,,
संकेतायै	,,	वार्ताळ्यै	,,
समयेश्वर्यै	,,	महासेनायै	,,
समयसंकेतायै	,,	आज्ञाचक्रेश्वर्यै	,,
वाराह्यै	,,	अरिघ्न्यै	,,

मन्त्रिणीनामानि ।

ओं संगीतयोगिन्यै	नमः	ओं वीणावत्यै	नमः
श्यामायै	,,	वैणिक्यै	,,
श्यामळायै	,,	मुद्रिण्यै	,,
मन्त्रनायिकायै	,,	प्रियकप्रियायै	,,
मन्त्रिण्यै	,,	नीपप्रियायै	,,
सचिवेशान्यै	,,	कदम्बेश्यै	,,
प्रधानेश्यै	,,	कदम्ववनवासिन्यै	,,
शुकप्रियायै	,,	सदामदायै	,,

पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ मूलं परिपूर्णानन्दनाथादिनवनाथसहितायै चतुर्दशमूलविद्यादिश्रीपूर्तिविद्यान्तानन्तदेवतापरिसेवितायै अनुत्तराम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पू० त० नमः ।

ललितानामानि ।

ओं सिंहासनेश्यै	नमः	ओं कामेश्यै	नमः
ललितायै	,,	परमेश्वर्यै	,,
महाराज्ञ्यै	,,	कामराजप्रियायै	,,
वराङ्कुशायै	,,	कामकोटिकायै	,,
चापिन्यै	,,	चक्रवर्तिन्यै	,,
त्रिपुरायै	,,	महाविद्यायै	,,
महात्रिपुरसुन्दर्यै	,,	शिवायै	,,
सुन्दरीचक्रनाथायै	,,	अनङ्गवल्लभायै	,,
सम्राज्ञ्यै	,,	सर्वपाटलायै	,,
चक्रिण्यै	,,	कुलनाथायै	,,
चक्रेश्वर्यै	,,	आम्नायनाथायै	,,
महादेव्यै	,,	सर्वाम्नायनिवासिन्यै	,,

ओं शृङ्गारनायिकायै नमः

अथ यथावकाशं सहस्रनामावल्यादिना अर्चनं कुर्यात् ।

धूपः ।

४ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामस्त्वं देवानामसि सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं वह्नितमं देवहूतममहूतमसि हविर्धानं दृꣳहस्व माह्वार्मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रेक्षे माभेर्मा संविक्था मा त्वा हिꣳसिषम् ।

ओं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः धूपमाघ्रापयामि । धूपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ॥

दीपः ।

४ उद्दीप्यस्व जातवेदोपघ्नन्निर्ऋतिं मम । पशूꣳश्च मह्यमावह जीवनं च दिशो दिश । मा नो हिꣳसीर्जातवेदो गामश्वं पुरुषं जगत् । अविभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय ।

ओं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः दीपं दर्शयामि । दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ॥

ततः सर्वसंक्षोभिण्यादिमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥

नैवेद्यम् ।

श्रीदेव्यग्रे चतुरश्रमण्डलं सामान्यार्घ्योदकेन विधाय तत्र आधारोपरि स्थापितं सौवर्णराौप्यकांस्यादिस्थालीचषकभरितं भक्ष्यभोज्यचोष्यलेह्यपेयात्मकं रसवद्व्यञ्जनमञ्जुलं प्राज्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमुग्धं यथासंभवं वा नैवेद्यं विधाय—

मूलेन निरीक्ष्य—

४ ऐं ह्रः —इति अस्त्रेण प्रोक्ष्य—

४ ओं जुं सः वौषट् — इति सप्तवारमभिमन्त्रितजलेन प्रोक्ष्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्य—

४ यं — इति वायुबीजेनाधोमुखवामकरेण सप्तवारं जपन् तद्गतदोषान् संशोष्य—

ॐ रं — इति वह्निबीजेन अधोमुखदक्षकरेण संदह्य—

ॐ वं — इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य—

ॐ मूलेन विशेषार्घ्यबिन्दुभिः प्रोक्ष्य—

ॐ मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य—

ॐ ओं क्लीं कामदुघे अमोघे वरदे विश्वे स्फुर स्फुर श्रीं परश्रीं ।

इति कामधेनुविद्यया धेनुमुद्राऽमृतीकृत्य—

देव्यै पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं दत्वा—

ॐ मूलेन देवीं त्रिः संतर्प्य—

पात्रान्तरे विशेषार्घ्यं किंचिद्गृहीत्वा वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन्

ॐ मूलं साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः — इति नैवेद्यपरिसरे संस्थाप्य । कृताञ्जलिः

ॐ हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् ।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि ॥
शर्करापायसापूपघृतव्यञ्जनसंयुतम् ।
विचित्ररुचि नैवेद्यं हृद्यमावेदयाम्यहम् ॥ इति निवेद्य

ॐ भूर्भुवस्सुवः + परिषिञ्चामि । अमृतोपस्तरणमसि—इति देव्यै आपोशनं दत्वा—

वामकरेण ग्रासमुद्रां दर्शयन्, दक्षकरेण प्राणादिपञ्चमुद्राप्रदर्शनपूर्वकं पञ्च प्राणाहुतीः कल्पयेत् । यथा—

ॐ ऐं प्राणाय स्वाहा ।
ॐ क्लीं अपानाय स्वाहा ।
ॐ सौः व्यानाय स्वाहा ।
ॐ ऐं क्लीं उदानाय स्वाहा ।
ॐ ऐं क्लीं सौः समानाय स्वाहा ।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।
ॐ ऐं क-५ आत्मतत्वव्यापिका श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु ।
ॐ क्लीं ह-६ विद्यातत्वव्यापिका ,,
ॐ सौः स-४ शिवतत्वव्यापिका ,,
ॐ ऐं क्लीं सौः मूलं सर्वतत्वव्यापिका ,,

इति किंचित्किंचित् सामान्यार्घ्योदकं दद्यात् ।

ॐ चित्पात्रे सद्धविस्सौख्यं विविधानेकभक्षणम् ।
निवेदयामि ते देवि सानुगायै जुषाण तत् ॥

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधु नक्तमुतोषसि मधुमत्पार्थिवँ रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः । इति पुष्पाञ्जलिं विन्यस्य नैवेद्यजातं तादात्म्येन समर्पयेत् ।

ॐ नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरं परम् ।
अन्यानिवेदितं शुद्धं प्रकृतिस्थं सुशीतलम् ।
अमृतानन्दसंपूर्णं गृहाण जलमुत्तमम् ॥

ॐ श्रीललितायै अमृतपानीयं समर्पयामि।

मुद्रानां परदेवतां ध्यायेत्।

ॐ ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्ता-
द्दिव्याकल्पैर्ललितरमणी वीज्यमाना सखीभिः।
नर्मक्रीडाप्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान्
भुङ्क्ते पात्रे कनकखचिते षड्रसान् लोकधात्री॥

देवीं भुक्तवतीं सुतृप्तां ध्यात्वा—

ॐ ओं अमृतापिधानमसि। इत्युत्तरापोशनं दत्वा—

ॐ श्रीललितायै हस्तप्रक्षालनं गण्डूषं पादप्रक्षालनं आचमनीयं कल्पयामि नमः।

ताम्रबलिपात्रे निवेदनसामग्रीः किंचित्किंचिदादाय निवेदनपात्राणि निर्गमय्य तत्स्थलं अस्त्रेण शोधयेत्।

ताम्बूलं—ॐ वनस्पतिदेवत्याय ताम्बूलाय नमः। इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य—

ॐ तमालदलकर्पूरपूगभागसमन्वितम्।
एलापत्रसुसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ओं श्रीललितायै ताम्बूलं कल्पयामि नमः॥

कुलदीपः।

ॐ मूलं अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम्।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये॥

कर्पूरनीराजनम् ।

४ सोमो वा एतस्य राज्यमादत्ते । यो राजा सन्राज्यो वा सोमेन यजते । देवसुवामेतानि हवींष्यपि भवन्ति । एतावन्तो वै देवानाँ सवाः । त एवास्मै सवान् प्रयच्छन्ति । त एनं पुनः सुवन्ते राज्याय । देवसू राजा भवति ॥

४ साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठिकं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यम् ॥ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः । तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ।समेकामान्कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥

मन्त्रपुष्पम् ।

योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति । चन्द्रमा वा अपां पुष्पम् । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । अग्निर्वा अपामायतनम् । आ० । योऽग्नेरायतनं वेद । आ० । आपो वा अग्नेरायतनम् । आं० । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आ० । वायुर्वा अपामायतनम् । आ० । यो वायोरायतनं वेद । आ० । आपो वै वायोरायतनम् । आ० । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आ० । असौ वै तपन्नपा-

मायतनम् । आ० । योऽमुष्य तपत आयतनं वेद । आ० । आपो वा अमुष्य तपत आयतनम् । आ० । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आ० । चन्द्रमा वा अपामायतनम् । आ० । यश्चन्द्रमस आयतनं वेद । आ० । आपो वै चन्द्रमस आयतनम् । आ० । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आ० । नक्षत्राणि वा अपामायतनम् । आ० । यो नक्षत्राणामायतनं वेद । आ० । आपो वै नक्षत्राणामायतनम् । आ० । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आ० । पर्जन्यो वा अपामायतनम् । आ० । यः पर्जन्यस्यायतनं वेद । आ० । आपो वै पर्जन्यस्यायतनम् । आ० । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आ० । संवत्सरो वा अपामायतनम् । आ० । यस्संवत्सरस्यायतनं वेद । आ० । आपो वै संवत्सरस्यायतनम् । आ० । य एवं वेद । योऽप्सु नावं प्रतिष्ठितां वेद । प्रत्येव तिष्ठति ॥

शिवे शिवसुशीतलामृततरङ्गगन्धोल्लस-
न्नवावरणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि ।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीरनित्योज्ज्वले
षडङ्गपरिवारिते कलित एष पुष्पाञ्जलिः ॥
समस्तमुनियक्षकिंपुरुषसिद्धविद्याधर-
गुह्यासुरसुराप्सरोगणमुखैर्गणैः सेविते ।

निवृत्तितिलकाम्बरप्रकृतिशान्तिविद्याकला-
कलापमधुराकृते कलित एष पुष्पाञ्जलिः ॥

त्रिवेदकृतविग्रहे त्रिविधकृत्यसंधायिनि
त्रिरूपसमवायिनि त्रिपुरमार्गसंचारिणि ।
त्रिलोचनकुटुम्बिनि त्रिगुणसंविदुद्यत्पदे
त्रयि त्रिपुरसुन्दरि त्रिजगदीशि पुष्पाञ्जलिः ॥

पुरन्दरजलाधिपान्तककुबेररक्षोहर-
प्रभञ्जनधनञ्जयप्रभृतिवन्दनानन्दिते ।
प्रवालपदपीठिकानिकटनित्यवर्तिस्वभू-
विरिञ्चिविहितस्तुते विहित एष पुष्पाञ्जलिः ॥

यदानतिबलादलंकृतिरुदेति विद्यावय-
स्तपोद्रविणसौरभाकृतिकवित्वसंपन्मयी ।
जरामरणजन्मजं भयमपैति तस्यै समा-
हिताखिलसमीहितप्रसवभूमि तुभ्यं नमः ॥

निरावरणसंविदुद्गमपरास्तभेदोल्लस-
त्पदास्पदचिदेकतावरशरीरिणि स्वैरिणि ।
रसायनतरङ्गिणीरुचितरङ्गसंचारिणि
प्रकामपरिपूरणि प्रसृत एष पुष्पाञ्जलिः ॥

तरङ्गयति संपदं तदनु संहरत्यापदं
सुखं वितरति श्रियं परिचिनोति हन्ति द्विषः ।

क्षिणोति दुरितानि यत्प्रणतिरम्ब तस्यै सदा
शिवंकरि शिवे परे शिवपुरन्ध्रि तुभ्यं नमः ॥

त्वमेव जननी पिता त्वमथ बान्धवस्त्वं सखा
त्वमायुरपरं त्वमाभरणमात्मनस्त्वं कला ।
त्वमेव वपुषः स्थितिस्त्वमखिलायतिस्त्वं गुरुः
प्रसीद परमेश्वरि प्रणतिपात्रि तुभ्यं नमः ॥

कञ्जासनादिसुरवृन्दलसत्किरीट-
कोटिप्रघर्षणसमुज्ज्वलदङ्घ्रिपीठे ।
त्वामेव यामि शरणं विगतान्यभावं
दीनं विलोकय दयार्द्रविलोचनेन ॥

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः । पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

॥ सप्तमः खण्डः ॥

कामकलाध्यानम् ।

स्थूलं—बिन्दुना मुखं बिन्दुद्वयेन कुचौ सपरार्धेन योनिः इति कामकलां ध्यायेत् ॥

महामन्त्रराजान्तबीजं पराख्यं
स्वतो न्यस्तबिन्दु स्वयं न्यस्तहार्दम् ।
भव[illegible]वक्षोजगुह्याभिधानं
स्व[illegible]कृ[illegible]चयेत्स त्वमेव ॥

तथान्ये विकल्पेषु निर्विण्णचित्ता-
स्तदेकं समाधाय बिन्दुत्रयं ते ।
परानन्दसंधानसिन्धौ निमग्नाः
पुनर्गर्भरन्ध्रं न पश्यन्ति धीराः ॥

सूक्ष्मं—

कामकला=क्+अ+अ, म्+अ ; क्+अ, ल्+अ+अ ।

कामशब्दविमर्शः —

क्=माया, अ = तदवच्छिन्नं चैतन्यमीश्वरः, अ=शुद्धचैतन्यं; म्=अविद्या, अ=तदवच्छिन्नं चैतन्यं जीवः । मायावच्छिन्नचैतन्यं अविद्यावच्छिन्नचैतन्यं च शुद्धचैतन्यमेव । उपाधिनिरसनेन जीवेश्वरौ शुद्धब्रह्मणोऽभिन्नौ । सामानाधिकरण्येन जीव एव ईश्वरः । भागत्यागलक्षणयाऽयमर्थः पर्यवसन्नः । अहं सः=हंसः ; सः अहं=सोहम् ।

कलाशब्दविमर्शः —

क्=आकाशं, अ=तदुपहितचैतन्यं, ल्=पृथिवी, अ=तदुपहितचैतन्यं, अ=शुद्धचैतन्यम् । पृथिव्याद्याकाशान्तं परिदृश्यमानः सर्वः प्रपञ्चो ब्रह्मैव । 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' इति हि श्रुतिः ।

शिवाद्यवनिपर्यन्तपरिदृश्यमानसर्वप्रपञ्चाधिष्ठाननिर्विशेषब्रह्मैवाहमित्यखण्डार्थानुसंधानं कामकलाविमर्शः ॥

सौभाग्यहृदयम्—

सौः इति शक्तिबीजं श्रीदेव्या हृदयत्वेन भावयेत् । सकारविसर्ग–औकारसमुदायः—सौः इति । सकारः तच्छब्दपर्यायः ।

विसर्गेण हकारो लक्षितः । स च अहंशब्दपर्यायः । औकारः तयोः सामरस्यबोधकः । ब्रह्मैवाहमिति ॥

कामकला ध्यातैव सौभाग्यहृदयमामृष्टं भवति ॥

॥ अष्टमः खण्डः ॥

होमः ।

होमस्य इतिकर्तव्यता परिशिष्टे द्रष्टव्या । होमः कृताकृतः । अकरणे न प्रत्यवायः, करणे तु श्रेय एव ॥

॥ नवमः खण्डः ॥

बलिदानादि हविःप्रतिपत्त्यन्तम् ।

बलिदानम् ।

देव्या दक्षभागे सामान्यार्घ्योदकेन त्रिकोणवृत्तचतुरश्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य—

४ ऐं व्यापकमण्डलाय नमः—इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य—

अर्धभक्तपूरितोदकं सश्रीरादित्रयं बलिपात्रं तत्र विन्यस्य—

४ ओं ह्रीं सर्वविघ्नक्रव्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा—इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा दक्षकरार्पितं वामकरतत्त्वमुद्रास्पृष्टं सलिलं

बल्युपरि दत्वा वामपार्ष्णिघातकरास्फोटौ कुर्वाणः समुदञ्चितवक्त्रो बाणमुद्रया बलिं भूतैर्योगितं विभाव्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

ततः पादौ प्रक्षाल्य, आचम्य प्रदक्षिणनमस्कारं कृत्वा यथाशक्ति जपमाचरेत् ॥

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥

इति जपं समर्पयेत् ॥

स्तोत्रम् ।

४ गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम् ।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकां पीठरूपिणीम् ॥ १ ॥
प्रणमामि महादेवीं मातृकां परमेश्वरीम् ।
कालहल्लोहलोल्लोलकलनांशमकारिणीम् ॥ २ ॥
यदक्षरैकमात्रेऽपि संसिद्धे स्पर्धते नरः ।
रवितार्क्ष्येन्दुकन्दर्पशङ्करानलविष्णुभिः ॥ ३ ॥
यदक्षरशशिज्योत्स्नामण्डितं भुवनत्रयम् ।
वन्दे सर्वेश्वरीं देवीं महाश्रीसिद्धमातृकाम् ॥ ४ ॥
यदक्षरमहासूत्रप्रोतमेतज्जगत्त्रयम् ।
ब्रह्माण्डादिकटाहान्तं तां वन्दे सिद्धमातृकाम् ॥ ५ ॥
यदेकादशमाधारं बीजं कोणत्रयोद्भवम् ।
ब्रह्माण्डादिकटाहान्तं जगदद्यापि दृश्यते ॥ ६ ॥

अकचादितोबद्धपयशाक्षरवर्गेणीम् ।
त्र्यष्ठाङ्गबाहुपादाग्रमध्यस्थान्तनिवासिनीम् ॥ ७ ॥

तामीकाराक्षरोद्धारां सारात्सारां परात्पराम् ।
प्रणमामि महादेवीं परमानन्दरूपिणीम् ॥ ८ ॥

अद्यापि यस्या जानन्ति न मनागपि देवताः ।
केयं कस्मात् क्व केनेति सरूपारूपभावनाम् ॥ ९ ॥

वन्दे तामहमक्षय्यां क्षकाराक्षररूपिणीम् ।
देवीं कुलकलोल्लासग्रोल्लसन्तीं परां शिवाम् ॥ १० ॥

वर्गानुक्रमयोगेण यस्यां मात्रष्टकं स्थितम् ।
वन्दे तामष्टवर्गोत्थमहासिद्धचष्टकेश्वरीम् ॥ ११ ॥

कामपूर्णजकाराख्यश्रीपीठान्तर्निवासिनीम् ।
चतुराब्धाकोशभूतां नौमि श्रीत्रिपुरामहम् ॥ १२ ॥

इति द्वादशभिः श्लोकैः स्तवनं सर्वसिद्धिकृत् ।
देव्यास्त्वखण्डरूपायाः स्तवनं तव तद्यतः ॥

भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे ॥

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥

पिता माता भ्राता गुरुरथ सुहृद्बान्धवजनः
प्रभुस्तीर्थं कर्माविकलमिह चामुत्र च हितम् ।
विशुद्धा विद्या वा पदमपि च तत्प्राप्यमसि मे
त्वमेव श्रीमातः स्वपिमि गतशङ्कः सुखतमः ॥

दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥

हे सद्रूपिणि हे चिदर्चिरुदये हे कामराजप्रिये
हे भण्डासुरहन्त्रि हेऽद्भुतनिधे हेऽनङ्गसंजीविनि ।
हे विश्वप्रसवित्रि हे सकरुणे हे दीनरक्षामणे
हे श्रीमल्ललिताम्ब हे परशिवे मां पाहि डिम्भं निजम् ॥

नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्रीपुरगते
नमः पञ्चाटव्यां कुतुकिनि नमो रत्नगृहगे ।
नमः श्रीचक्रस्थेऽखिलमयि नमो बिन्दुनिलये
नमः कामेशाङ्कस्थितिमति नमस्तेऽम्ब ललिते ॥

जय जय जगदम्ब भक्तवश्ये
जय जय सान्द्रकृपावशान्तरङ्गे ।
जय जय निखिलार्थदानशौण्डे
जय जय हे ललिताम्ब चित्सुखाब्धे ॥

षडङ्गदेवता नित्या दिव्यौघत्रयीगुरून् ।
नमाम्यायुधदेवीश्च शक्तीश्चावरणस्थिताः ॥

अमुकानन्दनाथाय मम श्रीगुरवे नमः ।
अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे ।
अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमेष्ठिने ॥

यदिदं श्रीगुरुस्तोत्रं स्वस्वरूपोपलक्षणम् ।
बालभावानुसारेण ममेदं हि विचेष्टितम् ।
मातृवात्सल्यसदृशं त्वया देवि विधीयताम् ॥

एवमादिभिः स्तुतिभिर्देवीं स्तुयात् ॥

सुवासिनीपूजा ।

प्राङ्निमन्त्रितां सुवासिनीमाहूय तां देवीरूपां विभाव्य—

ॐ ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै अर्घ्यं कल्पयामि नमः । इत्यादिरीत्या अर्घ्य—आचमन—स्नान—गन्ध—हरिद्राकुङ्कुम—पुष्प—धूप—दीप—नैवेद्य—ताम्बूलानि दद्यात्, (सति विभवे वसनादीनि च)।

सा च दीक्षिता चेत् मूलेन समस्तप्रकटेत्यादिसमष्टिमन्त्रेण च क्रमेण श्रीदेव्यै आवरणदेवताभ्यश्च पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । ततस्तस्याः करे क्षीरपात्रं नागरखण्डं च समर्पयेत् । सा च उत्थाय शिरसि श्रीगुरुपादुकामनुना त्रिरिष्ट्वा, हृदये आत्मचतुष्टयं संतर्प्य, चक्रे देवीं त्रिः संतर्प्य, मूलेन पात्रं वामकरे

धृत्वा दक्षकरेणाच्छाद्योपविश्य तत्त्वानि शोधयेत् । कर्त्रा पुनः पात्रान्तरमादाय वक्ष्यमाणमन्त्रेण तस्यै समर्पयेत् ।* यथा—

४ अलिपात्रमिदं तुभ्यं दीयते पिशितान्वितम् ।
स्वीकृत्य सुभगे देवि यशो देहि रिपून् जहि ॥

इति मन्त्रेण सुवासिन्यै अथवा श्रीदेव्यै समर्पयेत् । सापि तत् सावशेषं स्वीकृत्य—

४ वत्स तुभ्यं मया दत्तं पीतशेषं कुलामृतम् ।
त्वच्छत्रून् संहरिष्यामि तवाभीष्टं ददाम्यहम् ॥

इति मन्त्रेण प्रतिदद्यात् । ततः साधकः सुवासिनीं भोजयित्वा संतर्प्य ताम्बूलाद्यैः संतोषयेत् ॥

सामयिकपूजा ।

ततः संनिहिते गुरौ गुरुं नत्वा, गन्धकुङ्कुमादिभिरुपचर्य गुरुपादुकामन्त्रेण अभिपूज्य पात्राणि समर्पयेत् । असंनिहिते गुरौ स्वशिरसि गुरुत्रयं यजेत् । संनिहितान् सामयिकानाहूय गन्धकुङ्कुमादिभिरुपचर्य पात्राणि दद्यात् । पश्चात् तत्त्वशोधनं कुर्यात् । सामयिकश्च पात्रमादाय समस्तप्रकटेत्यादिसमष्टिमन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा स्वशिरसि गुरुत्रयं, हृदये आत्मचतुष्टयं च इष्ट्वा देवीं संतर्प्य तत्त्वशोधनं यथोपदिष्टं कुर्यात् ।

---

* अदीक्षिता चेदलिपात्रदानमेव ।

तत्त्वशोधनम् ।

४ क-५ प्रकृत्यहंकारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्नि सलिलभूम्यात्मना अं+अः क–५ आत्मतत्त्वेन आणवमलशोधनार्थं स्थूलदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा । आत्मा मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासँ स्वाहा ।

४ ह-६ मायाकलाऽविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मना कं+मं ह-६ विद्यातत्त्वेन मायिकमलशोधनार्थं सूक्ष्मदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा । अन्तरात्मा मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासँ स्वाहा ।

४ स-४ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना यं + क्षं स-४ शिवतत्त्वेन कार्मिकमलशोधनार्थं कारणदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा । परमात्मा मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासँ स्वाहा ।

४ मूलं प्रकृत्यहंकारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूमिमायाकलाऽविद्यारागकालनियतिपुरुषशिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना अं आं+ळं क्षं मूलं सर्वतत्त्वेन सर्वदेहं सर्वदेहाभिमानिनं जीवात्मानं परिशोधयामि

जुहोमि स्वाहा । ज्ञानात्मा मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासँ स्वाहा ।*

४ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि । ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि । योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ॥

इति (गुरौ संनिहिते होष्यामि इति संप्रार्थ्य गुरोरनुज्ञां लब्ध्वा) चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात् ।

ततः पात्रं प्रक्षाल्य तत्र सुवर्णपुष्पाक्षतान्निक्षिप्य

४ देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक ।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पात्रं पूर्णतरं कुरु ॥

इति गुरवे समर्पयेत् । असंनिहिते गुरौ स्वशिरसि पात्रं निधाय आत्मपात्रमण्डले निक्षिपेत् ॥

---

* षोडश्युपासकानां पञ्चमपात्रेण—

४ मूलं पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

॥ दशमः खण्डः ॥

पूजासमर्पण-देवतोद्वासने ।

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ।
तत्सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम ॥
देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक ।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु ॥

इति देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य, शङ्खमुद्धृत्य, देव्युपरि त्रिः परिभ्राम्य, तज्जलं हस्ते समादाय, सामयिकानात्मानं च मूलेन प्रोक्ष्य, शङ्खं प्रक्षाल्य निदध्यात् ।

ततो मूलेन तीर्थनिर्माल्ये स्वीकृत्य—

४ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मयाचरितं शिवे ।
तव कृत्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥

इति क्षमाप्य सर्वासामावरणदेवतानां श्रीदेव्यङ्गे विलयं विभाव्य खेचरीं बद्ध्वा—

४ हृत्पद्मकर्णिकामध्ये शिवेन सह शङ्करि ।
प्रविश त्वं महादेवि सर्वैरावरणैः सह ॥

इति तेजोरूपेण परिणतां श्रीदेवीं पूर्ववत् हृदयं नीत्वा, तत्र च मूर्तिं पञ्चोपचारैः संपूज्य, पुनः आत्माभिन्नसंविद्रूपेण भावयेत् ॥

॥ एकादशः खण्डः ॥

शान्तिस्तव--विशेषार्घ्योद्वासने ।

शान्तिस्तवः ।

४ संपूजकानां परिपालकानां
यतेन्द्रियाणां च तपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां
करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः ॥
नन्दन्तु साधककुलान्यणिमादिसिद्धाः
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम् ।
सा शाम्भवी स्फुरतु कापि ममाप्यवस्था
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम् ।
कालाग्न्यादि शिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥

विशेषार्घ्योद्वासनम् ।

मूलेन विशेषार्घ्यपात्रं आमस्तकमुद्धृत्य तत्क्षीरं पात्रान्तरेणादाय आर्द्रं ज्वलति इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा ब्राह्मणान सुवासिनीश्च भोजयित्वा स्वयमपि भुक्त्वा यथासुखं विहरेत् ॥

॥ इति शिवम् ॥

॥ परिशिष्टम् ॥

होमः ।

*पूजामण्टपस्य ईशानभागे चतुरश्राकारं हस्तायाममङ्गुष्ठोन्नतं स्थण्डिलं परिकल्प्य मूलेन निरीक्ष्य, फट् इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य कुशेन ताडयित्वा, हुं इत्यवकुण्ठ्य स्थण्डिलोपरि दक्षिणमध्यमोत्तरेषु क्रमेण प्रागग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य तदुपरि पश्चिममध्यमपूर्वेषु उदगग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य, तासु रेखासु उल्लेखक्रमेण—ओं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ब्रह्मणे नमः । ७ यमाय नमः । ७ सोमाय नमः । ७ रुद्राय नमः । ७ विष्णवे नमः । ७ इन्द्राय नमः । इत्यभ्यर्चयेत् ॥

ततः स्वदेहे षडङ्गन्यासं कुर्यात् । यथा—

७ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः । ७ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा । ७ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् । ७ धूमव्यापिने कवचाय हुं । ७ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् । ७ धनुर्धराय अस्त्राय फट् ।

अनेनैव षडङ्गेन अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च स्थण्डिलमभ्यर्च्य तत्र अष्टकोणषट्कोणत्रिकोणात्मकमग्निचक्रं प्रवेशरीत्या विलिख्य त्रिकोणे दिगष्टकं विभाव्य तत्र स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन दिक्षु मध्ये च क्रमात् —

---

* उल्लेखनादिमुखान्तान्तं वैदिकप्रक्रियाजातं आपस्तम्बगृह्योक्तविधानेन अत्र मुद्रितम्, सूत्रान्तरानुयायिभिस्तु स्वस्वसूत्रोक्तक्रमेण अनुष्ठेयम् ।

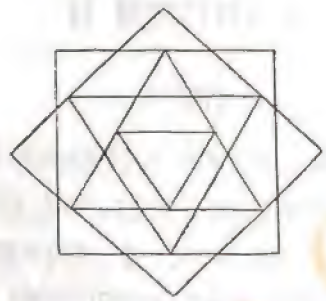

ॐ पीतायै नमः । ॐ श्वेतायै नमः । ॐ अरुणायै नमः । ॐ कृष्णायै नमः । ॐ धूम्रायै नमः । ॐ तीव्रायै नमः । ॐ स्फुलिङ्गिन्यै नमः । ॐ रुचिरायै नमः । ॐ ज्वालिन्यै नमः । इति पीठशक्तीः समर्चयेत् ॥

ततः पीठमध्ये—ॐ तं तमसे नमः । ॐ रं रजसे नमः । ॐ सं सत्वाय नमः । ॐ आं आत्मने नमः । ॐ अं अन्तरात्मने नमः । ॐ पं परमात्मने नमः । ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः । इति पूजयेत् ॥

ततः त्रिकोणे—ॐ ओं ह्रीं वागीश्वरीवागीश्वराभ्यां नमः—इति मन्त्रेण जनिष्यमाणस्य वह्नेः पितरौ वागीश्वरीवागीश्वरौ संपूज्य तयोर्मिथुनीभावं भावयित्वा, अरणेः सूर्यकान्ताद्वा वह्निमुत्पाद्य द्विजगृहाद्वा आनीय मृत्पात्रे ताम्रपात्रे वा अग्निं स्थण्डिलाद्बहिः आग्नेय्यां ऐशान्यां नैर्ऋत्यां वा दिशि निधाय, तस्मात्कव्यादांशमेकमग्निशकलं फट् इति अस्त्रमन्त्रेण नैर्ऋत्यां निरस्य अग्निं मूलेन निरीक्ष्य प्रोक्ष्य च, अस्त्रेण कुशैस्ताडयित्वा,

कवचेनावकुण्ठ्य, धेनुयोनिमुद्रं प्रदर्श्य, ततः ७ ओं रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इति मूलाधारोद्गतं संविदग्निं ललाटनेत्रद्वारा निर्गमय्य तं वागीश्वर-बीजस्य वागीश्वरीयोन्यां प्रवेशबुद्ध्या बाह्याग्नौ संयोजयेत् ॥

ततः ७ कवचाय हुं इति मन्त्रेण इन्धनैराच्छाद्य ७ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥ इत्युपस्थाय । ७ उत्तिष्ठ पुरुष हरित-पिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा इति वह्निमुत्थाप्य ततः ओं ह्रीं इति स्थण्डिलोपरि अग्निं त्रिवारं भ्राम-यित्वा स्थण्डिले स्थापयेत् । ७ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा इति प्रज्वाल्य, ज्वालिनीमुद्रां प्रदर्श्य, वागीश्वरीगर्भे धृतं ध्यात्वा ७ ऐं नमः अस्य होमाग्नेः गर्भाधान-कर्म, पुंसवनकर्म, सीमन्तोन्नयनकर्म, जातकर्म. ललिताग्निरिति नाम्ना नामकरणकर्म कल्पयामि नमः, ७ ऐं नमः अस्य ललि-ताग्नेः अन्नप्राशनकर्म, चौलकर्म, उपनयनकर्म, गोदानकर्म, विवाहकर्म कल्पयामि नमः—इति तत्तत्कर्मभावनया अक्षतै-रभ्यर्चयेत् ॥

ततः सामान्यार्घोदकेनाग्निं मूलेन परिषिच्य अग्निमलंकृत्य प्रागग्रैरुदगग्रैश्च कुशैः परिस्तीर्य उत्तरतो दर्भानास्तीर्य दर्वीं आज्यस्थालीं प्रोक्षणीं प्रणीतां इतरदर्वीं इध्मं च द्वन्द्वन्यञ्चि (अधोबिलं) पात्राणि सादयित्वा द्वौ दर्भौ प्रादेशमात्रे पवित्रे कृत्वा

अद्भिरनुमृज्य, सामान्यार्घ्योदकेन षट् पात्राणि प्रोक्ष्य, प्रोक्षणी-पात्रमादाय पुरतो निधाय, अक्षतैः सह सामान्यार्घ्योदकेन पूरयित्वा, हस्तयोः अङ्गुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यामुदगग्राभ्यां पवित्राभ्यां मूलेन त्रिः प्रागुत्पूय, मूलेन सप्तधा अभिमन्त्र्य, उत्तानानि पात्राणि कृत्वा, इध्मं विस्रस्य त्रिः प्रोक्ष्य, प्रोक्षणीपात्रं दक्षिणतो निधाय, प्रणीतापात्रमादाय पुरतो निधाय, पवित्रे तस्मिन्निधाय, अक्षतैः सह अङ्कुशमुद्रया मूलेन सामान्यार्घ्योदकेन पूरयित्वा पूर्ववदुत्पूय घ्राणसममुद्धृत्य पात्रासादनादुत्तरतो दर्भेषु सादयित्वा, वरुणाय नमः इति गन्धपुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य दर्भैः प्रच्छाद्य, पवित्रे आज्यपात्रे निधाय, अग्नेः दक्षिणतो ब्रह्माणं दर्भेषु निषाद्य, अस्मिन् श्रीललिताहोमकर्मणि ब्रह्माणं त्वां वृणे । ओं ब्रह्मणे नमः सकलाराधनैः स्वर्चितम् । अपरेणाग्निं पवित्रान्तर्हितायामाज्यस्थाल्यां आज्यं निरुप्य उदीचोऽङ्गारान्निरूह्य तेषु आज्यमधिश्रित्य ज्वलता तृणेनावद्योत्य द्वे दर्भाग्रे प्रच्छिद्य प्रक्षाल्य प्रत्यस्य त्रिः पर्यग्निकृत्वा उदगुद्वास्य अङ्गारान्प्रत्यूह्य आज्यस्थालीं स्वपुरतो निधाय मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य ईक्षणप्रोक्षणताडनावकुण्ठनानि कृत्वा उदगग्राभ्यां पवित्राभ्यां पुनराहारमाज्यं त्रिरुत्पूय पवित्रग्रन्थिं विस्रस्य अप उपस्पृश्य प्रागग्रं अग्नौ प्रहरति । अथ दव्यौं अग्नौ प्रतितप्य दर्भैः संमृज्य पुनः प्रतितप्य प्रोक्ष्य निधाय दर्भान् अद्भिः संस्पृश्य अग्नौ प्रहरति ॥

इध्ममादाय परिधीन् परिदधाति—स्थूलं उदगग्रं पश्चात्, अणीयांसं दीर्घं प्रागग्रं दक्षिणतः, अणिष्ठं ह्रस्वं प्रागग्रं उत्तरतः

अग्निपरिस्तरणयोर्मध्ये अन्योन्यसंस्पृष्टान् निधाय, मध्यमं परिधिं दक्षिणहस्तेनोपस्पृश्य अग्नेः दक्षिणपूर्व-उत्तरपूर्वदेशयोः आवार-समिधौ निधाय अथाग्निं परिषिञ्चति—अदितेऽनुमन्यस्व, अनु-मतेऽनुमन्यस्व, सरस्वतेऽनुमन्यस्व, देव सवितः प्रसुव इति परिषिच्य अग्निमलंकृत्य इध्ममादाय द्विरभिघार्य मूलमध्ययोः मध्यं मृगीमुद्रया गृहीत्वा अस्मिन् श्रीललिताहोमकर्मणि ब्रह्मन् इध्ममाधास्ये ओं आधत्स्व इत्यनुज्ञातः हस्ताभ्यां इध्मं आदधाति । स्रुवेण आज्यमादाय तूष्णीं आघारावाघारयति । यथा—

(इतरदर्व्या) वायव्यादाग्नेयान्तं स्वाहा प्रजापतय इदं न मम ।
(प्रधानदर्व्या) नैर्ऋत्यादीशानान्तं स्वाहा इन्द्रायेदं न मम ।
(उत्तरार्धपूर्वार्धे) अग्नये स्वाहा अग्नय इदं ।
(दक्षिणार्धपूर्वार्धे) सोमाय स्वाहा सोमायेदम् ।
(समं पूर्वेण मध्ये) अग्नयेस्वाहा अग्नय इदम् ॥

आरम्भप्रभृति एतल्लक्षणपर्यन्तं मध्ये संभावितसमस्तदोष-प्रायश्चित्तार्थं सर्वप्रायश्चित्तं होष्यामि । ओं भूर्भुवःसुवः स्वाहा प्रजापतय इदम् । अथाग्निं ध्यायेत्—

त्रिणयनमरुणप्रावद्धमौलिं सुशुक्लां-
शुकमरुणमनेकाकल्पमम्भोजसंस्थम् ।
अभिमतवरशक्तिं स्वस्तिकाभीतिहस्तं
नमत कनकमालालंकृतांसं कृशानुम् ॥

[शारदातिलके—वैश्वानरं स्थितं ध्यायेत् समिद्धोमेषु देशिकः ।
शयानमाज्यहोमेषु निषण्णं शेषवस्तुषु ॥]

अथ अष्टकोणे स्वाग्न्यादिप्रादक्षिण्येन—

ॐ जातवेदसे नमः । ॐ सप्तजिह्वाय नमः । ॐ हव्यवाहनाय नमः । ॐ अश्वोदराय नमः । ॐ वैश्वानराय नमः । ॐ कौमारतेजसे नमः । ॐ विश्वमुखाय नमः । ॐ देवमुखाय नमः ।

इत्यभिपूज्य ॥

षट्कोणे षडङ्गं यथा—

ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः । ॐ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा ।
ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् । ॐ धूमव्यापिने कवचाय हुम् ।
ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ धनुर्धराय अस्त्राय फट् ।

इत्यभ्यर्च्य ।

त्रिकोणे—

ॐ ओं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इति मन्त्रेण अग्निं पुष्पाक्षतैरर्चयेत् ।

अथ अग्नेः सप्तजिह्वासु एकैकां आज्याहुतिं कुर्यात् । यथा—

ॐ हिरण्यायै नमः स्वाहा—हिरण्याया इदं न मम (ऐशान्यां)
ॐ कनकायै ,, कनकाया ,, (प्राच्यां)
ॐ रक्तायै ,, रक्ताया ,, (आग्नेय्यां)
ॐ कृष्णायै ,, कृष्णाया ,, (नैर्ऋत्यां)
ॐ सुप्रभायै ,, सुप्रभाया ,, (पश्चिमायां)
ॐ अतिरक्तायै ,, अतिरक्ताया ,, (वायव्यायां)
ॐ बहुरूपायै ,, बहुरूपाया ,, (मध्ये)

ततस्तिस्र आहुतीर्जुहुयात् । यथा—

७ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा—अग्नय इदम् । ७ उत्तिष्ठपुरुष हरितपिङ्गळ लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा—अग्नय इदम् । ७ चित्तिपिङ्गळ हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा—अग्नय इदम् । अथ अग्नेर्मध्यभागे स्थितायां दक्षिणोत्तरायतायां बहुरूपाख्यजिह्वायां, ओं ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्त्रौः । महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे । सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि ॥ इति श्रीदेवीमावाह्य उपचारमन्त्रैः गन्धादीन् पञ्चोपचारानाचर्य पूजाक्रमेण जुहुयात् । यथा—

४ गणपतिमूलं महागणपतये स्वाहा (त्रिः) ॥

४ मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा (दशकृत्वः) ॥

क-५ हृदयाय नमः हृदयदेव्यै, ह-६ शिरसे स्वाहा शिरोदेव्यै, स-४ शिखायै वषट् शिखादेव्यै, क-५ कवचाय हुं कवचदेव्यै, ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रदेव्यै, स-४ अस्त्राय फट् अस्त्रदेव्यै स्वाहा ॥

अः मूलं अः ललितामहानित्यायै (त्रिः), तत्तिथिनित्याम-न्त्र : तत्तिथिनित्यायै, अः मूलं अः ललितामहानित्यायै स्वाहा ॥

४ अ ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्यायै ॥

४ आं ऐं भगसुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय

सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं क्लूं जं क्लूं भें क्लूं मों क्लूं हें क्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर क्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्यायै स्वाहा ॥

४ इं ओं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्ननित्यायै ॥

४ ईं ओं क्रों भ्रों क्रौं ह्स्रौं ह्स्रौं औं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्यायै ॥

४ उं ओं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्यायै स्वाहा ॥

४ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्यायै ॥

४ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्यायै स्वाहा ॥

४ ॠं ओं ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरितानित्यायै स्वाहा ॥

४ ऌं ऐं ह्रीं सौः ऌं कुलसुन्दरीनित्यायै स्वाहा ॥

४ ॡं ह्स्क्लर्ड्रीं ह्स्क्लर्ड्रीं ह्स्क्लर्ड्रौः ॡं नित्यानित्यायै स्वाहा ॥

४ एं ह्रीं फ्रें सूं क्रों आं क्रीं ऐं क्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताकानित्यायै स्वाहा ॥

४ ऐं भ्स्र्यूं ऐं विजयानित्यायै स्वाहा ॥

४ ओं स्त्रौं ओं सर्वमङ्गळानित्यायै स्वाहा ॥

४ औं ओं नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं रररररर हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्यायै स्वाहा ॥

४ अं च्कौं अं चित्रानित्यायै स्वाहा ॥

४ पञ्चदशी अः ललितामहानित्यायै स्वाहा ॥

४ ऐं ग्लौं ह्स्ख्रैं हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्त्रौः श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्यानन्दनाथाय स्वाहा. उड्डीशानन्दनाथाय प्रकाशानन्दनाथाय, विमर्शानन्दनाथाय, आनन्दानन्दनाथाय, षष्ठीशानन्दनाथाय, ज्ञानानन्दनाथाय, सत्यानन्दनाथाय, पूर्णानन्दनाथाय, मित्रेशानन्दनाथाय, स्वभावानन्दनाथाय, प्रतिभानन्दनाथाय, सुभगानन्दनाथाय स्वाहा ॥

४ परप्रकाशानन्दनाथाय, परशिवानन्दनाथाय, पराशक्त्यम्बायै, कौलेश्वरानन्दनाथाय, शुक्रदेव्यम्बायै, कुलेश्वरानन्दनाथाय, कामेश्वर्यम्बायै, भोगानन्दनाथाय, छिन्नानन्दनाथाय, समयानन्दनाथाय, सहजानन्दनाथाय, गगनानन्दनाथाय, विश्वानन्दनाथाय, विमलानन्दनाथाय, मदनानन्दनाथाय, भुवनानन्दनाथाय, लीलाम्बायै, स्वात्मानन्दनाथाय, प्रियानन्दनाथाय, (परमेष्ठिगुरु) अमुकानन्दनाथाय, (परमगुरु) अमुकानन्दनाथाय, (स्वगुरु) अमुकानन्दनाथाय स्वाहा ॥

४ अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय, अं अणिमासिद्धयै, ं लघिमासिद्धयै, मं महिमासिद्धयै, ईं ईशित्वसिद्धयै, वं वशित्वसिद्धयै, पं प्राकाम्यसिद्धयै, भुं भुक्तिसिद्धयै, इं इच्छासिद्धयै पं प्राप्तिसिद्धयै, सं सर्वकामसिद्धयै, आं ब्राह्मीमात्रे, ईं माहेश्वरीमात्रे, ऊं कौमारीमात्रे, ऋं वैष्णवीमात्रे, ॡं वाराहीमात्रे, ऐं माहेन्द्रीमात्रे, औं चामुण्डामात्रे, अः महालक्ष्मीमात्रे, द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्त्यै, द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै, क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै, ब्लूं सर्ववशंकरीमुद्राशक्त्यै, सः सर्वोन्मादिनी-

मुद्राशक्त्यै, क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै, ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै, ह्सौः सर्वबीजमुद्राशक्त्यै, ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै, ह्स्त्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्त्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्त्यै, प्रकटयोगिनीभ्यः, अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वर्यै, अं अणिमासिद्धयै, द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय, अं कामाकर्षिण्यै, आं बुद्ध्याकर्षिण्यै, इं अहङ्काराकर्षिण्यै, ईं शब्दाकर्षिण्यै, उं स्पर्शाकर्षिण्यै, ऊं रूपाकर्षिण्यै, ऋं रसाकर्षिण्यै, ॠं गन्धाकर्षिण्यै, ऌं चित्ताकर्षिण्यै, ॡं धैर्याकर्षिण्यै, एं स्मृत्याकर्षिण्यै, ऐं नामाकर्षिण्यै, ओं बीजाकर्षिण्यै, औं आत्माकर्षिण्यै, अं अमृताकर्षिण्यै, अः शरीराकर्षिण्यै, गुप्तयोगिनीभ्यः, ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशीचक्रेश्वर्यै, लं लघिमासिद्धयै, द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय, कं-५ अनङ्गकुसुमायै, चं-५ अनङ्गमेखलायै, टं-५ अनङ्गमदनायै, तं-५ अनङ्गमदनातुरायै, पं-५ अनङ्गरेखायै, यं-४ अनङ्गवेगिन्यै, शं-४ अनङ्गाङ्कुशायै, ळं क्षं अनङ्गमालिन्यै, गुप्ततरयोगिनीभ्यः, ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै, मं महिमासिद्धयै, क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ ह्रैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय, कं सर्वसंक्षोभिण्यै, खं सर्वविद्राविण्यै, गं सर्वाकर्षिण्यै, घं सर्वाह्लादिन्यै, ङं सर्वसंमोहिन्यै, चं सर्वस्तम्भिन्यै, छं सर्वजृम्भिण्यै, जं सर्वव-

शंकर्यै, झं सर्वरञ्जिन्यै, ञं सर्वोन्मादिन्यै, टं सर्वार्थसाधिन्यै, ठं सर्वसंपत्तिपूरण्यै, डं सर्वमन्त्रमय्यै, ढं सर्वद्वन्द्वक्षयंकर्यै, संप्रदाययोगिनीभ्यः, हैं ह्स्त्रौं ह्सौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वर्यै, ईं ईशित्वसिद्ध्यै, व्लूं सर्ववशंकरीमुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ ह्सैं ह्स्त्रौं ह्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय, णं सर्वसिद्धिप्रदायै, तं सर्वसंपत्प्रदायै, थं सर्वप्रियंकर्यै, दं सर्वमङ्गलकारिण्यै, धं सर्वकामप्रदायै, नं सर्वदुःखविमोचिन्यै, पं सर्वमृत्युप्रशमन्यै, फं सर्वविघ्ननिवारिण्यै, बं सर्वाङ्गसुन्दर्यै, भं सर्वसौभाग्यदायिन्यै, कुलोत्तीर्णयोगिनीभ्यः, ह्सैं ह्स्त्रौं ह्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वर्यै, वं वशित्वसिद्ध्यै, सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ ह्रीं क्लीं व्लें सर्वरक्षाकरचक्राय, मं सर्वज्ञायै, यं सर्वशक्त्यै, रं सर्वैश्वर्यप्रदायै, लं सर्वज्ञानमय्यै, वं सर्वव्याधिविनाशिन्यै, शं सर्वाधारस्वरूपायै, षं सर्वपापहरायै, सं सर्वानन्दमय्यै, हं सर्वरक्षास्वरूपिण्यै, क्षं सर्वेप्सितफलप्रदायै, निगर्भयोगिनीभ्यः, ह्रीं क्लीं व्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वर्यै, पं प्राकाम्यसिद्ध्यै, क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय, अं+अः (१६) व्लूं वशिनीवाग्देवतायै, कं-५ क्लह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै, चं-५ न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै, टं-५ ल्व्लूं विमलावाग्देवतायै, तं-५

ञ्स्त्रीं अरुणावाग्देवतायै, पं-५ ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै, यं-४ ङ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै, शं-६ क्ष्त्रीं कौलिनीवाग्देवतायै, रहस्ययोगिनीभ्यः, ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वर्यै, मुं मुक्तिसिद्धयै, ह्स्ल्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यः कामेश्वरीकामेश्वरबाणेभ्यः स्वाहा ।

४ थं धं सर्वसंमोहनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरधनुभ्यां स्वाहा ।

४ ह्रीं आं सर्ववशीकरणाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्यां स्वाहा ।

४ क्रों क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्यां स्वाहा ॥

४ ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय, ऐं क-५ महाकामेश्वर्यै, क्लीं ह-६ महावज्रेश्वर्यै, सौः स-४ महाभगमालिन्यै, ऐं क-५ क्लीं ह-६ सौः स-४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै, अतिरहस्ययोगिनीभ्यः, ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वर्यै, इं इच्छासिद्धयै, ह्स्रौः सर्वबीजमुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ पञ्चदशी सर्वानन्दमयचक्राय, मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा । इति दशवारं, परापरातिरहस्ययोगिन्यै, मूलं त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै, पं प्राप्तिसिद्धयै, ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ षोडश्युपासकानां—तुरीयविद्या तुरीयाम्बायै, सं सर्वकामसिद्धयै, ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्त्यै,

महाषोडशी महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै स्वाहा ॥

पञ्चपञ्चिकादिहोमे तत्तन्मन्त्रेण प्रदर्शितरीत्या होमः कर्तव्यः ॥

ततो होमावशिष्टेन आज्येन स्रुचं पूरयित्वा पुष्पं फलं अग्रे निधाय स्रुवेणाच्छाद्य मूलेन वौषट् इति उत्थितो जुहुयात् ॥ ततो बलिदानम् (पुटं १०४)। ततो महाव्याहृतिहोमः। यथा—

७ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा । अग्नये पृथिव्यै महत इदम् । ७ भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा । वायवे अन्तरिक्षाय महत इदम् । ७ सुवरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा । आदित्याय दिवे महत इदम् । ७ भुर्भुवःसुवश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा । चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महत इदम् । इति चतस्र आहुतीराज्येन हुत्वा।

ऐं ह्रीं श्रीं ओं इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यत्कृतं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । परब्रह्मण इदम् । इति ब्रह्मार्पणाहुतिं विदध्यात् ॥

एतत्कर्मसमृद्ध्यर्थं जयादिहोमं करिष्ये । चित्तं च स्वाहा । चित्तायेदम् । चित्तिश्च स्वाहा । चित्या इदम् । आकूतं च स्वाहा । आकूतायेदम् । आकूतिश्च स्वाहा । आकूत्या इदम् । विज्ञातं च स्वाहा । विज्ञातायेदम् । विज्ञानं च स्वाहा । विज्ञानायेदम् । मनश्च स्वाहा । मनस इदम् । शकरीश्च स्वाहा । शकरीभ्य इदम् । दर्शश्च स्वाहा । दर्शायेदम् । पूर्णमासश्च स्वाहा । पूर्णमासायेदम् । बृहच्च स्वाहा । बृहत इदम् ।

रथन्तरं च स्वाहा । रथन्तरायेदम् । प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रꣳ पृतनाज्येषु तस्मै विशः समनमन्त सर्वाः स उग्रः स हि हव्यो बभूव स्वाहा । प्रजापतय इदम् । अग्निर्भूतानामधिपतिः स माऽवत्वसिन् ब्रह्मन्नसिन्क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मन्नस्यां देवहूत्याँ स्वाहा । अग्नय इदम् । इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स माऽवतु+स्वाहा । इन्द्रायेदम् । यमः पृथिव्या अधिपतिः स माऽवतु+स्वाहा । यमायेदम् । वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स माऽवतु+स्वाहा । वायव इदम् । सूर्यो दिवोऽधिपतिः स माऽवतु+स्वाहा । सूर्यायेदम् । चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स माऽवतु+स्वाहा । चन्द्रमस इदम् । बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः स माऽवतु+स्वाहा । बृहस्पतय इदम् । मित्रः सत्यानामधिपतिः स माऽवतु + स्वाहा । मित्रायेदम् । वरुणोऽपामधिपतिः स माऽवतु+स्वाहा । वरुणायेदम् । समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः स माऽवतु+स्वाहा । समुद्रायेदम् । अन्नꣳ साम्राज्यानामधिपति तन्माऽवतु+स्वाहा । अन्नायेदम् । सोम ओषधीनामधिपतिः स माऽवतु + स्वाहा । सोमायेदम् । सविता प्रसवानामधिपतिः स माऽवतु+स्वाहा । सवित्र इदम् । रुद्रः पशूनामधिपतिः स माऽवतु + स्वाहा । रुद्रायेदम् । अप उपस्पृश्य । त्वष्टा रूपाणामधिपतिः स माऽवतु+स्वाहा । त्वष्ट्र इदम् । विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स माऽवतु+स्वाहा । विष्णव इदम् । मरुतो गणानामधिपतयस्ते माऽवन्तु+स्वाहा । मरुद्भ्य इदम् । पितरः पितामहाःपरेवरे ततास्ततामहा इह

माऽवत । अस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन्क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायाम-
स्मिन्कर्मन्नस्यां देवहूत्याँ स्वाहा । पितृभ्य इदम् । अप उपस्पृश्य ।
ऋतापाड्नधामाऽग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरस ऊर्जो नाम स
इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्मक्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा । अग्नये
गन्धर्वायेदम् । ताभ्यः स्वाहा । ओषधीभ्योऽप्सरोभ्य इदम् ।
सँहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो
नाम+स्वाहा । सूर्याय गन्धर्वायेदम् । ताभ्यः स्वाहा । मरी-
चिभ्योऽप्सरोभ्य इदम् । सुषुम्नः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य
नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम + स्वाहा । चन्द्रमसे गन्धर्वा-
येदम् । ताभ्यः स्वाहा । नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्य इदम् । भुज्युः
सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणा अप्सरसः स्तवा नाम+स्वाहा ।
यज्ञाय गन्धर्वायेदम् । ताभ्यः स्वाहा । दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्य
इदम् । प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वस्तस्यर्क्सामान्यप्सरसो
वह्नयो नाम+स्वाहा । मनसे गन्धर्वायेदम् । ताभ्यः स्वाहा ।
ऋक्सामभ्योऽप्सरोभ्य इदम् । इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्व-
स्तस्यापोऽप्सरसो मुदा नाम+स्वाहा । वाताय गन्धर्वायेदम् ।
ताभ्यः स्वाहा । अद्भ्योऽप्सरोभ्य इदम् । भुवनस्य पते यस्य त उपरि
गृहा इह च । सनोरास्वाज्यानिꣳ रायस्पोषँ सुवीर्यꣳ संवत्सरी-
णाँ स्वस्तिꣳ स्वाहा । भुवनस्य पत्य इदम् । परमेष्ठ्यधिपतिर्मृत्यु-
र्गन्धर्वस्तस्य विश्वमप्सरसो भुवो नाम+स्वाहा । मृत्यवे गन्ध-
र्वायेदम् । ताभ्यः स्वाहा । विश्वस्या अप्सरोभ्य इदम् । सुक्षितिः
सुभूतिर्भद्रक्रुच्छुवर्वान्पर्जन्यो गन्धर्वस्तस्य विद्युतोऽप्सरसो रुचो

नाम+स्वाहा । पर्जन्याय गन्धर्वायेदम् । ताभ्यः स्वाहा । विद्युद्भ्योऽप्सरोभ्य इदम् । दूरे हेतिरमृडयो मृत्युर्गन्धर्वस्तस्य प्रजा अप्सरसो भीरुवो नाम+स्वाहा । मृत्यवे गन्धर्वायेदम् । ताभ्यः स्वाहा । प्रजाभ्योऽप्सरोभ्य इदम् । चारुः कृपणकाशी कामो गन्धर्वस्तस्याधयोऽप्सरसः शोचयन्तीर्नाम स इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा । कामाय गन्धर्वायेदम् । ताभ्यः स्वाहा । आधिभ्योऽप्सरोभ्य इदम् । स नो भुवनस्य पते यस्य त उपरि गृहा इह च । उरु ब्रह्मणेऽस्मै क्षत्राय महिशर्म यच्छ स्वाहा । भुवनस्य पत्ये ब्रह्मण इदम् । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयँ स्याम पतयो रयीणां स्वाहा । प्रजापतय इदम् । भूः स्वाहा । अग्नय इदम् । भुवः स्वाहा । वायव इदम् । सुवः स्वाहा । सूर्यायेदम् । यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान्त्सर्वꣳ स्विष्टँ सुहुतं करोतु स्वाहा । अग्नये स्विष्टकृत इदम् । चरुकर्मसु प्रधानदर्व्याज्येन निधानक्रमात् परिध्यञ्जनं कृत्वा लेपकार्यं कुर्यात् । आज्यस्थाल्या दक्षिणतः प्रधानदर्वीं निधाय, इतरदर्वीं मध्ये निधाय, पात्रसादनार्थदर्भानादाय, प्रधानदर्व्यामग्रं, इतरस्यां मध्यं, आज्यस्थाल्यां मूलमित्युदगपवर्गं क्रमेण त्रिरुक्त्वा, अक्तस्य बर्हिषस्तृणमपादाय, प्रज्ञातं निधाय, दक्षिणोत्ताराभ्यां पाणिभ्यां प्रधानदर्व्यां बर्हिः प्रतिष्ठाप्य, दक्षिणेन करेणाग्नौ प्रहरति । त्रिरुद्यम्य, अपात्ततृणमग्नौ प्रहरति । तत्त्रिरङ्गुल्या निर्दिश्य, अग्निमभिमन्त्रयते । अथ

भूमिमुपस्पृश्य, परिधीन्प्रहरति। मध्यमं परिधिमग्नौ प्रहृत्य, अन्यौ परिधी हस्ताभ्यामादाय युगपदग्नौ प्रहरन्नुत्तरार्ध्वस्याग्रमङ्गारेषूपोहति। दर्वीद्वयेन संस्रावं परिधीनभिजुहोति (स्वाहा) वसुभ्यो रुद्रेभ्य आदित्येभ्यः सँस्रावभागेभ्य इदम्। ओं भूर्भुवस्सुवः स्वाहा। प्रजापतय इदम्। (संकल्पः) अस्मिन् ललिताहोमकर्मणि अविज्ञातप्रायश्चित्तादीनि होष्यामि। अनाज्ञातं यदाज्ञातं यज्ञस्य क्रियते मिथु। अग्ने तदस्य कल्पय त्वँ हि वेत्थ यथातथँ स्वाहा। अग्नय इदम्। पुरुषसंमितो यज्ञो यज्ञः पुरुषसंमितः। अग्ने तदस्य कल्पय त्वँ हि वेत्थ यथातथँ स्वाहा। अग्नय इदम्। यत्पाकत्रा मनसा दीनदक्षा न यज्ञस्य मन्वते मर्तासः। अग्निष्टद्धोता क्रतुविद्विजानन्यजिष्ठो देवाँ ऋतुशो यजाति स्वाहा। अग्नय इदम्। भूः स्वाहा। अग्नय इदम्। भुवः स्वाहा। वायव इदम्। सुवः स्वाहा। सूर्यायेदम्। ओं भूर्भुवस्सुवः स्वाहा। प्रजापतय इदम्। अस्मिन् ललिताहोमकर्मणि मध्ये संभावितसमस्तमन्त्रलोपतन्त्रलोपद्रव्यलोपक्रियालोपाज्यलोपन्यूनातिरेकविस्मृतिविपर्यासप्रायश्चित्तार्थं सर्वप्रायश्चित्तं होष्यामि। ओं भूर्भुवस्सुवः स्वाहा। प्रजापतय इदम्। श्रीविष्णवे स्वाहा। विष्णवे परमात्मन इदम्। नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा। रुद्राय पशुपतय इदम्। अप उपस्पृश्य। सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धामप्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेन स्वाहा। अग्नये सप्तवत इदम्। आज्यपात्रादीनुत्तरतो निधाय, प्राणायामं कृत्वा, अग्निं परिषि-

श्नुति । अदितेऽन्वमँस्थाः । अनुमतेऽन्वमँस्थाः । सरस्वतेऽन्वमँस्थाः । देव सवितः प्रासावीः ॥

ततः प्रणीतापात्रं स्वस्य पुरतः आदाय, पूर्णमसि पूर्णं मे भूयाः । सदसि सन्मे भूयाः । सर्वमसि सर्वं मे भूयाः ॥ इति अन्यजलं निनीय तज्जलं प्रागादिप्रदक्षिणं—प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम् । दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम् । प्रतीच्यां दिशि गृहाः पशवो मार्जयन्ताम् । उदीच्यां दिश्याप ओषधयो वनस्पतयो मार्जयन्ताम् । ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः संवत्सरो यज्ञपतिर्मार्जयन्ताम्—इति प्रतिदिशमुत्सृज्य पुरस्तात् अक्षतोपरि निस्राव्य, तेन—ब्राह्मणेष्वमृतं हितं येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा तेन सहस्रधारेण पावमान्यः पुनन्तु मा—इत्यात्मानं प्रोक्ष्य दक्षिणतो निषादितं ब्रह्माणं संपूज्य तस्य वरं दत्त्वा प्रागादिपरिस्तरणमुत्तरे विसृजेत् । अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥ इत्युपस्थाय चिदग्निं, उपावरोह जातवेदः पुनस्त्वं देवेभ्यो हव्यं वह नः प्रजानन् । आयुः प्रजाँ रयिमस्मासु धेहि अजस्रो दीदिहि नो दुरोणे ॥ ललिताग्निमात्मन्युद्वासयामि नमः इत्युद्वास्य हृदये अञ्जलिं दद्यात् । तद्भूतितिलकं—त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् अगस्त्यस्य त्र्यायुषं यद्देवानां त्र्यायुषं तन्मेऽस्तु त्र्यायुषं । शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः ॥—इति त्रियायुषेण मन्त्रेण धारयेत् । इति शिवम् ॥

॥ श्रीललितासहस्रनामावलिः ॥

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुर-
त्तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥

ओं–ऐं–ह्रीं–श्रीं

ओं श्रीमात्रे नमः ओं
श्रीमहाराज्ञ्यै
श्रीमत्सिंहासनेश्वर्यै
चिदग्निकुण्डसंभूतायै
देवकार्यसमुद्यतायै
उद्यद्भानुसहस्राभायै
ओं चतुर्बाहुसमन्वितायै नमः ओं
रागस्वरूपपाशाढ्यायै
क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वलायै
मनोरूपेक्षुकोदण्डायै 10
पञ्चतन्मात्रसायकायै
ओं निजारुणप्रभापूरमज्जद्ब्रह्माण्डमण्डलायै नमः ओं
चम्पकाशोकपुन्नागसौगन्धिकलसत्कचायै
कुरुविन्दमणिश्रेणीकनत्कोटीरमण्डितायै
अष्टमीचन्द्रविभ्राजदलिकस्थलशोभितायै
मुखचन्द्रकलङ्काभमृगनाभिविशेषकायै

ओं वदनस्मरमाङ्गल्यगृहतोरणचिल्लिकायै नमः ओं
वक्त्रलक्ष्मीपरीवाहचलन्मीनाभलोचनायै
नवचम्पकपुष्पाभनासादण्डविराजितायै
नाराकान्तितिरस्कारिनासाभरणभासुरायै 20
कदम्बमञ्जरीक्लृप्तकर्णपूरमनोहरायै
ताटङ्कयुगलीभूततपनोडुपमण्डलायै
पद्मरागशिलादर्शपरिभाविकपोलभुवे
नवविद्रुमबिम्बश्रीन्यक्कारिदशनच्छदायै
शुद्धविद्याङ्कुराकारद्विजपङ्क्तिद्वयोज्ज्वलायै
कर्पूरवीटिकामोदसमाकर्षिदिगन्तरायै
निजसंलापमाधुर्यविनिर्भर्त्सितकच्छप्यै
मन्दस्मितप्रभापूरमज्जत्कामेशमानसायै
अनाकलितसादृश्यचुबुकश्रीविराजितायै
कामेशबद्धमाङ्गल्यसूत्रशोभितकन्धरायै 30
कनकाङ्गदकेयूरकमनीयभुजान्वितायै
रत्नग्रैवेयचिन्ताकलोलमुक्ताफलान्वितायै
कामेश्वरप्रेमरत्नमणिप्रतिपणस्तन्यै
नाभ्यालवालरोमालिलताफलकुचद्वय्यै
लक्ष्यरोमलताधारतासमुन्नेयमध्यमायै
स्तनभारदलन्मध्यपट्टबन्धवलित्रयायै
अरुणारुणकौसुम्भवस्त्रभास्वत्कटीतट्यै

ओं रत्नकिङ्किणिकारम्यरशनादामभूषितायै नमः ओं
कामेशज्ञातसौभाग्यमार्दवोरुद्वयान्वितायै
माणिक्यमकुटाकारजानुद्वयविराजितायै 40
इन्द्रगोपपरिक्षिप्तस्मरतूणाभजङ्घिकायै
गूढगुल्फायै
कूर्मपृष्ठजयिष्णुप्रपदान्वितायै
नखदीधितिसंछन्ननमज्जनतमोगुणायै
पदद्वयप्रभाजालपराकृतसरोरुहायै
शिञ्जानमणिमञ्जीरमण्डितश्रीपदाम्बुजायै

ओं मरालीमन्दगमनायै नमः ओं सुमेरुमध्यशृङ्गस्थायै नमः
महालावण्यशेवधये श्रीमन्नगरनायिकायै
सर्वारुणायै चिन्तामणिगृहान्तस्थायै
अनवद्याङ्ग्यै 50 पञ्चब्रह्मासनस्थितायै
सर्वाभरणभूषितायै महापद्माटवीसंस्थायै
शिवकामेश्वराङ्कस्थायै कदम्बवनवासिन्यै 60
शिवायै सुधासागरमध्यस्थायै
स्वाधीनवल्लभायै कामाक्ष्यै

ओं कामदायिन्यै नमः ओं
देवर्षिगणसंघातस्तूयमानात्मवैभवायै
भण्डासुरवधोद्युक्तशक्तिसेनासमन्वितायै
सम्पत्करीसमारूढसिन्धुरव्रजसेवितायै

ओं अश्वारूढाधिष्ठिताश्वकोटिकोटिभिरावृतायै नमः ओं
चक्रराजरथारूढसर्वायुधपरिष्कृतायै
गेयचक्ररथारूढमन्त्रिणीपरिसेवितायै
किरिचक्ररथारूढदण्डनाथापुरस्कृतायै 70
ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवह्निप्राकारमध्यगायै
भण्डसैन्यवधोद्युक्तशक्तिविक्रमहर्षितायै
नित्यापराक्रमाटोपनिरीक्षणसमुत्सुकायै
भण्डपुत्रवधोद्युक्तबालाविक्रमनन्दितायै
मन्त्रिण्यम्बाविरचितविषङ्गवधतोषितायै
विशुक्रप्राणहरणवाराहीवीर्यनन्दितायै
कामेश्वरमुखालोककल्पितश्रीगणेश्वरायै
महागणेशनिर्भिन्नविघ्नयन्त्रप्रहर्षितायै
भण्डासुरेन्द्रनिर्मुक्तशस्त्रास्त्रवर्षिण्यै
कराङ्गुलिनखोत्पन्ननारायणदशाकृत्यै 80
महापाशुपतास्त्राग्निनिर्दग्धासुरसैनिकायै
कामेश्वरास्त्रनिर्दग्धसभण्डासुरशून्यकायै
ब्रह्मोपेन्द्रमहेन्द्रादिदेवसंस्तुतवैभवायै
हरनेत्राग्निसंदग्धकामसंजीवनौषध्यै
श्रीमद्वाग्भवकूटैकस्वरूपमुखपङ्कजायै
कण्ठाधःकटिपर्यन्तमध्यकूटस्वरूपिण्यै
शक्तिकूटैकतापन्नकट्यधोभागधारिण्यै

ओं मूलमन्त्रात्मिकायै नमः
मूलकूटत्रयकलेवरायै
कुलामृतैकरसिकायै
कुलसंकेतपालिन्यै
कुलाङ्गनायै
कुलान्तस्थायै
कौलिन्यै
कुलयोगिन्यै
अकुळायै
समयान्तस्थायै
समयाचारतत्परायै
मूलाधारैकनिलयायै
ब्रह्मग्रन्थिविभेदिन्यै
मणिपूरान्तरुदितायै
विष्णुग्रन्थिविभेदिन्यै
आज्ञाचक्रान्तरालस्थायै
रुद्रग्रन्थिविभेदिन्यै
सहस्राराम्बुजारूढायै
सुधासाराभिवर्षिण्यै
तटिल्लतासमरुच्यै
षट्चक्रोपरिसंस्थितायै

ओं महासक्त्यै नमः
कुण्डलिन्यै
बिसतन्तुतनीयस्यै
भवान्यै
भावनागम्यायै
भवारण्यकुठारिकायै
भद्रप्रियायै
भद्रमूर्तये
भक्तसौभाग्यदायिन्यै
भक्तिप्रियायै
भक्तिगम्यायै
भक्तिवश्यायै
भयापहायै
शांभव्यै
शारदाराध्यायै
शर्वाण्यै
शर्मदायिन्यै
शांकर्यै
श्रीकर्यै
साध्व्यै
शरच्चन्द्रनिभाननायै

ओं शातोदर्यै नमः ओं 130 ओं निरन्तरायै नमः ओं
शान्तिमत्यै निष्कारणायै
निराधारायै निष्कलङ्कायै
निरञ्जनायै निरुपाधये
निर्लेपायै निरीश्वरायै
निर्मलायै नीरागायै
नित्यायै रागमथन्यै
निराकारायै निर्मदायै
निराकुलायै मदनाशिन्यै
निर्गुणायै निश्चिन्तायै 160
निष्कलायै 140 निरहंकारायै
शान्तायै निर्मोहायै
निष्कामायै मोहनाशिन्यै
निरुपप्लवायै निर्ममायै
नित्यमुक्तायै ममताहन्त्र्यै
निर्विकारायै निष्पापायै
निष्प्रपञ्चायै पापनाशिन्यै
निराश्रयायै निष्क्रोधायै
नित्यशुद्धायै क्रोधशमन्यै
नित्यबुद्धायै निर्लोभायै 170
निरवद्यायै 150 लोभनाशिन्यै

ओं निःसंशयायै नमः
संशयघ्न्यै
निर्भवायै
भवनाशिन्यै
निर्विकल्पायै
निराबाधायै
निर्भेदायै
भेदनाशिन्यै
निर्नाशायै
मृत्युमथन्यै
निष्क्रियायै
निष्परिग्रहायै
निस्तुलायै
नीलचिकुरायै
निरपायायै
नित्यायै
दुर्लभायै
दुर्गमायै
दुर्गायै
दुःखहन्त्र्यै
सुखप्रदायै

ओं दुष्टदूरायै नमः
दुराचारशमन्यै
दोषवर्जितायै
सर्वज्ञायै
सान्द्रकरुणायै
समानाधिकवर्जितायै
सर्वशक्तिमय्यै
सर्वमङ्गलायै
सद्गतिप्रदायै
सर्वेश्वर्यै
सर्वमय्यै
सर्वमन्त्रस्वरूपिण्यै
सर्वयन्त्रात्मिकायै
सर्वतन्त्ररूपायै
मनोन्मन्यै
माहेश्वर्यै
महादेव्यै
महालक्ष्म्यै
मृडप्रियायै
महारूपायै
महापूज्यायै

ओं महापातकनाशिन्यै नमः ओं
महामायायै
महाशक्त्यै
महासत्त्वायै
महारत्यै
महाभोगायै
महैश्वर्यायै
महावीर्यायै
महाबलायै
महाबुद्ध्यै
महासिद्ध्यै
महायोगीश्वरेश्वर्यै
महातन्त्रायै
महामन्त्रायै
महायन्त्रायै
महासनायै
महायागक्रमाराध्यायै
महाभैरवपूजितायै
महेश्वरमहाकल्पमहा-
—ताण्डवसाक्षिण्यै
महाकामेशमहिष्यै

ओं महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ओं
चतुःषष्ट्युपचाराढ्यायै
चतुःषष्टिकलामय्यै
महाचतुःषष्टिकोटियोगिनी-
—गणसेवितायै
मनुविद्यायै
चन्द्रविद्यायै
चन्द्रमण्डलमध्यगायै
चारुरूपायै
चारुहासायै
चारुचन्द्रकलाधरायै
चराचरजगन्नाथायै
चक्रराजनिकेतनायै
पार्वत्यै
पद्मनयनायै
पद्मरागसमप्रभायै
पञ्चप्रेतासनासीनायै
पञ्चब्रह्मस्वरूपिण्यै
चिन्मय्यै
परमानन्दायै
विज्ञानघनरूपिण्यै

ओं ध्यानध्यातृध्येयरूपायै नमः [ओं
धर्माधर्मविवर्जितायै
विश्वरूपायै
जागरिण्यै
स्वपन्त्यै
तैजसात्मिकायै
सुप्तायै 260
प्राज्ञात्मिकायै
तुर्यायै
सर्वावस्थाविवर्जितायै
सृष्टिकर्त्र्यै
ब्रह्मरूपायै
गोप्त्र्यै
गोविन्दरूपिण्यै
संहारिण्यै
रुद्ररूपायै
तिरोधानकर्यै 270
ईश्वर्यै
सदाशिवायै
अनुग्रहदायै
पञ्चकृत्यपरायणायै

ओं भानुमण्डलमध्यस्थायै नमः [ओं
भैरव्यै
भगमालिन्यै
पद्मासनायै
भगवत्यै
पद्मनाभसहोदर्यै 280
उन्मेषनिमिषोत्पन्नविपन्न-
—भुवनावल्यै
सहस्रशीर्षवदनायै
सहस्राक्ष्यै
सहस्रपदे
आब्रह्मकीटजनन्यै
वर्णाश्रमविधायिन्यै
निजाज्ञारूपनिगमायै
पुण्यापुण्यफलप्रदायै
श्रुतिसीमन्तसिन्दूरीकृत-
—पादाब्जधूलिकायै
सकलागमसंदोहशुक्ति-
—संपुटमौक्तिकायै 290
पुरुषार्थप्रदायै
पूर्णायै

ओं भोगिन्यै नमः ओं
भुवनेश्वर्यै
अम्बिकायै
अनादिनिधनायै
हरिब्रह्मेन्द्रसेवितायै
नारायण्यै
नादरूपायै
नामरूपविवर्जितायै 300
ह्रींकार्यै
ह्रीमत्यै
हृद्यायै
हेयोपादेयवर्जितायै
राजराजार्चितायै
राज्ञ्यै
रम्यायै
राजीवलोचनायै
रञ्जन्यै
रमण्यै 310
रस्यायै
रणत्किङ्किणिमेखलायै
रमायै

ओं राकेन्दुवदनायै नमः ओं
रतिरूपायै
रतिप्रियायै
रक्षाकर्यै
राक्षसघ्न्यै
रामायै
रमणलम्पटायै 320
काम्यायै
कामकलारूपायै
कदम्बकुसुमप्रियायै
कल्याण्यै
जगतीकन्दायै
करुणारससागरायै
कलावत्यै
कलालापायै
कान्तायै
कादम्बरीप्रियायै 330
वरदायै
वामनयनायै
वारुणीमदविह्वलायै
विश्वाधिकायै

ओं वेदवेद्यायै नमः
विन्ध्याचलनिवासिन्यै
विधात्र्यै
वेदजनन्यै
विष्णुमायायै
विलासिन्यै
क्षेत्रस्वरूपायै
क्षेत्रेश्यै
क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिन्यै
क्षयवृद्धिविनिर्मुक्तायै
क्षेत्रपालसमर्चितायै
विजयायै
विमलायै
वन्द्यायै
वन्दारुजनवत्सलायै
वाग्वादिन्यै
वामकेश्यै
वह्निमण्डलवासिन्यै
भक्तिमत्कल्पलतिकायै
पशुपाशविमोचन्यै
संहृताशेषपाषण्डायै

ओं सदाचारप्रवर्तिकायै
तापत्रयाग्निसंतप्तसमाह्लाद—
—नचन्द्रिकायै
तरुण्यै
तापसाराध्यायै
तनुमध्यायै
तमोपहायै
चित्यै
तत्पदलक्ष्यार्थायै
चिदेकरसरूपिण्यै
स्वात्मानन्दलवीभूतब्रह्मा—
—द्यानन्दसंतत्यै
परायै
प्रत्यक्चितीरूपायै
पश्यन्त्यै
परदेवतायै
मध्यमायै
वैखरीरूपायै
भक्तमानसहंसिकायै
कामेश्वरप्राणनाड्यै
कृतज्ञायै

ओं कामपूजितायै नमः ओं
शृङ्गाररससंपूर्णायै
जयायै
जालन्धरस्थितायै
ओड्याणपीठनिलयायै
बिन्दुमण्डलवासिन्यै 380
रहोयागक्रमाराध्यायै
रहस्तर्पणतर्पितायै
सद्यःप्रसादिन्यै
विश्वसाक्षिण्यै
साक्षिवर्जितायै
षडङ्गदेवतायुक्तायै
षाड्गुण्यपरिपूरितायै
नित्यक्लिन्नायै
निरुपमायै
निर्वाणसुखदायिन्यै 390
नित्याषोडशिकारूपायै
श्रीकण्ठार्धशरीरिण्यै
प्रभावत्यै
प्रभारूपायै
प्रसिद्धायै

ओं परमेश्वर्यै नमः ओं
मूलप्रकृत्यै
अव्यक्तायै
व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिण्यै
व्यापिन्यै 400
विविधाकारायै
विद्याविद्यास्वरूपिण्यै
महाकामेशनयनकुमुदाह्लाद-
—कौमुद्यै
भक्तहार्दतमोभेदभानुमद्भा-
—नुसंतत्यै
शिवदूत्यै
शिवाराध्यायै
शिवमूर्त्यै
शिवंकर्यै
शिवप्रियायै
शिवपरायै 410
शिष्टेष्टायै
शिष्टपूजितायै
अप्रमेयायै
स्वप्रकाशायै

ओं मनोवाचामगोचरायै नमः [ओं
चिच्छक्त्यै
चेतनारूपायै
जडशक्त्यै
जडात्मिकायै
गायत्र्यै 420
व्याहृत्यै
संध्यायै
द्विजबृन्दनिषेवितायै
तत्त्वासनायै
तस्यै
तुभ्यं
अम्बै
पञ्चकोशान्तरस्थितायै
निःसीममहिम्ने
नित्ययौवनायै 430
मदशालिन्यै
मदघूर्णितरक्ताक्ष्यै
मदपाटलगण्डभुवे
चन्दनद्रवदिग्धाङ्ग्यै
चाम्पेयकुसुमप्रियायै

ओं कुशलायै नमः ओं
कोमलाकारायै
कुरुकुल्लायै
कुलेश्वर्यै
कुलकुण्डालयायै 440
कौलमार्गतत्परसेवितायै
कुमारगणनाथाम्बायै
तुष्ट्यै
पुष्ट्यै
मत्यै
धृत्यै
शान्त्यै
स्वस्तिमत्यै
कान्त्यै
नन्दिन्यै 450
विघ्ननाशिन्यै
तेजोवत्यै
त्रिनयनायै
लोलाक्षीकामरूपिण्यै
मालिन्यै
हंसिन्यै

ओं मात्रे नमः ओं
मलयाचलवासिन्यै
सुमुख्यै
नलिन्यै 460
सुभ्रुवे
शोभनायै
सुरनायिकायै
कालकण्ठ्यै
कान्तिमत्यै
क्षोभिण्यै
सूक्ष्मरूपिण्यै
वज्रेश्वर्यै
वामदेव्यै
वयोवस्थाविवर्जितायै 470
सिद्धेश्वर्यै
सिद्धविद्यायै
सिद्धमात्रे
यशस्विन्यै
विशुद्धिचक्रनिलयायै
आरक्तवर्णायै
त्रिलोचनायै

ओं खट्वाङ्गादिप्रहरणायै न०
वदनैकसमन्वितायै
पायसान्नप्रियायै 480
त्वक्स्थायै
पशुलोकभयंकर्यै
अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै
डाकिनीश्वर्यै
अनाहताब्जनिलयायै
श्यामाभायै
वदनद्वयायै
दंष्ट्रोज्ज्वलायै
अक्षमालादिधरायै
रुधिरसंस्थितायै 490
कालरात्र्यादिशक्त्योघवृतायै
स्निग्धौदनप्रियायै
महावीरेन्द्रवरदायै
राकिण्यम्बास्वरूपिण्यै
मणिपूराब्जनिलयायै
वदनत्रयसंयुतायै
वज्रादिकायुधोपेतायै
डामर्यादिभिरावृतायै

ओं रक्तवर्णायै नमः
मांसनिष्ठायै
गुडान्नप्रीतमानसायै
समस्तभक्तसुखदायै
लाकिन्यम्बास्वरूपिण्यै
स्वाधिष्ठानाम्बुजगतायै
चतुर्वक्त्रमनोहरायै
शूलाद्यायुधसम्पन्नायै
पीतवर्णायै
अतिगर्वितायै
मेदोनिष्ठायै
मधुप्रीतायै
बन्धिन्यादिसमन्वितायै
दध्यन्नासक्तहृदयायै
काकिनीरूपधारिण्यै
मूलाधाराम्बुजारूढायै
पञ्चवक्त्रायै
अस्थिसंस्थितायै
अङ्कुशादिप्रहरणायै
वरदादिनिषेवितायै
मुद्गौदनासक्तचित्तायै

ओं साकिन्यम्बास्वरूपिण्यै न०
आज्ञाचक्राब्जनिलयायै
शुक्लवर्णायै
षडाननायै
मज्जासंस्थायै
हंसवतीमुख्यशक्ति-
—समन्वितायै
हरिद्रान्नैकरसिकायै
हाकिनीरूपधारिण्यै
सहस्रदलपद्मस्थायै
सर्ववर्णोपशोभितायै
सर्वायुधधरायै
शुक्लसंस्थितायै
सर्वतोमुख्यै
सर्वौदनप्रीतचित्तायै
याकिन्यम्बास्वरूपिण्यै
स्वाहा
स्वधा
अमत्यै
मेधायै
श्रुत्यै

ओं स्मृत्यै नमः ओं 540
अनुत्तमायै
पुण्यकीर्त्यै
पुण्यलभ्यायै
पुण्यश्रवणकीर्तनायै
पुलोमजार्चितायै
बन्धमोचन्यै
बर्बरालकायै
विमर्शरूपिण्यै
विद्यायै
वियदादिजगत्प्रसुवे 550
सर्वव्याधिप्रशमन्यै
सर्वमृत्युनिवारिण्यै
अग्रगण्यायै
अचिन्त्यरूपायै
कलिकल्मषनाशिन्यै
कात्यायन्यै
कालहन्त्र्यै
कमलाक्षनिषेवितायै
ताम्बूलपूरितमुख्यै
दाडिमीकुसुमप्रभायै 560

ओं मृगाक्ष्यै नमः ओं
मोहिन्यै
मुख्यायै
मृडान्यै
मित्ररूपिण्यै
नित्यतृप्तायै
भक्तनिधये
नियन्त्र्यै
निखिलेश्वर्यै
मैत्र्यादिवासनालभ्यायै
महाप्रलयसाक्षिण्यै
परस्यै शक्त्यै
परायै निष्ठायै
प्रज्ञानघनरूपिण्यै
माध्वीपानालसायै
मत्तायै
मातृकावर्णरूपिण्यै
महाकैलासनिलयायै
मृणालमृदुदोर्लतायै
महनीयायै 580
दयामूर्त्यै

ओं महासाम्राज्यशालिन्यै नमः
आत्मविद्यायै [ओं
महाविद्यायै
श्रीविद्यायै
कामसेवितायै
श्रीषोडशाक्षरीविद्यायै
त्रिकूटायै
कामकोटिकायै
कटाक्षकिङ्करीभूतकमला-
—कोटिसेवितायै 590
शिरःस्थितायै
चन्द्रनिभायै
भालस्थायै
इन्द्रधनुःप्रभायै
हृदयस्थायै
रविप्रख्यायै
त्रिकोणान्तरदीपिकायै
दाक्षायण्यै
दैत्यहन्त्र्यै
दक्षयज्ञविनाशिन्यै 600
दरान्दोलितदीर्घाक्ष्यै

ओं दरहासोज्ज्वलन्मुख्यै नमः
गुरुमूर्तये [ओं
गुणनिधये
गोमात्रे
गुहजन्मभुवे
देवेश्यै
दण्डनीतिस्थायै
दहराकाशरूपिण्यै
प्रतिपन्मुख्यराकान्ततिथि-
—मण्डलपूजितायै 610
कलात्मिकायै
कलानाथायै
काव्यालापविनोदिन्यै
सचामररमावाणीसव्य-
—दक्षिणसेवितायै
आदिशक्त्यै
अमेयायै
आत्मने
परमायै
पावनाकृतये
अनेककोटिब्रह्माण्डजनन्यै

ओं दिव्यविग्रहायै नमः
ह्रींकार्यै
केवलायै
गुह्यायै
कैवल्यपददायिन्यै
त्रिपुरायै
त्रिजगद्वन्द्यायै
त्रिमूर्तये
त्रिदशेश्वर्यै
त्र्यक्षर्यै 630
दिव्यगन्धाढ्यायै
सिन्दूरतिलकाञ्चितायै
उमायै
शैलेन्द्रतनयायै
गौर्यै
गन्धर्वसेवितायै
विश्वगर्भायै
स्वर्णगर्भायै
अवरदायै
वागधीश्वर्यै 640
ध्यानगम्यायै

ओं अपरिच्छेद्यायै नमः
ज्ञानदायै
ज्ञानविग्रहायै
सर्ववेदान्तसंवेद्यायै
सत्यानन्दस्वरूपिण्यै
लोपामुद्रार्चितायै
लीलाक्लृप्तब्रह्माण्डमण्ड-
—लायै
अदृश्यायै
दृश्यरहितायै 650
विज्ञात्र्यै
वेद्यवर्जितायै
योगिन्यै
योगदायै
योग्यायै
योगानन्दायै
युगन्धरायै
इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रिया-
—शक्तिस्वरूपिण्यै
सर्वाधारायै
सुप्रतिष्ठायै 660

ओं सदसद्रूपधारिण्यै नमः ओं
अष्टमूर्त्यै
अजाजेत्र्यै
लोकयात्राविधायिन्यै
एकाकिन्यै
भूमरूपायै
निर्द्वैतायै
द्वैतवर्जितायै
अन्नदायै
वसुदायै 670
वृद्धायै
ब्रह्मात्मैक्यस्वरूपिण्यै
बृहत्यै
ब्राह्मण्यै
ब्राह्म्यै
ब्रह्मानन्दायै
बलिप्रियायै
भाषारूपायै
बृहत्सेनायै
भावाभावविवर्जितायै 680
सुखाराध्यायै

ओं शुभकर्यै नमः ओं
शोभनायै सुलभायै गत्यै
राजराजेश्वर्यै
राज्यदायिन्यै
राज्यवल्लभायै
राजत्कृपायै
राजपीठनिवेशितनिजाश्रि-
—तायै
राज्यलक्ष्म्यै
कोशनाथायै 690
चतुरङ्गबलेश्वर्यै
साम्राज्यदायिन्यै
सत्यसन्धायै
सागरमेखलायै
दीक्षितायै
दैत्यशमन्यै
सर्वलोकवशंकर्यै
सर्वार्थदात्र्यै
सावित्र्यै
सच्चिदानन्दरूपिण्यै 700
देशकालापरिच्छिन्नायै

ओं सर्वगायै नमः ओं
सर्वमोहिन्यै
सरस्वत्यै
शास्त्रमय्यै
गुहाम्बायै
गुह्यरूपिण्यै
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तायै
सदाशिवपतिव्रतायै
संप्रदायेश्वर्यै 710
साधुने
यै
गुरुमण्डलरूपिण्यै
कुलोत्तीर्णायै
भगाराध्यायै
मायायै
मधुमत्यै
मह्यै
गणाम्बायै
गुह्यकाराध्यायै 720
कोमलाङ्ग्यै
गुरुप्रियायै

ओं स्वतन्त्राय नमः ओं
सर्वतन्त्रेश्वर्यै
दक्षिणामूर्तिरूपिण्यै
सनकादिसमाराध्यायै
शिवज्ञानप्रदायिन्यै
चित्कलायै
आनन्दकलिकायै
प्रेमरूपायै 730
प्रियंकर्यै
नामपारायणप्रीतायै
नन्दिविद्यायै
नटेश्वर्यै
मिथ्याजगदधिष्ठानायै
मुक्तिदायै
मुक्तिरूपिण्यै
लास्यप्रियायै
लयकर्यै
लज्जायै 740
रम्भादिवन्दितायै
भवदावसुधावृष्ट्यै
पापारण्यदवानलायै

ओं दौर्भाग्यतूलवातूलायै नमः
जराध्वान्तरविप्रभायै [ओं
भाग्याब्धिचन्द्रिकायै
भक्तचित्तकेकिघनाघनायै
रोगपर्वतदम्भोलये
मृत्युदारुकुठारिकायै
महेश्वर्यै 750
महाकाल्यै
महाग्रासायै
महाशनायै
अपर्णायै
चण्डिकायै
चण्डमुण्डासुरनिषूदिन्यै
क्षराक्षरात्मिकायै
सर्वलोकेश्यै
विश्वधारिण्यै
त्रिवर्गदात्र्यै 760
सुभगायै
त्र्यम्बकायै
त्रिगुणात्मिकायै
स्वर्गापवर्गदायै

ओं शुद्धायै नमः ओं
जपापुष्पनिभाकृतये
ओजोवत्यै
द्युतिधरायै
यज्ञरूपायै
प्रियव्रतायै 770
दुराराध्यायै
दुराधर्षायै
पाटलीकुसुमप्रियायै
महत्यै
मेरुनिलयायै
मन्दारकुसुमप्रियायै
वीराराध्यायै
विराड्रूपायै
विरजसे
विश्वतोमुख्यै 780
प्रत्यग्रूपायै
पराकाशायै
प्राणदायै
प्राणरूपिण्यै
मार्ताण्डभैरवाराध्यायै

ओं मन्त्रिण्यम्बास्तराज्यधुरे न०
त्रिपुरेश्यै
जयत्सेनायै
निस्त्रैगुण्यायै
परापरायै 790
सत्यज्ञानानन्दरूपायै
सामरस्यपरायणायै
कपर्दिन्यै
कलामालायै
कामदुहे
कामरूपिण्यै
कलानिधये
काव्यकलायै
रसज्ञायै
रसशेवधये 800
पुष्टायै
पुरातनायै
पूज्यायै
पुष्करायै
पुष्करेक्षणायै
परस्मै ज्योतिषे

ओं परस्मै धात्रे नमः ओं
परमाणवे
परात्परायै
पाशहस्तायै 810
पाशहन्त्र्यै
परमन्त्रविभेदिन्यै
मूर्तायै
अमूर्तायै
अनित्यतृप्तायै
मुनिमानसहंसिकायै
सत्यव्रतायै
सत्यरूपायै
सर्वान्तर्यामिण्यै
सत्यै 820
ब्रह्माण्यै
ब्रह्मणे
जनन्यै
बहुरूपायै
बुधार्चितायै
प्रसवित्र्यै
प्रचण्डायै

ओं आज्ञायै नमः ओं
प्रतिष्ठायै
प्रकटाकृतये 830
प्राणेश्वर्यै
प्राणदात्र्यै
पञ्चाशत्पीठरूपिण्यै
विशृङ्खलायै
विविक्तस्थायै
वीरमात्रे
वियत्प्रसुवे
मुकुन्दायै
मुक्तिनिलयायै
मूलविग्रहरूपिण्यै 840
भावज्ञायै
भवरोगघ्न्यै
भवचक्रप्रवर्तिन्यै
छन्दःसारायै
शास्त्रसारायै
मन्त्रसारायै
तलोदर्यै
उदारकीर्तये

ओं उद्दामवैभवायै नमः ओं
वर्णरूपिण्यै 850
जन्ममृत्युजरातप्तजनविश्रान्तिदायिन्यै
सर्वोपनिषदुद्घुष्टायै
शान्त्यतीतकलात्मिकायै
गम्भीरायै
गगनान्तस्थायै
गर्वितायै
गानलोलुपायै
कल्पनारहितायै
काष्ठायै
अकान्तायै 860
कान्तार्धविग्रहायै
कार्यकारणनिर्मुक्तायै
कामकेलितरङ्गितायै
कनत्कनकताटङ्कायै
लीलाविग्रहधारिण्यै
अजायै
क्षयविनिर्मुक्तायै
मुग्धायै

ओं क्षिप्रप्रसादिन्यै नमः
अन्तर्मुखसमाराध्यायै 870
बहिर्मुखसुदुर्लभायै
त्रय्यै
त्रिवर्गनिलयायै
त्रिस्थायै
त्रिपुरमालिन्यै
निरामयायै
निरालम्बायै
स्वात्मारामायै
सुधासृत्यै
संसारपङ्कनिर्मग्नसमुद्धरण-
—पण्डितायै 880
यज्ञप्रियायै
यज्ञकर्त्र्यै
यजमानस्वरूपिण्यै
धर्माधारायै
धनाध्यक्षायै
धनधान्यविवर्धिन्यै
विप्रप्रियायै
विप्ररूपायै

ओं विश्वभ्रमणकारिण्यै नमः
विश्वग्रासायै 890
विद्रुमाभायै
वैष्णव्यै
विष्णुरूपिण्यै
अयोन्यै
योनिनिलयायै
कूटस्थायै
कुलरूपिण्यै
वीरगोष्ठीप्रियायै
वीरायै
नैष्कर्म्यायै 900
नादरूपिण्यै
विज्ञानकलनायै
कल्यायै
विदग्धायै
बैन्दवासनायै
तत्त्वाधिकायै
तत्त्वमय्यै
तत्त्वमर्थस्वरूपिण्यै
सामगानप्रियायै

ओं सोम्यायै नमः ओं 910 ओं मानवत्यै नमः ओ
सदाशिवकुटुम्बिन्यै महेश्यै
सव्यापसव्यमार्गस्थायै मङ्गलाकृतये
सर्वापद्विनिवारिण्यै विश्वमात्रे
स्वस्थायै जगद्धात्र्यै
स्वभावमधुरायै विशालाक्ष्यै
धीरायै विरागिण्यै
धीरसमर्चितायै प्रगल्भायै
चैतन्यार्घ्यसमाराध्यायै परमोदारायै
चैतन्यकुसुमप्रियायै परामोदायै 940
सदोदितायै 920 मनोमय्यै
सदातुष्टायै व्योमकेश्यै
तरुणादित्यपाटलायै विमानस्थायै
दक्षिणादक्षिणाराध्यायै वज्रिण्यै
दरस्मेरमुखाम्बुजायै वामकेश्वर्यै
कौलिनीकेवलायै पञ्चयज्ञप्रियायै
अनर्घ्यकैवल्यपददायिन्यै पञ्चप्रेतमञ्चाधिशायिन्यै
स्तोत्रप्रियायै पञ्चम्यै
स्तुतिमत्यै पञ्चभूतेश्यै
श्रुतिसंस्तुतवैभवायै पञ्चसंख्योपचारिण्यै 950
मनस्विन्यै 930 शाश्वत्यै

ओं शाश्वतैश्वर्यायै नमः
शर्मदायै
शम्भुमोहिन्यै
धरायै
धरसुतायै
धन्यायै
धर्मिण्यै
धर्मवर्धिन्यै
लोकातीतायै
गुणातीतायै
सर्वातीतायै
शमात्मिकायै
बन्धूककुसुमप्रख्यायै
बालायै
लीलाविनोदिन्यै
सुमङ्गल्यै
सुखकर्यै
सुवेषाढ्यायै
सुवासिन्यै
सुवासिन्यर्चनप्रीतायै
आशोभनायै

ओं शुद्धमानसायै नमः
विन्दुतर्पणसंतुष्टायै
पूर्वजायै
त्रिपुरम्बिकायै
दशमुद्रासमाराध्यायै
त्रिपुराश्रीवशंकर्यै
ज्ञानमुद्रायै
ज्ञानगम्यायै
ज्ञानज्ञेयस्वरूपिण्यै
योनिमुद्रायै
त्रिखण्डेश्यै
त्रिगुणायै
अम्बायै
त्रिकोणगायै
अनघायै
अद्भुतचारित्रायै
वाञ्छितार्थप्रदायिन्यै
अभ्यासातिशयज्ञातायै
षडध्वातीतरूपिण्यै
अव्याजकरुणामूर्तये
अज्ञानध्वान्तदीपिकायै

ओं आबालगोपविदितायै न० ओं श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ओं
सर्वानुल्लङ्घ्यशासनायै श्रीशिवायै
श्रीचक्रराजनिलयायै शिवशक्त्यैक्यरूपिण्यै 999

ओं ललिताम्बिकायै नमः ओं ॥

॥ श्रीललितासहस्रनामावलिः संपूर्णा ॥

॥ आश्चर्याष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ओं ऐं ह्रीं श्रीं

ओं परमानन्दलहर्यै नमः ओं
परचैतन्यदीपिकायै नमः
स्वयंप्रकाशकिरणायै नमः
नित्यवैभवशालिन्यै नमः
विशुद्धकेवलाखण्डसत्यकालात्मरूपिण्यै नमः
आदिमध्यान्तरहितायै नमः
महामायाविलासिन्यै नमः

ओं गुणत्रयपरिच्छेत्र्यै नमः ओं
सर्वतत्वप्रकाशिन्यै नमः
स्त्रीपुंसभावरसिकायै नमः
जगत्सर्गादिलम्पटायै नमः
अशेषनामरूपादिभेदच्छेदरविप्रभायै नमः
अनादिवासनारूपायै नमः
वासनोद्यत्प्रपञ्चिकायै नमः
प्रपञ्चोपशमप्रौढायै नमः
चराचरजगन्मय्यै नमः
समस्तजगदाधारायै नमः
सर्वसंजीवनोत्सुकायै नमः
भक्तचेतोमयानन्तस्वार्थवैभवविभ्रमायै नमः
सर्वाकर्षणवश्यादिसर्वकर्मधुरंधरायै नमः
विज्ञानपरमानन्दविद्यायै नमः
संतानसिद्धिदायै नमः
आयुरारोग्यसौभाग्यबलश्रीकीर्तिभाग्यदायै नमः
धनधान्यमणीवस्त्रभूषालेपनमाल्यदायै नमः
गृहग्राममहाराज्यसाम्राज्यसुखदायिन्यै नमः
सप्ताङ्गशक्तिसंपूर्णसार्वभौमफलप्रदायै नमः
ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्रादिपदविश्राणनक्षमायै नमः
भुक्तिमुक्तिमहाभक्तिविरक्त्यद्वैतदायिन्यै नमः

ओं निग्रहानुग्रहाध्यक्षायै नमः ओं
ज्ञाननिर्द्वैतदायिन्यै नमः 30
परकायप्रवेशादियोगसिद्धिप्रदायिन्यै नमः
शिष्टसंजीवनप्रौढायै नमः
दुष्टसंहारसिद्धिदायै नमः
लीलाविनिर्मितानेककोटिब्रह्माण्डमण्डलायै नमः
एकस्यै नमः
अनेकात्मिकायै नमः
नानारूपिण्यै नमः
अर्धाङ्गनेश्वर्यै नमः
शिवशक्तिमय्यै नमः
नित्यशृङ्गारैकरसप्रियायै नमः 40
तुष्टायै नमः
पुष्टायै नमः
अपरिच्छिन्नायै नमः
नित्ययौवनमोहिन्यै नमः
समस्तदेवतारूपायै नमः
सर्वदेवाधिदेवतायै नमः
देवर्षिपितृसिद्धादियोगिनीभैरवात्मिकायै नमः
निधिसिद्धिमणीमुद्रायै नमः
शस्त्रास्त्रायुधभासुरायै नमः

ओं छत्रचामरवादित्रपताकाव्यजनाञ्चितायै नमः ओं 50
हस्त्यश्वरथपादातामात्यसेनासुसेवितायै नमः
पुरोहितकुलाचार्यगुरुशिष्यादिसेवितायै नमः
सुधासमुद्रमध्योद्यत्सुरद्रुमनिवासिन्यै नमः
मणिद्वीपान्तरप्रोद्यत्कदम्बवनवासिन्यै नमः
चिन्तामणिगृहान्तस्थायै नमः
मणिमण्टपमध्यगायै नमः
रत्नसिंहासनप्रोद्यच्छिवमञ्चाधिशायिन्यै नमः
सदाशिवमहालिङ्गमूलसंघट्टयोनिकायै नमः
अन्योन्यालिङ्गसंघर्षकण्डूसंक्षुब्धमानसायै नमः
कळोद्यद्विन्दुकालिन्यातुर्यनादपरम्परायै नमः 60
नादान्तानन्दसंदोहस्वयंव्यक्तवचोऽमृतायै नमः
कामराजमहातन्त्ररहस्याचारदक्षिणायै नमः
मकारपञ्चकोद्भूतप्रौढान्तोल्लाससुन्दर्यै नमः
श्रीचक्रराजनिलयायै नमः
श्रीविद्यामन्त्रविग्रहायै नमः
अखण्डसच्चिदानन्दशिवशक्त्यैक्यरूपिण्यै नमः
त्रिपुरायै नमः
त्रिपुरेशान्यै नमः
महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः
त्रिपुरावासरसिकायै नमः 70

ओं त्रिपुराश्रीस्वरूपिण्यै नमः ओं
महापद्मवनान्तस्थायै नमः
श्रीमत्रिपुरमालिन्यै नमः
महात्रिपुरसिद्धाम्बायै नमः
श्रीमहात्रिपुराम्बिकायै नम
नवचक्रक्रमादेव्यै नमः
महात्रिपुरभैरव्यै नमः
श्रीमात्रे नमः
ललितायै नमः
बालायै नमः 80
राजराजेश्वर्यै नमः
शिवायै नमः
उत्पत्तिस्थितिसंहारक्रमचक्रनिवासिन्यै नमः
अर्धमेर्वात्मचक्रस्थायै नमः
सर्वलोकमहेश्वर्यै नमः
वल्मीकपुरमध्यस्थायै नमः
जम्बूवननिवासिन्यै नमः
अरुणाचलशृङ्गस्थायै नमः
व्याघ्रालयनिवासिन्यै नमः
श्रीकाळहस्तिनिलयायै नमः 90
काशीपुरनिवासिन्यै नमः

ओं श्रीमत्कैलासनिलयायै नमः ओं
द्वादशान्तमहेश्वर्यै नमः
श्रीषोडशान्तमध्यस्थायै नमः
सर्ववेदान्तलक्षितायै नमः
श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासागमकलेश्वर्यै नमः
भूतभौतिकतन्मात्रदेवताप्राणहृन्मय्यै नमः
जीवेश्वरब्रह्मरूपायै नमः
श्रीगुणाढ्यायै नमः
गुणात्मिकायै नमः 100
अवस्थात्रयनिर्मुक्तायै नमः
वाग्रमोमामहीमय्यै नमः
गायत्रीभुवनेशानीदुर्गाकाळ्यादिरूपिण्यै नमः
मत्स्यकूर्मवराहादिनानारूपविलासिन्यै नमः
महायोगीश्वराराध्यायै नमः
महावीरवरप्रदायै नमः
सिद्धेश्वरकुलाराध्यायै नमः
श्रीमच्चरणवैभवायै नमः ओं ॥

॥ इति श्रीदेवीवैभवाश्चर्याष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

॥ श्रीललितात्रिशतीनामावलिः ॥

अतिमधुरचापहस्तामपरिमितामोदबाणसौभाग्याम् ।
अरुणामतिशयकरुणामभिनवकुलसुन्दरीं वन्दे ॥

ओं–ऐं–ह्रीं–श्रीं

ॐ ककाररूपायै नमः ओं
कल्याण्यै
कल्याणगुणशालिन्यै
कल्याणशैलनिलयायै
कमनीयायै
कलावत्यै
कमलाक्ष्यै
कल्मषघ्नयै
करुणामृतसागरायै
कदम्बकाननावासायै 10
कदम्बकुसुमप्रियायै
कन्दर्पविद्यायै
कन्दर्पजनकापाङ्गवीक्षणायै
11

ॐ कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलित-
—ककुप्तटायै नमः ओं
कलिदोषहरायै
कञ्जलोचनायै
कम्रविग्रहायै
कर्मादिसाक्षिण्यै
कारयित्र्यै
कर्मफलप्रदायै 20
एकाररूपायै
एकाक्षर्यै
एकानेकाक्षराकृत्यै
एतत्तदित्यनिर्देश्यायै
एकानन्दचिदाकृत्यै

ॐ एवमित्यागमाबोध्यायै नमः
एकभक्तिमदर्चितायै [ओं
एकाग्रचित्तनिर्ध्यातायै
एषणारहिताद्दतायै
एलासुगन्धिचिकुरायै 30
एनःकूटविनाशिन्यै
एकभोगायै
एकरसायै
एकैश्वर्यप्रदायिन्यै
एकातपत्रसाम्राज्यप्रदायै
एकान्तपूजितायै
एधमानप्रभायै
एजदनेकजगदीश्वर्यै
एकवीरादिसंसेव्यायै
एकप्राभवशालिन्यै 40
ईकाररूपायै
ईशित्र्यै
ईप्सितार्थप्रदायिन्यै
ईद्दगित्यविनिर्देश्यायै
ईश्वरत्वविधायिन्यै
ईशानादिब्रह्ममय्यै

ॐ ईशत्वाद्यष्टसिद्धिदायै नमः
ईक्षित्र्यै [ओं
ईक्षणसृष्टाण्डकोट्यै
ईश्वरवल्लभायै 50
ईडितायै
ईश्वरार्धाङ्गशरीरायै
ईशाधिदेवतायै
ईश्वरप्रेरणकर्यै
ईशताण्डवसाक्षिण्यै
ईश्वरोत्सङ्गनिलयायै
ईतिबाधाविनाशिन्यै
ईहाविरहितायै
ईशशक्त्यै
ईषत्स्मिताननायै 60
लकाररूपायै
ललितायै
लक्ष्मीवाणीनिषेवितायै
लाकिन्यै
ललनारूपायै
लसद्दाडिमपाटलायै
ललन्तिकालसत्फालायै

ॐ ललाटनयनार्चितायै नः
लक्ष्णोज्ज्वलदिव्याङ्गयै
लक्ष्कोट्यण्डनायिकायै 70
लक्ष्यार्थायै
लक्षणागम्यायै
लब्धकामायै
लतातनवे
ललामराजदलिकायै
लम्बिमुक्तालताञ्चितायै
लम्बोदरप्रसुवे
लभ्यायै
लज्जाढ्यायै
लयवर्जितायै 80
ह्रींकाररूपायै
ह्रींकारनिलयायै
ह्रींपदप्रियायै
ह्रींकारबीजायै
ह्रींकारमन्त्रायै
ह्रींकारलक्षणायै
ह्रींकारजपसुप्रीतायै
ह्रींमत्यै

ॐ ह्रींविभूषणायै नमः ओं
ह्रींशीलायै 90
ह्रींपदाराध्यायै
ह्रींगर्भायै
ह्रींपदाभिधायै
ह्रींकारवाच्यायै
ह्रींकारपूज्यायै
ह्रींकारपीठिकायै
ह्रींकारवेद्यायै
ह्रींकारचिन्त्यायै
ह्रीं
ह्रींशरीरिण्यै 100
हकाररूपायै
हलधृत्पूजितायै
हरिणेक्षणायै
हरप्रियायै
हराराध्यायै
हरिब्रह्मेन्द्रवन्दितायै
हयारूढासेवितांघ्र्यै
हयमेधसमर्चितायै
हर्यक्षवाहनायै

ॐ हंसवाहनायै नमः ओं 110
हतदानवायै
हत्यादिपापशमन्यै
हरिदश्वादिसेवितायै
हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचायै
हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गनायै
हरिद्राकुङ्कुमादिग्धायै
हर्यश्वाद्यमरार्चितायै
हरिकेशसख्यै
हादिविद्यायै
हालामदालसायै 120
सकाररूपायै
सर्वज्ञायै
सर्वेश्यै
सर्वमङ्गलायै
सर्वकर्त्र्यै
सर्वभर्त्र्यै
सर्वहर्त्र्यै
सनातन्यै
सर्वानवद्यायै
सर्वाङ्गसुन्दर्यै 130

ॐ सर्वसाक्षिण्यै नमः ओं
सर्वात्मिकायै
सर्वसौख्यदात्र्यै
सर्वविमोहिन्यै
सर्वाधारायै
सर्वगतायै
सर्वावगुणवर्जितायै
सर्वारुणायै
सर्वमात्रे
सर्वभूषणभूषितायै 140
ककारार्थायै
कालहन्त्र्यै
कामेश्यै
कामितार्थदायै
कामसंजीविन्यै
कल्यायै
कठिनस्तनमण्डलायै
करभोरवे
फलानाथमुख्यै
कचजिताम्बुदायै 150
कटाक्षस्यन्दिकरुणायै

ॐ कपालिप्राणनायिकायै नमः
कारुण्यविग्रहायै [ओं
कान्तायै
कान्तिधूतजपावल्यै
कलालापायै
कम्बुकण्ठ्यै
करनिर्जितपल्लवायै
कल्पवल्लीसमभुजायै
कस्तूरीतिलकाञ्चितायै 160
हकारार्थायै
हंसगत्यै
हाटकाभरणोज्ज्वलायै
हारहारिकुचाभोगायै
हाकिन्यै
हल्यवर्जितायै
हरित्पतिसमाराध्यायै
हठात्कारहतासुरायै
हर्षप्रदायै
हविर्भोक्त्र्यै 170
हार्दसंतमसापहायै
हलीसलास्यसंतुष्टायै

ॐ हंसमन्त्रार्थरूपिण्यै नमः
हानोपादाननिर्मुक्तायै [ओं
हर्षिण्यै
हरिसोदर्यै
हाहाहूहूमुखस्तुत्यायै
हानिवृद्धिविवर्जितायै
हय्यंगवीनहृदयायै
हरिगोपारुणांशुकायै 180
लकाराख्यायै
लतापूज्यायै
लयस्थित्युद्भवेश्वर्यै
लास्यदर्शनसंतुष्टायै
लाभालाभविवर्जितायै
लङ्घ्येतराज्ञायै
लावण्यशालिन्यै
लघुसिद्धिदायै
लाक्षारससवर्णाभायै
लक्ष्मणाग्रजपूजितायै 190
लभ्येतरायै
लब्धभक्तिसुलभायै
लाङ्गलायुधायै

ॐ लग्नचामरहस्तश्रीशारदा-
—परिवीजितायै नः
लज्जापदसमाराध्यायै
लम्पटायै
लकुलेश्वर्यै
लब्धमानायै
लब्धरसायै
लब्धसंपत्समुन्नत्यै 200
ह्रींकारिण्यै
ह्रींकाराद्यायै
ह्रींमध्यायै
ह्रींशिखामणये
ह्रींकारकुण्डाग्निशिखायै
ह्रींकारशशिचन्द्रिकायै
ह्रींकारभास्करुच्यै
ह्रींकाराम्भोदचञ्चलायै
ह्रींकारकन्दाङ्कुरिकायै
ह्रींकारैकपरायणायै 210
ह्रींकारदीर्घिकाहंस्यै
ह्रींकारोद्यानकेकिन्यै
ह्रींकारारण्यहरिण्यै

ॐ ह्रींकारावालवल्ल्यै नमः ओं
ह्रींकारपञ्जरशुक्यै
ह्रींकाराङ्गणदीपिकायै
ह्रींकारकन्दरासिंह्यै
ह्रींकारम्भोजभृङ्गिकायै
ह्रींकारसुमनोमाध्व्यै
ह्रींकारतरुमञ्जर्यै 220
सकाराख्यायै
समरसायै
सकलागमसंस्तुतायै
सर्ववेदान्ततात्पर्यभूम्यै
सदसदाश्रयायै
सकलायै
सच्चिदानन्दायै
साध्यायै
सद्गतिदायिन्यै
सनकादिमुनिध्येयायै 230
सदाशिवकुटुम्बिन्यै
सकलाधिष्ठानरूपायै
सत्यरूपायै
समाकृत्यै

ॐ सर्वप्रपञ्चनिर्माञ्यै नमः ओं
समानाधिकवर्जितायै
सर्वोत्तुङ्गायै
सङ्गहीनायै
सगुणायै
सकलेष्टदायै 240
ककारिण्यै
काव्यलोलायै
कामेश्वरमनोहरायै
कामेश्वरप्राणनाड्यै
कामेशोत्सङ्गवासिन्यै
कामेश्वरालिङ्गिताङ्गयै
कामेश्वरसुखप्रदायै
कामेश्वरप्रणयिन्यै
कामेश्वरविलासिन्यै
कामेश्वरतपःसिद्धयै 250
कामेश्वरमनःप्रियायै
कामेश्वरप्राणनाथायै
कामेश्वरविमोहिन्यै
कामेश्वरब्रह्मविद्यायै
कामेश्वरगृहेश्वर्यै

ॐ कामेश्वराह्लादकर्यै नमः आ
कामेश्वरमहेश्वर्यै
कामेश्वर्यै
कामकोटिनिलयायै
काङ्क्षितार्थदायै 260
लकारिण्यै
लब्धरूपायै
लब्धधिये
लब्धवाञ्छितायै
लब्धपापमनोदूरायै
लब्धाहंकारदुर्गमायै
लब्धशक्त्यै
लब्धदेहायै
लब्धैश्वर्यसमुन्नत्यै
लब्धवृद्धये 270
लब्धलीलायै
लब्धयौवनशालिन्यै
लब्धातिशयसर्वाङ्गसौन्द-
—र्यायै
लब्धविभ्रमायै
लब्धरागायै

ॐ लब्धपत्यै नमः ओं
लब्धनानागमास्थित्यै
लब्धभोगायै
लब्धसुखायै
लब्धहर्षाभिपूरितायै 280
ह्रींकारमूर्तये
ह्रींकारसौधशृङ्गकपोतिकायै
ह्रींकारदुग्धाब्धिसुधायै
ह्रींकारकमलेन्दिरायै
ह्रींकारमणिदीपार्चिषे
ह्रींकारतरुशारिकायै
ह्रींकारपेटकमणये
ह्रींकारादर्शबिम्बितायै
ह्रींकारकोशासिलतायै

ॐ ह्रींकारास्थाननर्तक्यै न०
ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणये
ह्रींकारबोधितायै
ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भ-
—विद्रुमपुत्रिकायै
ह्रींकारवेदोपनिषदे
ह्रींकाराध्वरदक्षिणायै
ह्रींकारनन्दनारामनव-
—कल्पकवल्ल्यै
ह्रींकारहिमवद्गङ्गायै
ह्रींकारार्णवकौस्तुभायै
ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वायै
ह्रींकारपरसौख्यदायै
नमः ओं 300

ॐ श्रीमद्राजराजेश्वर्यै नमः ओं ॥

॥ श्रीललितात्रिशतीनामावलिः संपूर्णा ॥

॥ श्रीसूक्तम् ॥

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १ ॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् । श्रियं देवी-मुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम् ॥ ३ ॥ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारा-मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहो-पह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः । तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥ मनसः काममाकूतिं वाचस्सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२ ॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १३ ॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १४ ॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी-मनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥ १५ ॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् । सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षी पद्मसंभवे । तन्मे भजसि पद्माक्षी येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने । धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि । विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि संनिधत्स्व ॥ पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादिगवेरथम् । प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे । धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः । धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमस्तु ते ॥ वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा । सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोम्यिनः ॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः । भवन्ति कृत-पुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥ सरसिजनिलये सरोजहस्ते

धवलनरांशुकगन्धमाल्यशोभे । भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् । लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥ महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते । धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥

॥ इति श्रीसूक्तम् ॥

॥ दुर्गासूक्तम् ॥

जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥ १ ॥ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् । दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः ॥ २ ॥ अग्ने त्वं पारयानव्यो अस्मान्त्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा । पूश्च पृथ्वी बहुलान उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः ॥ ३ ॥ विश्वानिनो दुर्गहा जातवेदस्सिन्धुं न नावा दुरितातिपर्षि । अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ॥ ४ ॥ पृतनाजितँ सहमानमुग्रमग्निꣳ हुवेम परमात्सधस्थात् । स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अतिदुरितात्यग्निः ॥ ५ ॥

प्रत्नोषि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि । स्वाञ्चाग्ने तनुवं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमायजस्व ॥ गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्रविष्णोरनुसंचरेम । नाकस्य पृष्ठमभिसंवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम् ॥

॥ इति दुर्गासूक्तम् ॥

॥ त्रिपुरोपनिषत् ॥

ॐ वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्म एधि वेदस्य म आणीस्थः श्रुतं मे मा प्रहासीरनेनाधीतेनाहोरात्रान्त्संदधाम्यृतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारमवतु वक्तारम् ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ तिस्रः पुरस्त्रिपथा विश्वचर्षणी अत्राकथा अक्षरा संनिविष्टा । अधिष्ठायैनामजरा पुराणी महत्तरा महिमा देवतानाम् ॥ १ ॥ नवयोनीर्नव चक्राणि दीधिरे नवैव योगा नव योगिनीश्च । नवानां चक्रे अधिनाथाः स्योना नव मुद्रा नव भद्रा महीनाम् ॥ २ ॥ एका सा आसीत्प्रथमा सा नवासीदासोनविंशदासोनत्रिंशत् । चत्वारिंशदथ तिस्रः समिधा उशतीरिव

मातरो मा विशन्तु ॥ ३ ॥ ऊर्ध्वज्वलज्ज्वलनज्योतिरग्रे तमो वै तिरश्चीनमजरं तद्रजोऽभूत् । आनन्दनं मोदनं ज्योतिरिन्दो-रेता उ वै मण्डला मण्डयन्ति ॥ ४ ॥ तिस्रश्च रेखाः सदनानि भूमेस्त्रिविष्टपास्त्रिगुणास्त्रिप्रकाशाः । एतत्पुरं पूरकं पूर-काणामत्र प्रथेते मदनो मदन्या ॥ ५ ॥ मदन्तिका मानिनी मङ्गला च सुभगा च सा सुन्दरी शुद्धमत्ता* । लज्जा मतिस्तुष्टि-रिष्टा च पुष्टा लक्ष्मीरुमा ललिता लालपन्ती ॥ ६ ॥ इमां विज्ञाय सुधया मदन्ति परिस्रुता तर्पयन्तः स्वपीठम् । नाकस्य पृष्ठे महतो वसन्ति परं धाम त्रैपुरं चाविशन्ति ॥ ७ ॥ कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः । पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्येषा विश्वमातादिविद्या ॥ ८ ॥ षष्ठं सप्तममथ वह्निसारथिमस्या मूलत्रिकमादेशयन्तः । कव्यं कविं कल्पकं काममीशं तुष्टुवांसो अमृतत्वं भजन्ते ॥ ९ ॥ त्रिवि-ष्टपं त्रिमुखं विश्वमातुर्नव रेखाःस्वरमध्यं तदीळे । बृहत्तिथीर्देश पञ्चादि नित्या सा षोडशी पुरमध्यं बिभर्ति ॥ १० ॥ द्वा मण्डला द्वा स्तना बिम्बमेकं मुखं चाधस्त्रीणि गुहा सदनानि । कामीं कलां काम्यरूपां विदित्वा नरो जायते कामरूपश्च काम्यः ॥११॥ परिस्रुतं ज्ञपमाद्यं पलं च भक्तानि योनीः सुपरिष्कृतानि । निवेदयन्देवतायै महत्यै स्वात्मीकृत्य सुकृती सिद्धिमेति ॥ १२ ॥ सृण्येव सितया विश्वचर्षणिः पाशेन प्रतिबध्नात्यभीकान् । इषुभिः पञ्चभिर्धनुषा च विध्यत्यादिशक्तिरुणा विश्वज-

* सिद्धिमत्तेत्याथर्वणः पाठः ।

न्या ॥ १३ ॥ भगः शक्तिर्भगवान्काम ईश उभा दातारावि॒ह सौभगानाम् । समप्रधानौ समसत्त्वौ समोतयोः समशक्तिरजरा विश्वयोनिः ॥ १४ ॥ परिस्रुता हविषा पावितेन प्र संकोचे गलिते वै मनस्तः । सर्वः सर्वस्य जगतो विधाता धर्ता हर्ता विश्वरूपत्वमेति ॥ १५ ॥ इयं महोपनिषत्त्रिपुराया वामक्षरं परमे गीर्भिरीट्टे । एषर्ग्वजुः परमेतच्च सामेवायमथर्वेयमन्या च विद्योम् ॥ १६ ॥ एवं वेदेत्युपनिषत् ॥

ॐ वाङ्मे मनसीति शान्तिः ॥ हरिः ओं तत्सत् ॥

॥ इति त्रिपुरोपनिषत् ॥

॥ देव्युपनिषत् ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः । स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हरिः ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः । कासि त्वं महादेवि ॥१॥ साब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगच्छून्यं चाशून्यं च । अहमानन्दानानन्दाः । विज्ञानाविज्ञाने

अहम् । ब्रह्मा ब्रह्मणी वेदितव्ये । इत्याहाथर्वणी श्रुतिः ॥ २ ॥ अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि । अहमखिलं जगत् । वेदोऽहमवेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम् । अजाहमनजाहम् । अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् ॥ ३ ॥ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । अहं मित्रावरुणावुभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ॥ ४ ॥ अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधाम्यहम् । विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि ॥ ५ ॥ अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये ३ ये यजमानाय सुन्वते । अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनामहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् ॥ ६ ॥ मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे । य एवं वेद स देवीपदमाप्नोति ॥ ७ ॥ ते देवा अब्रुवन् । नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ८ ॥ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् । दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरां नाशय ते तमः ॥ ९ ॥ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति । सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ॥ १० ॥ कालरात्रिं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् । सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् ॥ ११ ॥ महालक्ष्मीश्च विद्महे सर्वसिद्धिश्च धीमहि ; तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ १२ ॥ अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव । तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ॥ १३ ॥ कामो योनिः कामकला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः । पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्येषा विश्व-

मातादिविद्योम् ॥ १४ ॥ एषात्मशक्तिः । एषा विश्वमोहिनी पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा । एषा श्रीमहाविद्या ॥ १५ ॥ य एवं वेद स शोकं तरति ॥१६॥ नमस्ते अस्तु भगवति भवनि मातरस्मान्पातु सर्वतः ॥ १७ ॥ सैषाष्टौ वसवः । सैषैकादश रुद्राः । सैषा द्वादशादित्याः । सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च । सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः । सैषा सत्त्वरजस्तमांसि सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः । सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि कलाकाष्ठादिकालरूपिणी । तामहं प्रणौमि नित्यम् ॥१८॥ तापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् । अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् ॥ १९ ॥ वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् । अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥ २० ॥ एवमेकाक्षरं मन्त्रं यतयः शुद्धचेतसः । ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः ॥ २१ ॥ वाङ्माया ब्रह्मभूस्तस्मात्षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् । सूर्यो वामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः ॥ २२ ॥ नारायणेन संयुक्तो वायुश्चाधरयुक्ततः । विच्चे नवार्णकोऽणुः स्यान्महदानन्ददायकः ॥ २३ ॥ हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम् । पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम् । त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ॥ २४ ॥ नमामि त्वामहं देवीं महाभयविनाशिनीम् । महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम् ॥ २५ ॥ यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानान्ति तस्मादुच्यतेऽज्ञेया । यस्या अन्तो न विद्यते तस्मादुच्यतेऽनन्ता । यस्या ग्रहणं नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽलक्ष्या ।

यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽजा । एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यत एका । एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका । अत एवोच्यतेऽज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति ॥ २६ ॥ मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी । ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ॥ २७ ॥ यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता । [दुर्गात्संत्रायते यस्मादेवी दुर्गेति कथ्यते । प्रपद्ये शरणं देवीं दुंदुर्गे दुरितं हर ॥] तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् । नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥ २८ ॥ इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमवाप्नोति । इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति ॥ २९ ॥ शतमष्टोत्तरं चास्याः पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥ ३० ॥ दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते । महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥ ३१ ॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति । निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति । नूतनप्रतिमायां जप्त्वा देवतासांनिध्यं भवति । प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति । भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति । य एवं वेदेत्युपनिषत् ॥ ३२ ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥ हरिः ओं तत्सत् ॥

॥ इति देव्युपनिषत् ॥

॥ भावनोपनिषत् ॥

ओं भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

हरिः ॐ । आत्मानमखण्डमण्डलाकारमावृत्य सकलब्रह्माण्डमण्डलं स्वप्रकाशं ध्यायेत् । श्रीगुरुः सर्वकारणभूता शक्तिः ॥ १ ॥ तेन नवरन्ध्ररूपो देहः ॥ २ ॥ नवचक्ररूपं श्रीचक्रम् ॥ ३ ॥ वाराही पितृरूपा कुरुकुल्ला बलिदेवता माता ॥ ४ ॥ पुरुषार्थाः सागराः ॥ ५ ॥ देहो नवरत्नद्वीपः ॥ ६ ॥ त्वगादिसप्तधातुरोमसंयुक्तः ॥ ७ ॥ संकल्पाः कल्पतरवस्तेजः कल्पकोद्यानम् ॥ ८ ॥ रसनया भाव्यमाना मधुराम्लतिक्तकटुकषायलवणरसाः षड्तवः ॥ ९ ॥ ज्ञानमद्यं ज्ञेयं हविर्ज्ञाता होता ज्ञातृज्ञानज्ञेयानामभेदभावनं श्रीचक्रपूजनम् ॥ १० ॥ नियतिः शृङ्गारादयो रसा अणिमादयः ॥ ११ ॥ कामक्रोधलोभमोहमदमात्सर्यपुण्यपापमया ब्राह्म्याद्यष्ट शक्तयः ॥ १२ ॥ आधारनवकं मुद्राशक्तयः ॥ १३ ॥ पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थानि मनोविकारः कामाकर्षिण्यादिषोडश शक्तयः ॥ १४ ॥ वचनादानगमनविसर्गानन्दहानोपादानोपेक्षाख्यबुद्धयोऽनङ्गकुसुमाद्यष्टौ ॥१५॥ अलम्बुसा कुहूर्विश्वोदरा वारुणा हस्तिजिह्वा यशोवती पयस्विनी गान्धारी पूषा शङ्खिनी

सरस्वतीडा पिङ्गला सुषुम्ना चेति चतुर्दश नाड्यः सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दश शक्तयः ॥ १६ ॥ प्राणापानव्यानोदानसमाननागकूर्मकृकरदेवदत्तधनञ्जया दश वायवः सर्वसिद्धिप्रदादिबहिर्दशारदेवताः ॥ १७ ॥ एतद्वायुसंसर्गकोपाधिभेदेन रेचकः पाचकः शोषको दाहकः प्लावक इति प्राणमुख्यत्वेन पञ्चधा जठराग्निर्भवति ॥ १८ ॥ क्षारक उद्गारकः क्षोभको जृम्भको मोहक इति नागप्राधान्येन पञ्चविधास्ते मनुष्याणां देहगा भक्ष्यभोज्यचोष्यलेह्यपेयात्मकपञ्चविधमन्नं पाचयन्ति ॥ १९ ॥ एता दश वह्निकलाः सर्वज्ञाद्या अन्तर्दशारदेवताः ॥ २० ॥ शीतोष्णसुखदुःखेच्छाः सत्त्वं रजस्तमो वशिन्यादिशक्तयोऽष्टौ ॥ २१ ॥ शब्दादितन्मात्राः पञ्च पुष्पबाणाः ॥२२॥ मन इक्षुधनुः ॥ २३ ॥ रागः पाशः ॥ २४ ॥ द्वेषोऽङ्कुशः ॥ २५ ॥ अव्यक्तमहदहङ्काराः कामेश्वरीवज्रेश्वरीभगमालिन्योऽन्तस्त्रिकोणगा देवताः ॥ २६ ॥ निरुपाधिकसंविदेव कामेश्वरः ॥ २७ ॥ सदानन्दपूर्णः स्वात्मैव परदेवता ललिता ॥ २८ ॥ लौहित्यमेतस्य सर्वस्य विमर्शः ॥ २९ ॥ अनन्यचित्तत्वेन च सिद्धिः ॥ ३० ॥ भावनायाः क्रिया उपचारः ॥ ३१ ॥ अहं त्वमस्ति नास्ति कर्तव्यमकर्तव्यमुपासितव्यमिति विकल्पानामात्मनि विलापनं होमः ॥ ३२ ॥ भावनाविषयाणामभेदभावना तर्पणम् ॥ ३३ ॥ पञ्चदशतिथिरूपेण कालस्य परिणामावलोकनम् ॥ ३४ ॥ एवं मुहूर्तत्रितयं मुहूर्तद्वितयं मुहूर्तमात्रं वा भावनापरो जीवन्मुक्तो भवति स एव शिवयोगीति गद्यते ॥ ३५ ॥

कादिमतेनान्तश्चक्रभावनाः प्रतिपादिताः ॥ ३६ ॥ य एवं वेद सोऽथर्वशिरोऽधीते ॥ ३७ ॥ इत्युपनिषत् ॥

ओं भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥ हरिः ओं तत्सत् ॥

॥ इति भावनोपनिषत् ॥

॥ बह्वृचोपनिषत् ॥

ओं वाङ्मे मनसीति शान्तिः ॥

हरिः ॐ । देवी ह्येकाग्र एवासीत् । सैव जगदण्डमसृजत् । कामकलेति विज्ञायते । शृङ्गारकलेति विज्ञायते । तस्या एव ब्रह्मा अजीजनत् । विष्णुरजीजनत् । रुद्रोऽजीजनत् । सर्वे मरुद्गणा अजीजनन् । गन्धर्वाप्सरसः किंनरा वादित्रवादिनः समन्तादजीजनन् । भोग्यमजीजनत् । सर्वमजीजनत् । सर्वं शाक्तमजीजनत् । अण्डजं स्वेदजमुद्भिज्जं जरायुजं यत्किंचैतत्प्राणि स्थावरजङ्गमं मनुष्यमजीजनत् ॥

सैषा परा शक्तिः । सैषा शांभवी विद्या कादिविद्येति वा हादिविद्येति वा सादिविद्येति वा । रहस्यमोमों वाचि प्रतिष्ठा । सैव पुरत्रयं शरीरत्रयं व्याप्य बहिरन्तरवभासयन्ती देशकालवस्त्वन्तरासङ्गान्महात्रिपुरसुन्दरी वै प्रत्यक्चितिः । सैवात्मा ततोऽन्यदसत्यमनात्मा । अत एषा ब्रह्मसं-

वित्तिर्भावाभावकलाविनिर्मुक्ता चिद्विद्याऽद्वितीयब्रह्मसंवित्तिः सच्चिदानन्दलहरी महात्रिपुरसुन्दरी बहिरन्तरनुप्रविश्य स्वयमेकैव विभाति । यदस्ति सन्मात्रम् । यद्विभाति चिन्मात्रम् । यत्प्रियमानन्दं तदेतत्पूर्वाकारा महात्रिपुरसुन्दरी । त्वं चाहं च सर्वं विश्वं सर्वदेवता । इतरत्सर्वं महात्रिपुरसुन्दरी । सत्यमेकं ललिताख्यं वस्तु तदद्वितीयमखण्डार्थं परं ब्रह्म । पञ्चरूपपरित्यागादर्वरूपप्रहाणतः । अधिष्ठानं परं तत्त्वमेकं सच्छिष्यते महत् ॥ इति । प्रज्ञानं ब्रह्मेति वा अहं ब्रह्मास्मीति वा भाष्यते । तत्त्वमसीत्येव संभाष्यते । अयमात्मा ब्रह्मेति वा ब्रह्मैवाहमस्मीति वा योऽहमस्मीति वा सोहमस्मीति वा योऽसौ सोऽहमस्मीति वा या भाव्यते सैषा षोडशी श्रीविद्या पञ्चदशाक्षरी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी बालाम्बिकेति बगलेति वा मातङ्गीति स्वयंवरकल्याणीति भुवनेश्वरीति चामुण्डेति चण्डेति वाराहीति तिरस्करिणीति राजमातङ्गीति वा शुकश्यामलेति वा लघुश्यामलेति वा अश्वारूढेति वा प्रत्यङ्गिरा धूमावती सावित्री गायत्री सरस्वती ब्रह्मानन्दकलेति । ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् । यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः । यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति । य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ॥ इत्युपनिषत् ॥ ओं वाङ्मे मनसीति शान्तिः ॥ हरिः ओं तत्सत् ॥

॥ इति बह्वृचोपनिषत् ॥

देवी की मुद्रायें

प्राणायाम एवं षडङ्गन्यास करने के बाद मुद्राएँ दिखलानी चाहिए। संक्षोभिणी, द्राविणी, आकर्षणी, वश्याऽऽम्माद, महांकुशा, खेचरी, बीज एवं महा-योनि ये ९ मुद्रायें देवी की प्रिय मुद्रायें हैं। फिर श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी देवी का ध्यान करना चाहिए।

टिप्पणी—देवी की प्रिय संक्षोभ आदि ९ मुद्राओं के लक्षण इस प्रकार हैं।

१. **संक्षोभ मुद्रा**—

मध्यमां मध्यमे कृत्वा कनिष्ठांगुष्ठरोधिते।
तर्जन्यौ दण्डवत् कृत्वा मध्यमोपर्यनामिके॥
क्षोभाभिधान मुद्रेयं सर्वसंक्षोभकारिणी॥

२. **द्राविणी मुद्रा**—

एतस्या एव मुद्राया मध्यमे सरले यदा।
क्रियेते परमेशानि तदा विंद्राविणी मता॥

३. **आकर्षिणी मुद्रा**—

मध्यमातर्जनीभ्यां तु कनिष्ठानामिके समे।
अंकुशाकार रूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरि॥
इयमाकर्षिणीमुद्रा त्रैलोक्याकर्षणे क्षमा॥

४. **वश्य मुद्रा**—

पुटाकारौ करौ कृत्वा तर्जन्यावंकुशाकृती।
परिवर्त्य क्रमेणैव मध्यमे तदधोगते।
संयोज्य निविडाः सर्वा अंगुष्ठावग्रदेशतः॥
मुद्रेयं परमेशानि सर्ववश्यकरी मता।

५. उन्माद मुद्रा—

सम्मुखौ तु करौ कृत्वा मध्यमामध्यमेनुजे ।
अनामिके तु सरले तदधस्तर्जनीद्वयम् ॥
दण्डाकारौ ततोङ्गुष्ठौ मध्यमान स्वदेशगौ ।
मुद्रैषोन्मादिनी नाम क्लेदिनी सर्वयोषिताम् ॥

६. महांकुशा मुद्रा—

अस्यास्त्वनामिका युग्ममधः कृत्वांकुशाकृति ।
तर्जन्यावपि तेनैव क्रमेण विनियोजयेत् ॥
इयं महांकुशा मुद्रा सर्वकामार्थ साधिनी ॥

७. खेचरी मुद्रा—

सव्यं दक्षिण हस्ते तु सव्यहस्ते तु दक्षिणम् ।
बाहूकृत्वा महादेवि हस्तौ सम्परिवर्त्य च ॥
कनिष्ठानामिके देवि युक्ता तेन क्रमेण तु ।
तर्जनीभ्यां समाक्रान्ते सर्वोर्ध्वमपि मध्यमे ॥
अंगुष्ठौ तु महादेवि सरलावपि कारयेतु ।
इयं सा खेचरी वाम मुद्रा सर्वोत्तमोत्तमा ॥

८. बीजमुद्रा

परिवर्त्य करौ स्पष्टावर्द्धचन्द्राकृती प्रिये ।
तर्जन्यंगुष्ठ युगलं युगपत्कारयेत्ततः ॥
अधः कनिष्ठावष्टब्धे मध्यमे विनियोजयेत् ।
तथैव कुटिले योज्ये सर्वाधस्तादनामिके ॥
बीज मुद्रेयमुदिता सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥

९. महायोनिमुद्रा

मध्यमे कुटिले कृत्वा तर्जन्युपरि संस्थिते ।
अनामिका मध्यगते तथैव हि कनिष्ठके ॥
सर्वा एकत्र संयोज्या अंगुष्ठपरिपीडिताः ।
एषा तु प्रथमा मुद्रा महायोन्याभिधा मता ॥

वर मुद्रा

अभय मुद्रा

पाश मुद्रा

मोदक मुद्रा

मूशल मुद्रा

मुण्ड मुद्रा

ग्रास मुद्रा

शंख मुद्रा

सन्निधापनी मुद्रा

पद्म मुद्रा

अवगुण्ठनी मुद्रा

मत्स्य मुद्रा

सर्वाकर्षिणी मुद्रा

सुमुखी मुद्रा

सर्व-महाकुंशा मुद्रा

विस्तृत मुद्रा

संहार मुद्रा

चतुर्मुखी मुद्रा

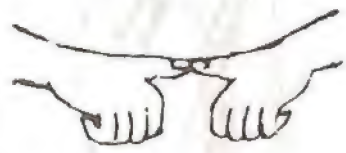

शकट मुद्रा

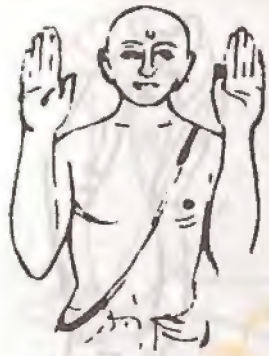

सिंहाक्रान्त मुद्रा

सम्मुखोन्मुख मुद्रा

पल्लव मुद्रा

वराह मुद्रा

त्रिखण्डा मुद्रा

उदान मुद्रा
समान मुद्रा
आवाहनी मुद्रा
संस्थापनी मुद्रा
सन्निरोधिनी मुद्रा
सम्मुखीकरणी मुद्रा

महाक्रान्त मुद्रा

मुद्गर मुद्रा

धेनु मुद्रा

बीज मुद्रा

ज्वालिनी (सप्त-जिह्वा) मुद्रा

मुगी मुद्रा

अधोमुखी मुद्रा

व्यापकांजलि मुद्रा

यम-पाश मुद्रा

ग्रन्थिव मुद्रा

प्रलम्ब मुद्रा

मुष्टिक मुद्रा

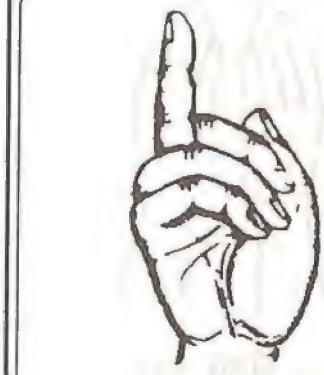

दन्त मुद्रा

प्रार्थना मुद्रा

खड्ग मुद्रा

कुन्त मुद्रा

लेलिहा मुद्रा

प्राण मुद्रा

सम्पुटी मुद्रा

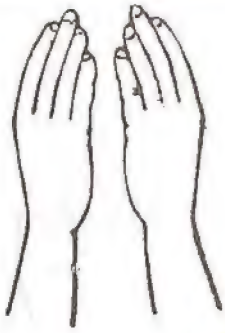

वितत मुद्रा

द्विमुखी मुद्रा

त्रिमुखी मुद्रा

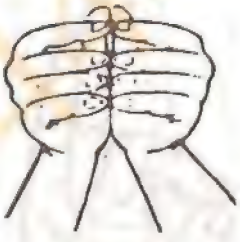

पंचमुखी मुद्रा

षण्मुखी मुद्रा

सर्व-संक्षोभिणी मुद्रा

सर्व-विद्राविणी मुद्रा

सर्व-वशंकरी मुद्रा

सर्वोन्मादिनी मुद्रा

खेचरी मुद्रा

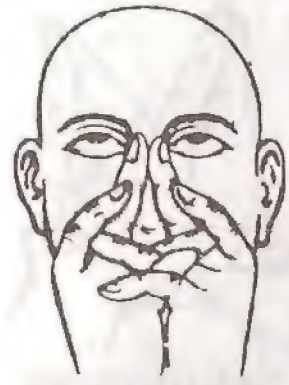

योनि मुद्रा

चक्र मुद्रा

गदा मुद्रा

ज्ञान मुद्रा

परशु मुद्रा

कूर्म (कच्छप) मुद्रा

हयग्रीव मुद्रा

अंकुश मुद्रा (१)

अंकुश मुद्रा (२)

कुम्भ मुद्रा

तत्त्व मुद्रा

अपान मुद्रा

व्यान मुद्रा

44Books.com

गुरुस्त्रोत्रम्

ज्ञानात्मानं परमात्मानं दानंध्यानं योगं ज्ञानम्
जानन्नपि सुन्दरिमातर्न गुरोरधिकं नगुरोरधिकम् ।।१।।

प्राणं देहं गेहं राज्यं भोगं मोक्षं भक्तिं पुत्रम्
मन्ये मित्रं वित्तकलत्रं नगुरोरधिकं नगुरोरधिकम् ।।२।।

वानप्रस्थं यतिविधधर्मं पारमहंस्यं भिक्षुक चरितम्
साधो सेवा बहुसुरभक्तिर्न गुरोरधिकम् न गुरोरधिकम् ।।३।।

विष्णो भक्तिः पूजन चरितं वैष्णावसेवा मातरि भक्तिं
विष्णोरिवपितृसेवनयोगो नगुरोरधिकं नगुरोरधिकम् ।।४।।

प्रत्याहारंचेन्द्रियजपताप्राणायामंन्यानिर्विधानम्
इष्टै पूजाजपतपभक्तिर्न गुरोरधिकं नगुरोरधिकम् ।।५।।

कालीदुर्गाकमलाभुवनात्रिपुरामीमांबगलापूर्णा
श्रीमातङ्गीधूमातारा एताविधात्रिभुवनस्तरा नगुरोरधिकमं नगुरोरधिकम् ।।६।।

मात्स्यंकौर्मं श्रीवाराहं नरहरिरूपं वामनचरितम्
अवतारादिकमन्यत् सर्वं नगुरोरधिकं नगुरोरधिकम् ।।७।।

श्रीरघुनाथं श्रीयदुनाथं श्रीभृगुदेवं बोद्धंकल्किम्
अवतारानिति दशकंमन्ये नगुरोरधिकं नगुरोरधिकम् ।।८।।

गंगाकाशीकाञ्चीद्वारा मायायोध्यावना मथुरा
यमुनारेवापरतरतीर्थं नगुरोरधिकं नगुरोरधिकम् ।।९।।

गोकुल गमनम् गोपुर रमणं श्रीवृन्दावनमधुपुर भटनम्
एतत् सर्वंसुन्दरिमातर्नगुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।।१०।।

तुलसीसेवा हरिहरभक्तिर्गङ्गासागर संगम्मुक्तिमः
किमपरमधिकंकृष्णोभक्तिरेतत्सर्वं सुन्दरिमार्तनगुरोधिकं नगुरोरधिकम् ।।११।।

एतत् स्तात्रं पठति चनित्यं मोक्षज्ञानी सोडय्यतिधन्यः
ब्रह्माण्डान्तर्यद्यद्ज्ञेयं सर्वं नगुरोरधिकं नगुरोरधिकम् ।।१२।।

।।इतिवृहत्पाकम्हंस्यां संहितायां श्री शिवपर्वती सम्वादे श्रीगुरुस्त्रोत्रम्।।

श्री विद्या राज राजेश्वरी ललिताम्बा ट्रस्ट के संस्थापक
कान्यकुब्ज पीठाधीश्वर श्री १०८ शीतलानन्द नाथ सरस्वती जी महाराज

माता राज राजेश्वरी मन्दिर

मुद्रक : दि सेन्ट्रल प्रेस (प्रा.) लि., फजलगंज, कानपुर

SVB
S.No
Subj
Sub